# अगद तन्त्र

(मादक द्रव्यों का वर्णन)

द्वितीय भाग।

55/201

लेखक

कविविनोद वैद्यभूषण पं. ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य।

प्रथम बार १००० | १९२३ | मूल्य ।=)

अमृत प्रेस, अमृतधारा भवन, लाहौर में मुद्रित।

॥ ओ३म् ॥

# विष-चिकित्सा ।

( द्वितीय भाग )

## आर्य्यावर्त्त में ।

कतिपय विष कोई तो विष न समझ कर, कोई स्वभाव वशात् और कोई नशा की रीति पर प्रयुक्त किए जाते हैं, " विष चिकित्सा के दूसरे भाग में सर्प वर्णन लिखने का विचार था । परन्तु यकायक ध्यान आया कि मादक द्रव्य भी एक प्रकार से विष ही हैं, और यह बहुत सत्यानाश कर रहे हैं, अतः प्रथम इन का वर्णन किया जावे । विष चिकित्सा प्रथम भाग में जो २ संकीर्ण विषय लिखे जा चुके हैं, यह स्वयम् अधिक उपयोगी हैं, और पृथक २ रीति पर भी कई विविध नियमों को बताते हैं । परन्तु वह वस्तुतः विष चिकित्सा की भूमिका है । अतः आगे जितने भाग लिखे जावेंगे, उनके पढ़ने से प्रथम विष चिकित्सा का प्रथमभाग पढ़ लेना उत्तम है, उत्तम ही नहीं अपितु आवश्यक भी भी है । मादक द्रव्यों का वर्णन भी इनके विस्तृत है कि ताम्रकूट (तम्बाकू) चाय, मदिरादि इसके भी कई विभाग हैं । पर हम प्रत्येक का संक्षेपतः वर्णन लिख कर एक ही भाग में इसको समाप्त देंगे ।

आप लोगों का सच्चा शुभचिन्तक,

**ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य, लाहौर ।**

# हुक्कापान ।

## कविता ।

हुक्का का इस ज़माने मे अक्सर रिवाज है,
हुक्का मिले तो सूझता सब काम काज है ।
उठकर सबेरे हुक्का ही को ढूढ़ता फिरे,
हुक्का मिले तो शुक्र का कलिमा यह तब पढ़े ।
क्या दर बदर की ख़ाक रोज छानता फिरे,
हुक्का ज़रूर पीना है ख्वाह हाथ ही जले ।
हुक्के बग़ैर करता न कोई सलाम है,
हुक्के बग़ैर करता न कोई कलाम है ।
हुक्का जहां मिले वहां इक मजमें आम है,
हुक्का पिलाया जो करे उसका ही नाम है ।
ख़ातिर तवाज़ह करने में हुक्का ही आगे हो,
हुक्का ही पेश करते हैं महमान आए जो ।
पाजी कमीना आदमी है बेलिहाज़ क्या,
हुक्का की सुलह तक जो इन्साँ न कर सका ।
चलते ही चलते दोस्ती हुक्का कराता है,
ख्वाह अजनबी हो पास तो लाकर बिठाता है ।
कामों, कमीनों, राजों को आराम यह दिलाए,
आका का काम करने से उनको अलग बिठाए ।
मांदा, थका जो राही हो, हुक्का पै वह गिरे,
उतरे थकान सारा जब हुक्का का दम भरे ।
बातें मज़े मज़े की हुक्का पीते क्या सुनायें,
गप्पें जहां की शुग़ले बेहूदा में क्या उड़ामें ।

देखा जो हुक्का नोशी को दानिश से ग़ौर कर,
याद आगया मुझे क्या मायना मुतलए दिगर ।

## मुतलए सानी ।

जिधर देखो नड़ा मुंह में लिए फिरते हैं हुक्का नोश,
नशीले दर बदर फिरते चलम धरते हैं हुक्का नोश ।
दिलोजां दोनो ईमां उन का सच पूछो तो हुक्का है,
शबोरोज़ उसकी ही धुन में पड़े मरते हैं हुक्का नोश ।
बजाए नाम हक के हुक्का ही का नाम जपते हैं,
उसे आंगोशे जां में परवरिश करते हैं हुक्का नोश ।
गुरू हुक्का इमाम उनका, बना महराब नेचे की,
नमाज़े कस्ले ग़फलत सर झुका पढते हैं हुक्का नोश ।
बहे शोर आंखों से चीपड़ जमे हों कुछ नहीं परवा,
जो हुक्का ताज़ा हो जाए, तो खुश फिरते हैं हुक्का नोश ।
चिलम का कासा ले घर २ बसन्तर मांगने जावें,
न हाथों के झुलसने से कभी डरते हैं हुक्का नोश ।
महीनों का सड़ा हुक्का अगर पीवे कहीं कोई,
तो गिद्धों की तरह मुरदार पर गिरते हैं हुक्का नोश ।
सवेरे हुक्का पी लेवे तो तब कब्ज़ उनकी खुलती है,
बिला हुक्का पिए पाखाना, न फिरते हैं हुक्का नोश ।
दलिद्दर जूठ है सारे जहां की, जिससे घिन आवे,
गिलाज़त दार थूक और सीं तक मलते हैं हुक्का नोश ।
तआज्जुब है कि हिन्दूधर्म, तक भी जूठ बरते हैं,
उसे तो शीरे मादर जान कर बरते हैं हुक्का नोश ।
बहुत किस्मों के बीमारों से हुक्का पीने में आख़िर,

कई बमारियों में खुद बखुद फंसते हैं हुक्का नोश।

बढ़े गरमी व खुशकी प्यास लावे, बेकरारी हो,

सुदा और सर के चकराने से, सर धुनते हैं हुक्का नोश।

नु ़ेर ेदा शशः हम हैं, दिलो बसरो दिमागो कल्ब,

ज़बानो पै सरतां हो गुलों छिलते हैं हुक्क नोश ।

बढ़ावे कुन्द ज़ेहनी हाफिजा कमजोर हो निसियां,

तबीअतसुस्तो काहिल के मजे लेते हैं हुक्का नोश ।

बड़ा ही बदमज़ा कड़वा कसैला जी को मतलावे,

सियाहदिल झुलसे सर वाले पै क्यों मरते हैं हुक्का नोश।

यह बच्चों नौजवानों को ख़सूसन ज़हर कातिल है,

जो खुद डूबे थे उनको क्यों न धमकाते हैं हुक्का नोश।

जो तकिया धर्मशाला में सड़ा भद्दा सा हुक्का हो,

बड़ी ख्वाहिश से अच्छों तक गिरे पड़ते हैं हुक्का नोश।

युं ही हुक्के के पीने में किसी खातिर तवाज़ू में,

बड़ा ही बेशक़ीमत वक्त तक खोते हैं हुक्का नोश ।

सड़ान्द इसमें बुसान्द इसमें तअफ्फुन का है पुतला यह,

सदा की दम कशी से खूब ही सड़ते हैं हुक्का नोश ।

किसी से दस्त पोशी में मिलाये हाथ जो गाहे,

तो हाथों में तअफ्फुन हाय ! क्या मिलते हैं हुक्का नोश।

टके दिन का जो तम्बाकू उड़ायें गर यह घी खायें ।

तो पांचों घी में हों फिर देखो क्या पीते हैं हुक्का नोश।

जहां में काम करने से जो अकसर टलते रहते हैं,

तो काहिल पोस्ती मज़दूर ही टलते हैं हुक्कानोश,

बहुत सड़ियल के सूंट मार कर बड़हांकने लग जावें ।

कि वाह ! हम दूध भूरी भैंस का पीते हैं हुक्का नोश,

जहां हुक्का पीयें वहां राख गुल के ढेर लग जावें ।
लुआब और थूक बलग़म जाबजा थुकते हैं हुक्का नोश,
सड़े पानी से हुक्का के ज़मीं ने भी अमां मांगी ।
कि हा ! तोबा सडान्द ऐसी को क्यों रटते हैं हुक्का नोश,
जो पेशाब हुक्का के पानी पै करदे कोई बदकिस्मत ।
तो सोज़ाक उसके हो जाने पै न कुढ़ते हैं हुक्कानोश,
मुजस्सिम हुक्का बदबू है बुसा पानी गलीबांसी ।
हर इक दम में तअफ्फुन का मज़ा चखते हैं हुक्कानोश,
शिवाला, मदरसा, दरबार, मसजिद महफिलो मेला ।
बड़ों के सामने पीने से सब बचते हैं हुक्कानोश,
जो इस मनहूस रद्दी को बड़ा ही एब समझा है ।
तो बेअदबी व गुस्ताख़ी से सब रुकते हैं हुक्कानोश,
चिलम से शोला उड़ उड़ कर जले घर कपड़े राख होवें ।
कभी खुद बीच ही जलते हैं खिरमद फूंक हुक्का नोश,
जलायें चीथड़े बदबू पियें दस्तार तक फूंकें ।
गले टूटे से खाटों पै पड़े झुकते हैं हुक्का नोश,
कहीं हुक्का की ख़ातिर तोड़ें रोज़ा हाय ! बे अदबी ।
फरायज़ छोड़ चस्का पूरा करते हैं हुक्का नोश ।
कली-हुक्का-मलीरा गुड़ गुड़ी-खम पेचवां नेचा '
चिलम सरपोश की ख़ातिर पड़े बकते हैं हुक्का नोश ।
लगा कर काठ की कुल्फ़ी उन्हें जंजीर से जकड़ा,
कि जामिन दे के गफ़लत को भी न छुटते हैं हुक्का नोश ।
तकल्लुफ इतना हुक्का पांच का मेचा सवासौ का,
मुनाल उसके वहां पै चांदी की जड़ते हैं हुक्का नोश ।
मिसल चिमनी के धुआं नाक मुंह से उड़ता रहता है,

शिकम की धूंकनी दोज़ख बना चुकते हैं हुक्का नोश।
नतीज़ा हुक्का नोशी का पियें सिगरेट सिगारो चुरट,
चरस गांजा शराब अफयून तक छकते हैं हुक्का नोश।
फ्वायद थोड़े हैं बलगम वग़ैरा को निकाले हैं '
नका लस हैं बहुत फिर क्यों नहीं हटते हैं हुक्का नोश।
जो पूछा जाय ईमानन् उन्हें क्यों हुक्का पीते हो।
युंही आदत बुरी इक पड़ गई कहते हैं हुक्का नोश,
बचो बचो ! जवानो ! हुक्कानोशी से जो दानिश हैं।
वह पछतायेंगे, आखिर जो नहीं सुनते हैं हुक्का नोश।
( देशोपकारक पत्र से )

---

## हुक्का पान का वर्णन।

हुक्का पान की रीति न केवल आर्य्यावर्त्त में, प्रत्युत सारे संसार में इतनी वृद्धि को प्राप्त हो गयी है, कि सब से प्रथम इस के सम्बन्ध में लिखना आवश्यक समझा गया है। गणितज्ञ कहते हैं कि त्रिशत कोटि पौण्ड, ( पौण्ड आध सेर का होता है ) वार्षिक व्यय सर्व देशों में तम्बाकू के अर्थ होता है, कि जिस के पत्ते प्रालम्बितावस्था में मिलावें और पृथ्वी को लपेटें तो चालीस समय पृथ्वी को घेर सकें। दश प्रतिशत सारी पृथ्वी के मनुष्यों में शायद ही ऐसे हों जो ताम्रकूट पान न करते हों। आर्य्यावर्त्त में अपार तम्बाकू उत्पन्न होती है, और इस के अतिरिक्त चतुर्दश कोटि अर्द्धप्रस्थ ( पौण्ड ) अमरीका से आता है। स्त्री, पुरुष, वृद्ध, युवा, बालक, वृद्ध, ईरानी, तूरानी, रूमी, शामी, हिन्दी, सिन्धी, जर्मन, अरमन, अरबी, अजमी, फरांसीसी, रस्तनी, पुर्तगाली, रूमी, युवनानी, सरानी, प्रत्येक इसका उपयोग करते हैं। कोलम्बस ने जज़ीरा

टोबाको से तम्बाकू को ज्ञात किया। उसके नाम पर इसका नाम टोबाको ( Tobacco ) अंग्रेजी में हुवा। प्रत्येक देश में प्रायः इसी नाम से प्रसिद्ध है, अरबी में, तमग़, वा अज़नुज्जैब, यूनानी में तल्ख़मस, अंग्रेजी में टोबैको, कशमीरी में तमोक, हिन्दी में ताम्रकूट।

१५६० ई० में जाननीकोट फ्रान्सीसी दूतने पुरतगाल से तम्बाकू फ्रान्स में भेजा। वहां इसका नाम इसी दूत के नाम पर, नीकोटैना, हुवा। यही इसका वैज्ञानिक नाम है! और तमाल पत्र सत्त्व का विष जो निकाला जाता है, उसको नीकोटैना ही कहते हैं, आर्य्यावर्त्तीय तमाल पत्र का अंग्रेजी में, वैज्ञानिक नाम, लोबिया इन्फ्लेटा (Lobia inflata) रक्खा गया है।

## ताम्रकूट का विष।

तम्बाकू के पौदे के प्रत्येक अंश में एक क्षार विष होता है, जिसको अंग्रेजी में नीकोटैन कहते हैं। प्रत्येक देशीय ताम्बाकू में इस विष की उपस्थिति होती है, फ्रांसीसी तम्बाकू में सब से अधिक सात आठ प्रतिशत प्राप्त होता है।

## नीकोटैन।

( $C_{10}H_{14}N_2$ ) को तम्बाकू के पत्रों से प्राप्त करते हैं। तम्बाकू के रस को चूना के पानी से मिलाकर उसका अंश या अतर खेंचा जाता है। जब शुद्ध किया जाता है—यह बिना रंग एक तैल सा होता है और वायु में रखने से भूरा सा हो जाता है—मुख में रखने से अत्यन्त ज्वलन, अत्यन्त तीक्ष्ण दुर्गन्धयुक्त जैसी कि नलिका की सी दुर्गन्ध आती है; पानी में डालने से अन्य तैलों की भांति तिरता नहीं रहता बल्कि घुल जाता है। क्लालिक एसिड के साथ मिलाने से नीकोटैन, तेज़ाब ( तीक्ष्ण जल ) बन जाता है। इस विष के २ वा

३ बिन्दु भक्षित किये मार देते हैं । ४ बिन्दु एक कुत्ते को दे दो ५ मिनट में ही पंचत्त्व को प्राप्त हो जावेगा ।

ताम्रकूट विष हुक्का वा भोजन में दिया जा सकता है, अथवा गलती से खाया जा सकता है । २ मासा ताम्रकूट के क्काथ से भी मृत्यु हुई है । तम्बाकू के पत्ते शरीर पर बांधना मृत्यु का कारण प्रमाणित हुये । घावों को तम्बाकू के क्काथ से धोने से मृत्यु हुई । १ तोला तम्बाकू १५ मिनट में मारता देखा गया है । और नीकोटैन से ३ मिनट में मृत्यु हो जाती है । तम्बाकू के पत्ते तृतीय कक्षा के रूक्षोष्ण हैं हृदय और मस्तिष्क को हानिकारक हैं, उन्माद और विसंज्ञता उत्पादक हैं, रक्त का जाड्योत्पादक है, यह लक्षण केवल थोडा सेवन करने के हैं ।

## तम्बाकू वा नीकोटैन विषभक्षित के लक्षण।

ग्लानि, सिरका चचराना, अङ्गकम्प, पश्चात्य पाद निर्बलता—नाड़ी की शीघ्रता-सिरका भारीपन, उन्मत्तता-विसञ्ज्ञता-उबकाई—स्वर कठोरता, शीतल स्वेद आना—दिल घटना—निर्बलता—प्रायः वमन—कभी कभी अतिसार—पेट में अत्यन्त पीड़ा, अन्त में नाड़ी शनैः शनैः निर्बल होती जाती है और कम्प होता है—और किसी समय अनुभव भी नहीं होती। श्वासकृच्छ्रता—पुतली की आकृति कभी साधारण, कभी प्रस्तारित, और कभी संकुचित ज्ञात होती है (प्राय फैली हुई)। यदि विशेष विष भक्षण कियाजावे, तो तत्काल अचेत होकर ५ मिनट में मृत्यु हो जाती है न पीनेवाले को इस की ८ वा १० चिलमें एक समय पान करने से भी मृत्यु आजाती है ।

## मरणान्तर छेदन भेदन के लक्षण ।

आमाशय में तथा मस्तिष्क शिराओं में रक्त का इकट्ठा होना, फुफुस और कलेजे में काले खून का भरे जाना, हृदय रक्त से, सहित

रुधिर, नील काला—कलेजे, आमाशय वा फुफ्फुसों में विष की खोज। नीकोटैन को यदि तेजाब में मिलायाजावे तो नीला रंग हो जाता है—और उसकी दुर्गन्ध से भी उसे जाना जासकता है। आर्य्यावर्तीय ताम्रकूट अंग्रेजी से ज़रा भिन्न है। एक ड्राम (अनुमानतः ३ मासा) खाने से प्रायः ३६ घंटों में मृत्यु होती है, और वैसे खाया जावे तो उष्णोदक पान करके वमन करते जाना उपाय है—इस के भक्षण पश्चात् तत्काल—अत्यन्त वमन—ग्लानि शिरः पीड़ा--भारीपन-शीत स्वेद-कम्पादि होते हैं। साथ ही मस्तिष्क शिराओं में रक्तैकत्र्य-आमाशय की झिल्ली में अत्यन्त सोज़िश इत्यादि भी ॥

---

## चिकित्सा।

क्योंकि तम्बाकू से मृत्यु शीघ्रतया होती है, अतः जितना शीघ्र उपाय हो सके उत्तमतर है। वमन उसी क्षण आरम्भ करना उचित है। वमन होने पर भी वान्तिकर औषधी देकर वमन को बढ़ाना चाहिये, ताकि आमाशय विष रहित हो जावे वा स्टामकपम्प (दोनों का वर्णन, "विषचिकित्सा प्रथम भाग" में हो चुका है) से आमाशय को धोना उचित है। कोई रक्त भ्रमण की वृद्धिकर औषधी दी जा सकती है, और आमाशय शोधनानन्तर पीडा की शान्ति के लिये अहिफेन की थोड़ी सी मात्रा का प्रयोग भी करते हैं। कुचला का सत्त्व (स्ट्रिक्निया) इसका फ़ाद जहर, है १/२० ग्रेन त्वचा के भीतर रक्त में प्रविष्ट करना चाहिये। युनानी पुस्तकों में इसका सुधारक दुग्ध लिखा है। तत्काल वमनान्तर दुग्ध पान आरम्भ करावे। इस से भी वमन होता जावे तो भय नहीं है। जो विष रम गया है, उसका सुधारक होगा, और अवशिष्ट निकलता जावेगा।

## मृत्यु ।

जैसा कि वर्णन हुआ, ताम्र कूट पत्र विष " नीकोटीन " के दो चार विन्दु से तत्काल से प्रथम मृत्यु आजाती है, और ३ मासे ताम्रकूट मृत्यु का कारण होता है । तम्बाकू के पत्तों का रस वा क्वाथ वा हर शरीर पर लगाने से भी मृत्यु हुई हैं । ५ पत्ते भक्षण से यद्यपि मृत्यु होजाती है पर प्रायः बच भी रहते हैं-वहुत अधिक तम्बाकू को हुक्का वा चुरट में पीने से भी मृत्यु हुई हैं-मुझे स्मरण है कि आयु भर में एक वार हुक्का पिया था-एक मनुष्य उस को पीकर उठगया-मैंने उसको पीना आरम्भ करदिया-थोड़े समय के पश्चात् काम्पने लगा-और सख्त ज्वर हुआ कतिपय दिवस वीते हमने समाचार पत्र में पढ़ा कि एक अंग्रेज विस्तरे पर मृत प्राप्त हुवा-अन्वेषणान्तर डाक्टरों की सम्मति हुई कि अधिक तम्बाकू के कारण मृत्यु हुई है-हुक्का पान का वर्णन हम अभी पूर्णतया करने वाले हैं ।

## डाक्टर सी० ई० आरमण्ड, सीम्पल लिखता है ।

" नस्य से भी मृत्यु होती है, और तम्बाकू के पत्तों के समूह में सोने से भी विष प्रभाव पड़ता है, "

पैरिस एकैडमी आफ़ मेडिसन, की ओर से जो अन्वेषणा तम्बाकू में कार्य्यासक्त रहने वालों के सम्बन्ध में हुई, उस से निम्न लिखित परिणाम निकाला गया ।

" जब दैनिकीय ( मजदूर ) प्रथम लगाये जाते हैं, तो शिरपीड़ा और ग्लानि होती है, कदाचित् आमातिसार । यह लक्षण ८ से १५ दिवस पर्य्यन्त रहते हैं । पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां विशेष दुःख भोगती हैं । जब यह लोक स्वभाव बना लेते हैं तो पुनः दुःख नहीं उठाते । दो वर्ष पर्य्यन्त कार्य्य करके उनके शरीर का वर्ण भूरा हो जाता है,

जिस से ज्ञात होता है कि बहुत कुछ परिवर्त्तन होरहा है। इन दैनिकीयों के रुधिर और मूत्र में से कोई नीकोटीन नहीं पाई जाती है।

---

## विष अमृत है।

ईश्वरीय शक्ति का वारपार कोई नहीं जानसकता है कोई वस्तु वा पदार्थ संसार में व्यर्थ नहीं है। भयंकर से भयंकर, विष जितना कि वह मारक है उतना ही वह अमृत है। हलाहल विष से वह २ औपधियां बनती हैं, जो सचमुच मृत को पुनः जीवित कर सकती हैं, असाध्यावस्थाओं में स्वस्थ करने वाला यदि संसार में कोई है तो विष है, वैद्यक में इन्हीं विषों के द्वारा वह वह औषधियां प्रस्तुत की जाती हैं, जो कि एक खशखश भर बड़े से बड़े रोगों को दूर कर सकती हैं। हमारा यह विषय नहीं है, यदि प्रत्येक विष के साथ उसके लाभकारी गुणों का उल्लेख करें तो शायद प्रत्येक विष वर्णनार्थ एक पृथक् लघु पुस्तक की आवश्यकता पड़े, यथा तम्बाकू ही लीजिए, कई रीतियों से यह कफ़, कास, श्वासादि को उपयोगी हैं। रस का शर्बत श्वास रोगियों को लाभकारी है। इसके द्वारा दारचिकना, रसकपूरादि भस्म बनती हैं, और एक २ बीसों रोगों को लाभदायक है। इसकी कई प्रकार की नस्य बनती है। कोई कफ़जनित शिर पीड़ा को लाभदायक है, और कोई कृमि नाशक है, तम्बाकू के पत्ते ही अण्डवृद्धि की अवस्था को उपयोगी हैं, और अण्ड कोषाघात को लाभ पहुंचाते हैं, और अण्ड शोथ को तो बहुत ही उपयोगी है। संखिया घोर विष है, परन्तु उसमें इतने गुण हैं कि जिनके लिये एक बड़ी पुस्तक बन सकती है, पस ! हम केवल इतना निवेदन कर देना पर्याप्त समझते हैं कि यह सब विष रोगापहरण में अद्वितीय होते हैं, और औषधी की रीति पर उचित मात्रा में उपयुक्त किए जाते हैं। हमारी पुस्तक का नाम

क्योंकि विषों की पुस्तक है, अतः हम इनके लाभों को सम्प्रति नहीं लिखते हैं।

---

## स्वभाव बलिष्ठ है।

मानव शरीर को न जाने परमात्मा ने कैसा रचा है कि जिस वस्तु का उसे स्वभाव वा व्यसन होजाय, वही उसी की प्रकृति के अनुकूल हो जाती है। एक जाट ईंटों पर बड़े आनन्द से शयन करता है और एक अमीर के बिस्तरे के अन्दर एक कङ्कर हो तो सारी रात विकल रहता है, एक कृषिकर दिन भर धूप में कार्य्य करता है, तो एक बाबू आधा घण्टा भी धूप में खड़ा नहीं रह सकता है। संखिया जिसकी एक रत्ती की मात्रा भी मृत्यु वा महादुःख का कारण है। दो दो तोला व्यसनी मनुष्य खा जाता है और जीवित रहता है। ५ तोला प्रतिदिन खा लेने वाले मनुष्य भी विद्यमान हैं। मिट्टी और कोयला जो कोई मनुष्य नहीं खाना चाहते, स्त्रियां व्यसनी हो कर बड़े आनन्द से खाती हैं। शराब जिसकी गंध सूंघी ही नहीं जाती, बोतलों की बोतलें गटागट लोग पी जाते हैं। स्मरण रहे कि कोई व्यसन अच्छा नहीं है। अफ़यून का नशा उतर जाने के पश्चात् अफ़यूनी की अवस्था, नशा उतरने के पीछे शराबी ( मद्यपी ) की अवस्था, तम्बाकू पीने वाले को एक दिन हुक्का न मिलने की दशा को यदि कभी आपने देखा है तो "मुफ़रयिअल्कल्ब कूलूष" के निम्न लिखित शब्दों को सदैव स्मरण रक्खेंगे।

"उचित है कि यदि व्यसन किया भी जावे तो उन्हीं का जो कि हानिकारक न हों। ........अन्वेष्टा जनों ने कहा है कि जो कोई हानिकारक पदार्थ का व्यसनी हो तो योग्य है कि शनैः २ उसको त्याग दे, ताकि हानि से बचा रहे।"

वही विष औषधी के ढंग पर प्रयुक्त करने से अमृत होता है, और अधिक मात्रा में प्रयुक्त होने से हानिकारक हो जाता है। यद्यपि कोई मनुष्य शनैः शनैः अपने शरीर को इस योग्य बना ले कि वह सौ बार तम्बाकू नित्य प्रति पी सके, वा दो तोला संखिया वा अफयून प्रति दिन खा सके, परन्तु कदापि संभव नहीं है कि वह इन हानियों से वंचित रह सके जो कि वह प्रत्येक अवस्था में करेंगे। अव्यसनियों की जो दशा अल्प मात्रा हो सकती है, व्यसनी की वह अधिक से होगी ; इसी वास्ते श्रेष्ठ कि है कभी कोई बुरा व्यसन न डाला जावे और मादक द्रव्य का उपयोग न किया जावे। सब मत इसी कारण से मादक द्रव्य और शरीर शौन्यजनक पदार्थ भक्षण का निषेध करते हैं। यद्यपि सब संसार में नशों का प्रचार है, परन्तु अभागा आर्य्यावर्त्त इस में सब से उच्च श्रेणी पर है। चीन में अफयून का व्यसन है, तो इंगलिस्तान में मदिरा का व्यसन है, परन्तु आर्य्यावर्त्त में जितने प्रकार के नशे हैं, सब विद्यमान हैं। अफयून, संखिया, तम्बाकू, भंग, चरस, गांजा, चण्डु, मदक, कोकीन, इत्यादि बीसों गिन लीजिये। हम प्रत्येक का संक्षिप्त परन्तु आवश्यकीय वर्णन करेंगे, आशा है कि पाठकजन लाभ उठावेंगे। जितने लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे, उन में से बहुत कम ऐसे होंगे जो किसी न किसी नशे में अवश्य फंसे हुए न होंगे। वह यदि न्याय दृष्टि से पढ़ें और वस्तुतः उन को सत्य ज्ञान हो, तो आधे भी उन में से छोड़ दें तो मेरा परिश्रम और उन सब को रुपया सफल होगा। परमात्मा ऐसा ही करे !

## ताम्रकूट का इतिहास।

तम्बाकू को इस से चार शताब्दी प्रथम संसार में कोई न जानता

था। १४९२ ई०में कोलम्बस नयी दुनिया को ज्ञात करने के अर्थ पाश्चात्य आर्यावर्त्त के टापुओं में गया, तो वहां जज़ीरा टोबाको नामक में इस पोदे को पाया, जो वहां स्वयमुत्पन्न (खुदरो) उगता था। अपने समय पर उगता और समय पर ही शुष्क हो जाता। कोई वहां उस की कृषि नहीं करता था। कोलम्बस वहां से इसे स्पेन में ले आया, और वहां इस की खेती आरम्भ हुई, कई कहते हैं, कि टीचर-एक प्रसिद्ध सय्याह (भ्रमक) १३९२ ई० में जहाज़रानी करता हुवा, हिन्दूस्तान की खोज में आया (जिस के सम्बन्ध में उन दिनों प्रसिद्ध था कि वह स्वर्णभूमि है, और वहां दूध की नदियां बहती हैं, इत्यादि) अमरीका और जा निकला वहां जाकर स्थान स्थान पर उस ने मनुष्य प्रस्थित किये कि वहां की नई वस्तुयें लावें, एक ने आकर वर्णन किया कि जंगली एक प्रकार की पत्ती को लपेट कर एक ओर अग्नि लगा कर पीते हैं, इसी टीचर ने वह बूटी प्रथम यूरुप में प्रथित की।

हकीम मोमिन ने "तोहफ़ तुल मोमनीन" में लिखा है कि हज़रत बक़रात के समय में एक प्रकार की बूटी थी जो चार प्रकार की थी, जो कि तम्बाकू के सदृश थी, और सोक्रा.भिक विष को दूर करने के लिये बोई जाती थी, इस का नाम फ़लमोमी था। अनुमान कहता है, कि यह वही तम्बाकू है, और अपने इस लाभ के कारण आज उस ने इतना ग़ज़ब ढाया है। यूरुप में एशिया में जहां २ इस का बरताव हुवा, आरम्भ में इस का अधिक विरोध किया गया परन्तु नवीन बात का उत्साह इतना था कि विरोधियों की किसी ने नहीं सुनी, और जहां भी देखो इस का रिवाज पाया जाता है।

यहां तक कि यूरुप से पुरतगाल पर्य्यन्त जा पहुंचा और वहां इस की कृषि फैली। जिस प्रकार नये पदार्थ के देखने की इच्छा सब को होती है, और नयी वस्तु के लाभ भी अधिक प्रकाशित

किय जाते हैं, इसी प्रकार इस की खेती भी बृद्धि को प्राप्त होने लगी।

सन् १५६० ई० में म्योजाननी को फ्रांस के दूत ने इस को अपने बागीचा में बोया, और वहां से फ्रान्स में भी इस की कृषि और प्रसार आरम्भ हुये। सन् १५८६ ई० में तम्बाकू का बीज सर वाल्टर ब्लैक ने इंगलिस्तान को भेजा और अब वहां भी इस की खेती आरम्भ हुई, और नई वस्तु होने के कारण ३५ वर्ष के भीतर सारे इंगलिस्तान में फैल गया। हिन्दूस्तान के प्राचीन निवासियों को

## संक्षिप्त उपयोग विधि ॥

"कोई तो धूयें से सन्तप्त-हृदय वाले आशिक़ के निश्वसन की भांति अपने हृदय और मस्तिष्क को जलाकर भस्म करता है; कोई इसके पत्तों को पशूवत् प्रतिक्षण चाब कर अपने रक्त को इस के बिषप्रभाव से विकृत करता है; कोई इसकी नुस्वार लेकर मस्तिष्क का सत्यानाश करता है, कतिपय मनुष्य चुरट को मुख में दाब कर, गली कूचों में नाक, मुख, से धुएं के बादल के बादल उड़ाते हैं; और कोई निकम्मे काम के तौर पर हुक्के की गुड़ २ से दिल बहलाते हैं। कई स्त्रियां इसके पत्तों को पान के साथ प्रतिक्षण चबाती रहती हैं, और अपनी ईश्वर दत्त प्राकृतिक सुन्दरता को नष्ट करती है"।

## रस्में दुर्दशा करती हैं।

मैं एक मित्र से कुछ समय पश्चात् मिला, जो, हुक्का न पीते थे, पर उस समय आरम्भ कर दिया था। मेरे प्रश्न करने पर, बोले अजी! अवश्य हानि कारक हैं, और मेरी तो इच्छा है कि अब भी परित्यक्त कर दूं। पर क्या करूं जो कोई महमान, दोस्त पार आता

है सब की हुक्का से खातिर करनी पड़ती है. जो न पीते हों तो बड़ी कठिनता पड़ती है। दूसरे जब यार दोस्त बैठे सब तो हुक्का पीते और गप शप उड़ाते हैं, और हम चुपके एक तरफ कैसे बैठे रहें? यह सर्वथा सत्य है कि बहुत से मनुष्य इसी कारण से आरम्भ करते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान सब से प्रथम रखना उचित है, और निकृष्ट रीति का साहस और दृढ़ता से परिहार करना उचित है। देखिये मनुष्य कितना निर्बल और रस्मों का गुलाम है। जिस को पूछो यही कहेगा कि निसंशय न तो यह हमारे भोजन का कोई भाग है, न हमारे जीवन का सहायक है, न स्वास्थ्य के वास्ते आवश्यक है और ना ही किसी प्रकार से भी इसकी कोई आवश्यकता है; फिर भी कैसे आनन्द से सब इसको पीते हैं। कोई मूर्ख यह कहते हैं कि, जब कोई काम न हो तो हुक्का से दिल बहलता है। अफसोस! ऐसी समझ पर लाख २ लानत मित्रो! यदि चाहते हो कि आर्य्यावर्त्त पुनः उन्नति के शिखर पर चढ़े, तो बुरी आदतों को छोड़ दो। तुम किसी अन्य जाति की ओर न दृष्टि पात करो कि अमुक तम्बाकू पान करते हैं। उन में एक दोष है तो बीसों गुण भी होंगे। तुम दोष ही दोष पकड़ते जाते हो, जिनको तुम तुच्छ बातें समझते हो वह बड़ा भारी प्रभाव जीवन पर रखती हैं, गुरू गोबिन्द सिंह साहिब ने सिक्खों के वास्ते इसी लिये बड़ा निषेध किया था, कि जहां बैठते थे हुक्का पीने लग जाते थे। उनके हृदय और मस्तिष्क निर्बल थे, और वह निकम्मे थे, समय २ पर उनको अग्नि की आवश्यकता थी, अभी दुश्मन आ जावे परन्तु उन्हों ने तो अभी चिलम ही डाली है कौन छोडे? हुक्का आलमगीर हो गया था। इसलिए कहा कि आप त्यागो और दूसरों से छुडाओ।

## उपयोग का कारण ॥

लोग क्यों इतना उपयोग करते हैं ? इसका उत्तर वही है जो मद्यादि अन्य मादक द्रव्यों के सम्बन्ध में है। एक प्रसिद्ध पुस्तक लेखक एक स्थान पर लिखता है "एक व्यक्ति के सब पशु मर गये, उस को बहुत दुःख सन्ताप हुवा, परन्तु जब उसने चुरट पीना आरम्भ किया, तो उसके चेहरे से सब दुःख-सन्ताप के चिन्ह दूर होगये" बस देखिये, तम्बाकू पीने वाले पर एक प्रकार का केवल अपने आप को भूल जाने वाला प्रभाव छा जाता है। तम्बाकू को प्रथम तो निकम्मे पीते हैं। सत्य तो यह है कि इस के पीने से भी निकम्मेपन का स्वभाव हो जाता है। कोलम्बस जिस समय पाश्चात्य हिन्दुस्तान के द्वीपों में, जहां से उसे तम्बाकू मिला, पहुंचा, तो वहां के निवासी प्रातः काल से सायंकाल पर्य्यन्त बैठे तम्बाकू पीते रहते थे। और यही दशा इसी समय हिन्दुस्तान में आ-रही है। तम्बाकू पीने से इन्द्रियों में दोष समुचित होते हैं। मनुष्य अपने कर्त्तव्यों से अचेत हो जाता है। यही आनन्द समझा जाता है। तम्बाकू पीने वाला बैठा २ जीवन व्यतीत करना चाहता है। कोई तम्बाकू पान करने वाला शीघ्रता और स्फुर्त्तियुक्त दृष्टिगोचर नहीं पड़ता ॥

## ताम्रकूट सेवन का विरोध ॥

इसकी विरुद्धता सदैव से चली आई है, क्योंकि जब कभी अन्वेषणा हुई, उसको स्वास्थ्य के लिये हानिकारक पाया गया। सब से प्रथम यूरुप में रैले ने तम्बाकू इंगलिस्तान की रानी एलिजाबेथ को भेट दिया। जिस के पान से वह रोगग्रस्त हो गई थी, और जिसका उसने काउन्टस ऑफ नोटंघम से बदला लिया, और उसने इसके व्यवहार के निषेध की आज्ञा दे दी, और इसको

एक व्यसन पैदा करने वाला, वहशी बना देने वाला लिखा।

इस के पश्चात् जेम्स (अव्वल) ने एक पुस्तक तम्बाकू के विरुद्ध लिखा, और उसमें लिखा कि तम्बाकू देखने में घृणोत्पादक है, नासिका इस से दुःखित होती है, मस्तिष्क के वास्ते हानिकारक है, फुप्फुस को भयंकर है, और इस का अनिष्ट धूम प्रायः नरक धूम के समान है॥

कभी २ कुस्तुन्तुनिया में भी ऐसा होता था, कि यदि कोई मनुष्य पाईप पीता हुआ पाया जाता था, तो वह पाईप उसकी नासिका में छेदा जाता था, और पुनः उसी प्रकार उसको सब नगर में भ्रमण कराया जाता था। मास्को के ग्रैण्ड ड्यूक ने आज्ञा दी थी कि प्रथम बार जो तम्बाकू पीता पकड़ा जावेगा, तो शारीरिक दण्ड दिया जावेगा, और यदि द्वितीय बार पकड़ा जावेगा, तो प्राण से मारा जावेगा। ईरान में भी कई स्थानों में जो तम्बाकू पीते मिलते थे उनकी नासिका काट डाली जाती थी। और अभी थोड़े वर्ष ही बीते होंगे कि शाह जहान हब्श के राजा ने आज्ञा दी है, कि इन की प्रजा में से कोई मनुष्य सूंघता हुवा भी पाया जावेगा तो उसकी नाक काट डाली जावेगी, और यदि तम्बाकू खाता हुवा वा पीता हुवा पाया जावेगा, तो मार ही दिया जावेगा। यह विरोध कुछ न कुछ इस समय तक भी वर्तमान है। इंगलिस्तान में अभी भी यह कानून है कि अल्पायु बालक तम्बाकू पान न करे॥

## हानियां

तम्बाकू की हानियों के लिये वस्तुतः एक बड़ी पुस्तक की आवश्यकता है, तथापि यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे॥

अजीर्णता, अग्निमान्द्य, कास, फुप्फुस रोग, त्वग्रोग, निद्रानाश, दुःखदायक स्वप्न, चक्कर, नेत्र रोग, मुखदौर्गन्ध्य, हृदय और मस्तिष्क

की निर्बलता, उन्मादादि इसके सामान्य रोग हैं। दृष्टि के वास्ते हुक्का पान विशेषतः हानिकारक है। हुक्का पीने वाले को एक रोग होता है, जो अंग्रेजी में क्लोरोबिल्डीटण्डेन्स कहा जाता है। हितकारी समाचार पत्र में एक बार एक महाशय ने लिखा था कि उसने एक अन्धे को स्वयं देखा जो, हुक्का नोशी की अधिकता से अन्धा हो गया था। नूरानी पुठ यदि शुष्क न होगया हो तो तम्बाकू छोड़ने और चिकित्सा करने से नेत्र खुल भी जाते हैं। प्रथम नेत्रों में रक्त लेखा पड़ती हैं, उस समय छोड़ा न जावे तो रगों में पहचान नहीं रहती, और शनैः शनैः देखने की शक्ति भी जाती रहती है। हम ने कोई बृद्ध नहीं देखा जो हुक्का पीता हो और उसके नेत्र ठीक हों। ऐसे बहुत से बूढ़े देखे कि जिन की दृष्टि मरणपर्यन्त स्थित रही, परन्तु वे हुक्का नहीं पीते थे॥

## दुर्गन्ध॥

तम्बाकू पीने वाले से अत्यन्त दुर्गन्ध आती है। मुझे स्मरण है मैंने एक भृत्य को कहा था कि अमुक औषधि का नुसख़ा बना लाओ। जब नुसख़ा आया तो मुझको बहुत दुर्गन्ध आई। ज्ञात हुवा कि हुक्का पीकर नुसख़ा बनाया था, और उसी धूप की गन्ध थी। वास्तव में क्योंकि हमारे घरों वाले और हमारे दोस्त प्रायः हुक्का पीते हैं, अतः हम भी थोड़े इस धूम के स्वभाव वाले हो जाते हैं। नहीं तो यह इतना दुर्गन्ध युक्त होता है कि सहन करना कठिन होता है। पहिले पहल कंगाल लोग हुक्का पान करते थे, और अमीर खाते थे, परन्तु अन्त में अमीर भी व्यवहार में लाने लगे, और स्त्रियां तक खाने लगीं; परन्तु अब तो स्त्री पुरुष सब खाते और पीते भी हैं। योरुप के स्त्री पुरुष चूना लगाकर वा पान में लगाकर खाते हैं। और कई सूंघते हैं, स्त्रियों को प्रायः नस्य का

स्वभाव होता है । कहीं २ सत निकाल कर पानी में डाल कर भी पीते हैं ॥

इंगलिस्तान के किसी शहर में एक स्त्री थी, उस के गृह के कतिपय विभाग भाड़े पर भी थे । किसी तम्बाकू नोश को वह किराया पर नहीं रखती थी । एक दिवस उसको मकान से बुरी गन्ध आई और बीमार हो गई । ढूंढने से ज्ञात हुवा कि दरजी से एक वस्त्र तयार होकर आया था उसमें तम्बाकू की गन्ध थी ।

अमेरिका का एक मनुष्य तम्बाकू का अतीव व्यसनी था । विवाह होने के शीघ्र ही पश्चात् उसकी स्त्री उसकी दुर्गन्ध के कारण रुग्ण हो गई, और उस में सब लक्षण तम्बाकू के विष के पाये गए । पति को शिक्षा मिली और उसने तम्बाकू का परित्याग कर दिया ॥

अमेरिका का एक स्कूल मास्टर जिस कमरे में रहता था, उसके नीचे बहुत मनुष्य चुरट पीने लगे, और वह बीमार होगया । मकान छोड़ने पर राज़ी हुवा । यदि किसी कमरे में बहुत लोग हुक्का पीते हों, एक हुक्का न पीने वाला उस में बैठा हो तो, उसका जी मचलाने लगेगा, और दिल उसका घबराने लगेगा, और दुर्गन्ध से नाक में दम हो आवेगा ॥

## जूठ ॥

इस के बिना यदि कोई तम्बाकू को पिया चाहे, वह कैसा ही पवित्र और सुथरा रहे, अवश्य ही छोटों बड़ों सब का जूठ खाने लग जायगा । हुक्के की नलिका पर ही प्रत्येक का थूक लगता है, जो अगणित छूत की बीमारियों का कारण है । एक हकीम साहिब ने लिखा है एक साहब की जिह्वा पर उपदंश का घाव हो गया था जो उनको केवल हुक्का पीने के द्वारा प्राप्त हुवा था । दूसरे एक महाशय

को नेत्र रोग हो गया। और इसी के कारण गोश्त खोरा हो गया, जिस से एक दो दान्त भी नष्ट हुए, और मसूड़े भी खाये गये ॥

## टट्टी इस के बिना नहीं आती ॥

हुक्का विष्टम्भक है (कब्ज करता है)। स्वभाव बड़ा बलिष्ठ है। हुक्के बाजों को हुक्का पीने के बिना मल ही नहीं जाता है प्रातः उठते ही हुक्का ढूंढते है, पीना आरम्भ करते मल उतरने लगता है जब खूब उतर आता है तो विवश होकर उठ दौड़ते हैं अब तो रूस का बादशाह भी नहीं रोक सक्ता, यह स्वभाव बढ़ते २ यहां तक पहुंच जाता जाता है कि, किसी २ को टट्टी में भी हुक्का ले जाना पड़ता है। इधर से हुक्का पीते जाते हैं, उधर से पाखाना निकलता जाता है ॥

## तम्बाकू का व्यसन बड़ा ज़बरदस्त है।

तम्बाकू की आदत इतनी ज़बरदस्त है कि, शायद शराब इत्यादि के साथ भी इसकी कुछ तुलना नहीं हो सकती। हुक्का पीने वाला यदि सफ़र में हो और हुक्का पीने में थोड़ा विलम्ब हो जावे और मार्ग में कोई पीता दृष्टि गोचर हो तो फिर हुक्का नोश की मुखाकृति को तो देखो। योग्य लेखक मिस्टर हैन्ट, एक बार कोई व्याख्यान सुनने जा रहा था। मार्ग में एक मनुष्य उसे मिला। वार्त्तालाप आरम्भ होने पर ज्ञात हुवा कि पहिले वह मनुष्य मद्यपायी था। हैन्ट महोदय ने पूछा तुम्हें शराब छोड़ने से क्या कष्ट हुवा? उत्तर दिया कि, कष्ट तो हुवा परन्तु तम्बाकू से थोड़ा। यद्यपि मैंने मद्य छोड़ दिया है, किन्तु तम्बाकू नहीं छोड़ सकता। ऐसे ही बहुत से ऐसे मनुष्य देखने में आते हैं, जिन्होंने मद्य को तो तुरन्त छोड़ दिया, परन्तु तम्बाकू को तुरन्त छोड़ने वाले बहुत कम देखे। बड़े २ मुल्ला इस के व्यसनी देखे। आर्य्य समाज के वह उपदेशक जिनके लेकचर सुनने से लोग विस्मित हो जाया करते हैं, और वही आर्य्य-

समाजी जो कि इस बात में प्रसिद्ध हैं कि मादक द्रव्यों का उपयोग नहीं करते, उनको भी हुक्का पीते पाया। पूछने पर ज्ञात हुवा कि वह नशा सब छोड़ चुके हैं, परन्तु यह नहीं छुटता। शायद इस वास्ते भी कि इसे साधारण नशा समझा जाता है। किन्तु छोड़ने वाले तो छोड़ ही देते हैं। अमेरिका का एक डाक्टर हरसमय इस को हानिकारक कहता था, परन्तु छोड़ न सक्ता था। वह कई बार क्रोध में आकर डिबिया को निकाल कर फेंक देता, वा जला देता था। उसका कथन है कि, फिर भी वह प्रातः उठते ही आग की तलाश में दौड़ पड़ता था। पर जो छोड़ने वाले कुछ दिवस के दुःख की परवा नहीं करते। फोड़े पर जब मरहम लगाई जावे, सम्भव है एक घंटा लगे, परन्तु यह दुःख बुद्धिमान् आगामी सुख के वास्ते सहन कर ही लेगा। एक मनुष्य का कथन है कि उसको तम्बाकू पीने की बहुत आदत थी। जब उसका विवाह हुवा तो बहुत सुन्दर और प्यारी स्त्री मिली, उसने उसको तम्बाकू छोड़ने पर मजबूर किया। उसने तम्बाकू तो त्याग दिया। २४ घंटे तक कुछ नहीं हुवा, तत्पश्चात् शिर चकराने लगा, और आंखें घूमने लगीं, शिर में पीड़ा होने लगी। कोई वस्तु भी अच्छी न ज्ञात होती थी। न किसी कार्य्य पर मन लगता था। न किसी वस्तु का स्वाद आता था। फिर भी उसने तम्बाकू का ध्यान न किया। इस दृढ़ता का फल यह हुवा कि व्यथायें धीरे २ घटने लगीं, और अन्त में उसका स्वास्थ्य ठीक होगया। तब वह प्रथम से विशेष नीरोग रहने लगा। तम्बाकू पीने वालों की इच्छा आगे बढ़ती है, इस से फिर चरस, चण्डू, शराबादि भी पीने लग जाते हैं। हुक्का पीने वाले को निकम्मे पन का स्वभाव होता जाता है। घंटों बैठे २ दम लगाता रहता है। कचहरी में जाने लगे, हुक्का तय्यार है। मित्र से मिलने लगे, हुक्का लाओ! रोग के विषय में पूछने के अर्थ जाना है, प्रथम हुक्का चाहिये।

शादी पर जाना है, गमी पर जाना है, पहिले हुक्का लाओ। जिधर देखो हुक्का ही हुक्का है। हुक्का पीने वाले के गृह में पवित्रता नहीं रहती। जिस स्थान पर वह रहता है, किसी तरफ तम्बाकू की गन्ध है, किसी तरफ बानी पड़ी है, किसी तरफ आग सुलग रही है, किसी तरफ खंगार पड़े हैं, कहीं गुल तम्बाकू है, दीवारों पर कफ लिपा हुवा है। इसका धूम प्रत्येक दशा में हानिकारक है, किसी का कथन ठीक है कि, हुक्का पीने वालों का सीना काला हो जाता है। जैसे हाथ जहां भी हुक्के का धूम लगता है, काले हो जाते हैं, आग से नहीं अपितु उस विष से जो हुक्के से निकलता है। नलिका के मुख पर वस्त्र लगा कर देखिये, तत्काल श्यामता युक्त पीत हो जावेगा। इसको सूंघने से ही जी मतलाने लगता है, और यही बगोले के बगोले हमारे हुक्का पीने वालों के भीतर जाते हैं। जिस प्रकार हमारे श्वास अन्दर लेने से, कारबानिक एसिड गैस विषैला उत्पन्न होता है, जो कि यदि भीतर रहे तो उसी क्षण मार देता है, इसी प्रकार तम्बाकू जलने से कारबानिक एसिड गैस उत्पन्न होती है, जो प्रत्येक दशा में हानिकारक है। शेख अबन सीना, का कथन है कि यदि धूत्रां और गुबार न होता, सारे मनुष्य सहस्र वर्ष पर्य्यन्त जीते। जालीनूस का कथन है कि धूम दुर्गन्ध और भाप से सदा बचो। तम्बाकू जब जलता है, तो उसके धूयें में कोयले के बहुत सूक्ष्म परमाणु कारबोनिक एसिड गैस और नीकोटीन होते हैं। नीकोटीन अत्यन्त हलाहल विष है। कारबोनिक एसिड गैस विष से और कोयलों के परमाणुओं से अन्दर काला हो जाता है, मुख और कण्ठ सूखता है, शिर पीड़ा और ऊंघ रहती है। दिल का धड़कना, कम्पनादि नीकोटीन के ही कारण हैं, हुक्का पीने से कण्ठ, श्वास नलिकाओं और फुप्फुस में छोल होने से कफ निकलने लगता है, अन्त में श्वास, कास प्रारम्भ हो जाता है॥

## लाभ ॥

एक हकीम साहिब ने एक रोगी से जिसको हुक्का पीने के दुर्व्यसन से अनेक रोग लगे हुए थे, हुक्के के लाभ यों कथन करने आरम्भ किये:—

जो हुक्का पीता है वह कभी वृद्ध नहीं होता है, उसके घर में चोर नहीं आते, और वह अमीराना जीवन व्यतीत करता है, इत्यादि। रोगी ने जब प्रसन्न होकर पूछा कि यह कैसे ? तो हकीम साहिब यूं बोले, कि हुक्का पीने से फुप्फुस के रोग प्रायः हो जाया करते हैं, इस लिये बुढ़ापा आने से पहिले ही मनुष्य को मौत आ दबाती है, फिर वह बूढ़ा कैसे हो ? चोर इस कारण नहीं आते कि उसके धूम से जो छुलाव होता है उस से कफ उत्पन्न होता है, और वह श्वास कास उत्पन्न कर देता है, ऐसी अवस्था में प्रहर रात्रि होते ही वह पुरुष खांसना आरम्भ कर देता है, चोर समझते हैं कि मालिक जाग रहा है। फिर चोर कैसे घर में घुसें ? ऐसी तरह काहिल और सुस्त होने से अमीराना जीवन व्यतीत करता है ॥

एक लेडी बिटिया नीडर ने भी इस प्रकार इसके लाभ वर्णन किये हैं, इस में कुछ संशय नहीं कि तम्बाकू में बहुत से लाभ हैं, अफसोस हैं कि हम नित्य प्रति उनको देखते हैं, परन्तु कभी ध्यान नहीं देते, तम्बाकू से कीड़े मकौड़े मर जाते हैं, हमको भिड़ें नहीं काट सकतीं। घातक पशुओं से भी हम रक्षित रहते हैं, बहुधा ऐसा होता है कि हमारा एक एक दो दो समय का भोजन बच जाता है, और हम को भोजन करने का दुःख भी नहीं उठाना पड़ता, व्यय भी बच जाता है, इस से बढ़ कर और क्या मितव्ययिता होगी। संसार में यदि शीघ्रता से मृत्युपथगामी हो जाते हैं तो उस में भी सर्वथा लाभ ही लाभ है क्योंकि एक तो विशेष आयु व्यय नहीं होती, और न

अशुद्ध होती है, इस के द्वारा जो लाभ मनुष्यजाति को प्राप्त होते हैं वे साधारण या थोड़े नहीं समझे जा सकते। इस के अतिरिक्त कई सांसारिक विद्वान् पुरुषों की सम्मति है कि मनुष्य की सत्य तथा वास्तविक नम्रता इस तम्बाकू ही के द्वारा प्रकट होती है॥

अस्तु यह तो हुआ उपहास, पर वस्तुतः तम्बाकू के कुछ लाभ भी हैं, जैसाकि पहिले कहा जा चुका है। इस का धूम सांक्रामिक रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करता है। लार्ड विलजली ने अमरीका में जब कामास की लड़ाई आरम्भ की तो प्रस्थान के समय सब से प्रथम वहां की दुर्गन्ध का असर न होने देने के लिये प्रत्येक सिपाही को तम्बाकू और पाइप विभक्त कर दिये थे। खेतों में यदि कृमि पड़ जावें तो वे तम्बाकू छिड़कने से मर जाते हैं। हैजा और निमोनिया के कीड़े इस के धूम से मर जाते हैं। यह सब कुछ ठीक है, लेकिन इस से किसी प्रकार भी यह प्रमाणित नहीं होता कि तम्बाकू पीने का स्वभाव डाला जावे। गंधक कृमि को नष्ट करती है। आवश्यकता होने पर उसे ही जलाया जाता है। ऐसा ही इस से भी कार्य्य लिया जा सकता है। संखिया यदि कीड़ों को मारता है तो क्या उसे पीना आरम्भ किया जावे?

तम्बाकू पीना अत्यन्त हानिकारक है और सब डाक्टरों की यही सम्मति है कि तम्बाकू पीने से कोई रोग नहीं रुकता है। प्रत्युत इस से उत्पन्न हुआ रोग प्राण हर होता है। एक डाक्टर लिखता है "जहां तक मेरा अनुभव है तपेमुहर्रिका ( पैत्तिक ज्वर वा प्लेग ) उन रोगियों के वास्ते अत्यन्त प्राणघातक प्रमाणित हुवा है, जो तम्बाकू के व्यसनी थे"। एक डाक्टर का कथन है कि जितना अपस्मार और संन्यास रोग का तम्बाकू से भय है मद्य से उतना नहीं"। वह रोगी जो तम्बाकू का व्यसनी हो रोग से बहुत दुःख पाता है और अति कठिनता से स्वास्थ्य लाभ करता है। शहर न्यूयार्क का एक

डाक्टर लिखता है "मैंने किसी को यह स्पष्ट कहते हुये नहीं सुना कि तम्बाकू का पीना रोगों को रोकता है, बड़े बड़े तम्बाकू पीने वाले देखे हैं और उन से पूछा है पर किसी ने भी यह नहीं कहा, और न कभी किसी ने इसका दावा किया कि यह रोगों को रोकता है वा रोगों से बचाता है"। डाक्टर साल महाशय के सन्मुख जब एक मनुष्य ने कहा कि यह मैलेरिया विष को उपयोगी है, तो बड़े बल से उस योग्य तथा प्रतिष्ठित डाक्टर ने कहा "मैं तुम्हारे इस कथन को सर्वथा अज्ञता और मूर्खता से भरा हुआ जानता हूं, कि तम्बाकू मैलेरिया को उपयोगी है"।

हमारे देश में तम्बाकू खाने की प्रथा भी अब बहुत बढ़ती जाती है। परन्तु जानना चाहिये कि पीने की अपेक्षा खाना अत्यन्त हानिकर है। योरुप में भक्षण प्रथा नहीं है। हां! अमेरिका में स्त्री और पुरुष बहुधा भक्षण करते हैं। प्रतिक्षण थूकते ही दृष्टि पड़ते हैं। पीने में तो नीकोटीन-विष का बहुत साधारण भाग भीतर जाता है, किन्तु खाने में तो अवश्य ही बहुत अधिक भाग भीतर जाता है। तम्बाकू खाने वालों के दांत अत्यन्त निकृष्ट हो जाते हैं, कभी २ दांतों को देख कर घृणा आती है। तम्बाकू खाने वाले की पाचनशक्ति अवश्य नष्ट होगी, वा विषम होगी, क्योंकि चिक्कण भाग जो भोजन पचाने में सहायक है, तम्बाकू खाने से व्यर्थ निकलता रहता है, और फिर निर्बल भी हो जाता है। यह भी कभी २ हो जाता है कि तम्बाकू पीने के बिना निकलता ही नहीं। जो मनुष्य तम्बाकू नहीं खाते, उन की पाचनशक्ति प्रबल होती है। पस तम्बाकू खाने से भोजन करने के बाद सब से प्रथम का पाचन अधूरा रह जाता है, और दुःख का कारण होता है। हमारे देश में कई भाग्यवान् तम्बाकू का सत्व निकाल कर खाते हैं इससे भी जो कि बढ़ कर विष है। यह तो मात्रा से थोड़ा खाने पर भी अत्यन्त हानिकर है। सिक्खों

में इसके खान पान का अति निषेध है। परन्तु तम्बाकू इतना प्रचालित है कि हम ने सिक्ख स्त्रियों को इस की नस्य लेते देखा है। नस्य लेने वालों के नासिका द्वार घृणास्पद तथा निकम्मे हो जाते हैं। इस से श्रवणशक्ति न्यून और स्वर भारी हो जाते हैं। पाखाना साफ़ खुल कर नहीं होता। और कभी शरीर शिथिल तथा भ्रम भी हो सकता है। अमेरिका का एक डाक्टर लिखता है "कि मुझे स्मरण है कि जब मैं बाल्यावस्था में स्कूल में पढ़ा करता था, तो मुझे शिक्षा की गइ थी कि जब कभी हम कोई वस्तु सूंघते हैं, तो उस का कोई न कोई अणु भाग श्रवणशक्ति की झिल्ली तक पहुंचता है और वह इन्द्रियशक्ति को बिगाड़ता है। अतः जितना अधिक हम तम्बाकू को सूंघेंगे, उतने ही अधिक अणुभाग नासिका में प्रवेश करेंगे। एक डाक्टर महाशय लिखते हैं, कि एक मनुष्य मरा, तो क्या देखा! कि उसकी छाती में एक इंच नस्य भरी हुई थी। उसकी मृत्यु का कारण नस्य ही थी। नस्य का उपयोग करने वालों से बुरी गन्ध आती है। सूंघने की शक्ति नष्ट हो जाती है। स्मरण शक्ति जाती रहती है। दृष्टि घट जाती है। और अपस्मार का भय होता है। अपाचन (बदहज़मी) हो जाती है। स्त्रियां हिस्टीरिया में ग्रस्त हो जाती हैं॥

जिस प्रकार हुक्का पीने का व्यसन होता है, और इसके बिना कल नहीं पड़ती, इसी प्रकार खाने वालों को खाने की, और हुलास लेने वालों को हुलास लेने की आवश्यकता होती है। और इसके बिना निर्बाह नहीं, प्रत्युत कभी २ प्राण बचाने में भी कठिनता पड़ती है। तम्बाकू पीने से मृत्यु पथ भी दीख जाता है। टाम्स जार्ज फोर्ड जिसकी आयु ४४ वर्ष की थी एक दिन बिस्तरे पर मृत पाया गया। आटसलंगटन कारोनर्स कोर्ट में डाक्टर ने वर्णन किया कि इसकी मृत्यु का कारण हृदय का बन्द होजाना है, और

हृदयस्फुरणता तम्बाकू की अधिकता से बन्द हुआ । मृत महाशय अत्यन्त तम्बाकू के व्यसनी थे ॥

मिस्टर नेल्ज़ एक अमीर का लड़का एक दिन प्रातःकाल अपने बिस्तरे पर मृत पाया गया । ज्ञात हुवा कि साठ सिगार प्रति दिन पीता था । और उस आधिक्य के कारण मृत्यु हुई ॥

अमेरिका के एक समाचार पत्र में लिखा था "इस देश में अब सिगरेट का प्रचार विशूचिका सांक्रामिक रोग के समान बहुत बढ़ रहा है । दो घटनायें अभी हुई हैं, कल जे. डी. मेल्ज की इसके कारण मृत्यु हुई । यह मनुष्य ७५ सिगार प्रति दिन पीता था । और भी तीन चार दिन हुये कि न्यूयार्क की सड़क पर एक व्यक्ति सिगार के उपयोगाधिक्य से उन्मत्त हो गया, और कोई दशा अब इस के स्वास्थ्य लाभ की दृष्टिगोचर नहीं पड़ती" ॥

फ्रेञ्च डाक्टर म्योरियल साहिब की अन्वेषणा का फल यह है, कि मुकाम नानसी के तम्बाकू कार्य्यालय में जो स्त्रियां काम करती हैं, उन में से जो प्रसूत के अनन्तर तत्काल कार्य्य में लग जाती हैं, उनके ९९ प्रतिशतक बालक मृत्यु के ग्रास होते हैं, मानो एक बालक प्रतिशत जीवित रहता है । सारे फ्रान्स के कार्य्यालयों की अन्वेषणा से प्रमाणित हुवा कि उन कार्य्यालयों में कार्य्यासक्त स्त्रियों की सन्तान की मृत्यु प्रतिशत ७० है ॥

## हुक्का और चुरट की तुलना ॥

चुरट दो प्रकार के होते हैं, सिग्रेट और सिगार । सिग्रेट वह है जिस में तम्बाकू एक कागज़ में लपेटा हुआ होता है उसी में एक और आग लगाकर पीते हैं । सिगार तम्बाकू के पत्ते तहबतह बहुत से लपेटे हुये होते हैं । और उसके अतिरिक्त एक पाइप होता है । तम्बाकू के स्थान में छोटी सी चिलम में रख कर उसे आग लगा

दी जाती है, और मुख में लेकर पीते हैं। यही दांतों में पकड़ा हुवा प्राय: अंग्रेजों के मुख में देखा होगा। ये दोनों तम्बाकू पीने की विलायती विधि है। देशी रीति एक हुक्का द्वारा होती है, उसको नरेरा, गुड़गुड़ी, हुक्का इत्यादि कहते हैं। प्रत्येक दशा में एक पानी से पूरित वर्त्तन नीचे होता है। जिस में से होकर धूम मुख में पहुंचता है। कोई लोग केवल चिलम भी पीते हैं, जो की विधि पाईप से मिलती है। परन्तु वह भी चिलम के मुख को गीले वस्त्र से लपेट लेते हैं। तम्बाकू पीने की देशी और विदेशी रीतियों की तुलना करते हुये निश्चय से यह कहना पड़ता है कि देशी रीति विलायती से अधिक उत्तम है। यों तो तम्बाकू पीना किसी दशा में भी उपयोगी नहीं है, परन्तु जो अज्ञानी उन्मत्त किसी की बात नहीं सुनते, उनको अधिक दोषों में से अल्प दोष की शिक्षा दे दी जाती है। हुक्का और चुरट दोनों निषिद्ध हैं, किन्तु तुलना से चुरट अधिक हानिकारक है। हम अपने देशी युवकों के वास्ते खेद प्रकट करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकते, जो हुक्का पीने की खराबी का आरम्भ करके भी उससे अधिक निकृष्ट ( अंग्रेजों ) की पद्धति पर चलने लग जाते हैं। जिस प्रकार मद्य पान प्रत्येक दशा में वर्जित है, परन्तु उसका निरन्न आमाशय में पान करना, प्रथम करेला और दूसरा नीम चढ़ा, वाली हालत है। इसी प्रकार तम्बाकू और फिर चुरट पीने की दशा है। विलायत के डाक्टरी मासिक पत्र में एक समय लिखा था कि तम्बाकू का विष नीकोटीन, सिगार सिग्रेट और पाइप के द्वारा विशेष प्रभावशाली होता है। और है भी सत्य, जैसा कि ऊपर कहा गया है। नीकोटीन विष जल में हलका हो जाता है। बस! हुक्का में जब तम्बाकू पिया जावे तो उस का धूम्र पानी में मिलकर नीकोटीन के अधिक भाग को उस में मिला देता है। यद्यपि एक डाक्टर ने अनुभव किया है कि नीकोटीन

धूम में नहीं पाया जाता, परन्तु कोई प्रमाण नहीं है, कि न हो। पानी एक दो चिलम के पश्चात् ही विषयुक्त दुर्गन्धित और सड़ जाता है। एक महाशय लिखते हैं "चुरट पीना, क्षय और राज, यक्ष्मा के वास्ते खुला द्वार है, यदि हमारी बात पर विश्वास न हो तो किसी चुरट पीने वाले को जो नित्यप्रति चुरट पीने का व्यसनी हो गया है देखो तो आप को ये चिन्ह थोड़े वा विशेष अवश्य दृष्टि पड़ेंगे। जिन का वृद्धिप्राप्त करना क्षय रोग में प्रवृति कराता है। मुख पीतता, नेत्र का गड़ जाना, अल्प और फटी हुई दृष्टि किसी कार्य्य को करते समय, अथवा गाने के समय हांपनी चढ़ जाना, और शुष्क कास, हुक्का का धूम शुष्कोष्ण है। पानी के साथ संयोजना होने से इस की शुष्कोष्णता बहुत घट जाती है। एक डाक्टर लिखता है कि चुरट नोशी हमारे देश के नव युवकों को नष्ट कर रही है, सिग्रेट पीने के सम्बन्ध में भी डाक्टरों ने विशेष शिक्षायें की हैं। डाक्टर मर साहिब ने उन शिष्यों में जो सिग्रेट पीते थे, संखिया की पुरानी विष योजना के लक्षण पाये। और सिग्रेटों के पैकटों को देख कर भी उस से संखिया के चिन्ह पाये। सुना गया है कि धूम श्वेत बनाने से वास्ते और सामान्य तम्बाकू के वैषिक प्रभाव को बढ़ाने के लिये प्रायः संखियादि सम्मेलन किया जाता है, जो इस बात का प्रमाण और है कि चुरट पीना नेत्रों को भी नष्ट करेगा। डाक्टर विज्ञप्ति देते हैं कि यदि पाईप पिया जावे, तो उस की नलिका में रुई रख देना चाहिये, ताकि धूम को कुछ न कुछ साफ करे। क्यों न गीला वस्त्र ही रक्खा जावे। दूसरे डाक्टर महाशय फरमाते हैं कि पाईप में तम्बाकू रख कर और ऊपर अग्नि प्रज्वलित करके पीना उत्तम नहीं है। पीते २ तम्बाकू की ऊपर की तह का सम्पूर्ण विष नीचे की तह में लगता जाता है, और अन्तिम घूंट के समय कटु और विस्वाद ज्ञात होता है। यह चाहिये कि थोड़ा सा तम्बाकू रख कर पश्चात् उसको जलावें,

और उस पर और तम्बाकू रख कर पीवें, क्यों कि इस चातुर्य्य रहित पीने में कण्ठ, जिव्हा, और स्नायुजाल की हानि होती है ॥

## धूम्रपान ॥

हुक्का पान का संस्कृतानुवाद धूम्रपान किया जाता है, धूम्र पान के अर्थ धूआं पीना है, वा धूआं लेना है, और यह औषधियों का धूम बहुधा रोगों के नष्ट करने को उपयुक्त था। सुश्रुत के चिकित्सा-स्थान अध्याय ४० में, चरक सूत्रस्थान अध्याय ६, और वाग्भट के २१ वें अध्याय में इस का पूर्णतया वर्णन है। यथाहि संक्षेपतः धूम्र-पान ५ प्रकार का है ॥

**प्रायोगिक**—इलायची, बालछड़ादि सुगन्धित पदार्थों की थोड़ी चिकनाई से बत्ती बना कर नासिका द्वारा शिर और चैलादि रोगों की निवृत्ति के लिये पीना ॥

**स्नेहन**—बादाम की तरह की गुलियां, मोम, राल, गूगल में चरबी वा घृत मिला कर बत्ती बना कर मुख नासिका द्वारा वातज व्याधि निवृत्यर्थ देना ॥

**विरेचन**—वच, हरताल, मनःशिला, अगूरु आदि औषधियां जो मस्तिष्क का शोधन करती हैं, उन की बत्ती से लिप्तकफ निवृत्त्यर्थ नासिका द्वारा धूम्रपान करना ॥

**कासघ्न**—त्रिकुटा, कसौंदी, कटेरी, धतूरा आदि औषधी जो कास को दूर करती हैं, उन की बत्ती मुख द्वारा लेना।

स्मरण रहे कि धतूरे को कास, श्वास के वास्ते पान करना सब से प्रथम वैद्यों ने आविष्कृत किया। अब चुरट भी श्वास की निवृत्ति के लिये बनने लगे हैं।

**वामनीय**—चर्म, केशादि ग्लानिकारक औषधियों का धूम वमन लाने के वास्ते भी पान किया जाता है।

इन पाचों प्रकार के धूमपान की विधियां भी पृथक् २ हैं। हम उन का पूर्णतया वर्णन यहां नहीं कर सके हैं। केवल इतना लिखते हैं कि वे लोग, जो कहते हैं, कि धूमपान अर्थात् हुक्का पीना सुश्रुत में भी लिखा है, गलती पर हैं। पुरानी पुस्तकों में तम्बाकू का कहीं वर्णन भी नहीं है, क्योंकि वह उस समय न था।

## व्याधियां सब इसी की हैं।

कोई लोग कहा करते हैं, कि हम छोड़ नहीं सकते, जो आनन्द आता है, वह तो एक ओर रहा, अतिरिक्त इस के कई व्याधियां उपस्थित हो जाती हैं। आनन्द की बाबत तो केवल इतना कह देते हैं कि किसी ऐसे मनुष्य को दो तीन घूंट देदो कि जिस ने कभी नशा न पिया हो, पस! मजा आजावेगा, और इस के अतिरिक्त जो व्याधियां उत्पन्न होती हैं, वह भी इस की उत्पन्न की हुई हैं। सब मादक द्रव्य शरीर के भीतर परिवर्तन के उत्पादक हैं। और कई रोग उत्पन्न करते हैं, जो कि इस के नशा में आच्छादित रहते हैं, और छोड़ने से प्रकाशित होते हैं। परन्तु जिस प्रकार स्वभाव से वह उत्पन्न हुई थीं उसी प्रकार वह त्याग करने के स्वभाव से जाती रहती हैं। और प्रतिदिन नये रोगों की उत्पत्ति से मनुष्य बच जाता है। कोई ऐसे अज्ञामन्ध हैं कि जब उन्हें हुक्का छोड़ने के वास्ते कहा जावे तो जवाब देते हैं, कि जी! तम्बाकू बनाया किस वास्ते गया है, और उन से कोई पूछे कि प्रत्येक बूटी पीने ही के वास्ते बनाई गई है। तम्बाकू के बहुत से वैद्यक सम्बन्धी लाभ हैं। और उन के वास्ते यह बनाया गया है, न कि तुम्हारी अक्ल और होश गवाने के वास्ते॥

चरक अध्याय प्रथम में लिखा है "कि माता पिता, बड़े बूढ़ों का अपमान, और जानते हुये भी अयोग्य कार्य्य करना, विशेषतः मादक द्रव्य, या दमा करने वाले और मस्तिष्क हानिकर पदार्थों का प्रयोग करना सर्वथा त्यागदें, लोग अपने प्रयोजन की कस घड़ लेते हैं॥

## देखिये

हुक्का हुक्म खुदायदा, टोपी नाम रसूल।
ढग्गा बच्छा बेच कर हुक्का लेहू जरूर।
हुक्का हरि का लाडला, रक्खे सब का मान।
भरी सभा में यों फिरे, जों गोपिन में कान।
हुक्का हुक्म खुदायदा, अक्ल फिक्रदा यार।
हुक्के बाझू नानका, धिक जीवन संसार।

आनन्द तो यह है कि इन स्वार्थी तुक्कों को तो प्रत्येक सुनता है और प्रयोजन की बात कोई नहीं सुनता। सत्य है शैतान की तरफ़ दुनिया जल्द खिंची जाती है। सब बातों का उत्तर एक पंजाबी कवि ने अच्छा दिया है। परन्तु अफसोस कि पंजाबी कविता यहां लिखना व्यर्थ है, देखिये क्या अच्छा लिखता है।

"चबल हुक्के दी एही खट्टी आना रोज तम्बाकू चट्टी।
भावें बिकदा होवे बट्टी, अट्टी बेच मंगाया।
कुत्ता हग्गे जेड़ी जा, हुक्के वाला पानी पा।
ओथे कुत्ता कदे न आया, एह भी राकम ने अजमाया।

भावप्रकाश थोड़े समय की पुस्तक है, परन्तु हुक्का पीना उस समय भी प्रचलित नहीं हुआ होगा, क्योंकि उस में भी कहीं इस के सम्बन्ध में वर्णन नहीं है। भावप्रकाश में प्रत्येक धूम के सम्बन्ध में यों लिखा है " धूम तत्काल कफ और नजला को उत्पन्न करता है, और नेत्रों के वास्ते बहुत हानिकारक है, शिर में पीड़ा और भारी करता है, वायु और पित्त को दूषित करता है। इसी प्रकार धूम के विरुद्ध सुश्रुत आदि में भी लिखा है॥

## हुक्का की एक विशेष हानि।

हुक्का और चुरट की तुलना करते हुये, हमने हुक्का को चुरट की अपेक्षा

उत्तमता दी है, परन्तु हुक्का में भी एक विशेष बुराई है, जिस का ध्यान रखना आवश्यक है। सुश्रत निदान अध्याय में लिखा है, "संभोग करने से शरीर से शरीर मिलने से एक का श्वास दूसरे के मुख में जाने से, इकट्ठे खाने से, इकट्ठे सोने से, इकट्ठे रहने बैठने से, दूसरे के पहले पसीना आदि से भरे कपड़े पहनने से, दूसरे का लगा चन्दन लगाने से छूत रोग प्रसरित हो जाते हैं। ज्वर, क्षयी, कास, नेत्ररोग, मरी प्लेग, विशूचिका, उपदेश, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेहादि बहुत से रोगों के प्रसार का यह बड़ा कारण है ॥

एक महाशय ने अपनी आखों देखी अवस्था वर्णन की थी कि कुत्ते के काटे हुए के साथ कई मनुष्यों ने हुक्का पिया और वह सब के सब बावले हो गये। हुक्के की नलिका से एक दूसरे का श्वास, एक दूसरे का होठ, एक दूसरे का चेप, और थूक तक लगता है। बड़े २ पण्डित भी हुक्का की जूठ जूठ ही नहीं समझते हैं। मुसलमानों में तो खास कर इसका कुछ विचार ही नहीं है। प्रत्येक प्रकार के मनुष्य एक सभा में बैठ कर एक एक घूंट लेना आरम्भ कर देते हैं। हुक्का पीने वाले यदी हमरी शिक्षा न मानें, और हृदय और मास्तिष्क ही को नष्ट करना चाहें तो इतनी शिक्षा को अवश्य कार्य्य में बर्तें कि वह पृथक २ हुक्का रक्खा करें, ताकि हुक्के से उत्पन्न होने वाली व्याधियां पीछे न पड़ें किसी ने हिसाब लगाया था कि आज कल प्रत्येक बाबू ५०) रु० से कम प्रति वर्ष चुरट पर व्यय नहीं करता है।

## बालकों के वास्ते।

बालकों के वास्ते तम्बाकू विशेषतया हानिकारक है। हिन्दुस्तान के अतिरिक्त प्रायः सब देशों में बालकों के हाथ सिगरेट बिकवाने का निषेध है बालकों के मास्तिष्क में खलल आजाता है। उन की उन्नति में रुकावट हो जाती है। उन के पेठ निर्बल और हृदय निर्बल हो जाता

है विलायत में कई यूनिवर्सिटियों ने सरक्यूलर प्रचलित कर दिये हैं कि तम्बाकू पीने वाले लड़के कालिजों से निकाल दिये जायंगे आस्ट्रिया, यूनाइटिडस्टेट, कनैडा आदि देशों में लड़कों के वास्ते सर्बथा निषेध है। एक प्रोफेसर महाशय ने अपने शिष्यों उनकी योग्यता के अनुसार चार कक्षा में विभक्त किये। तत्पश्चात् अन्वेषण से ज्ञात हुवा कि प्रथम कक्षा के विद्यार्थियों में तम्बाकू पीने वाला कोई न था। और चौथी कक्षा के विद्यार्थी प्रायः सब तम्बाकू पिया करते थे। अमेरिका के एक सरकारी मदरसे में जो लड़के पढ़ते थे वे लड़कियों की अपेक्षा अधिक निकृष्ट पाये गये। इस पर तम्बाकू पीने के विषय में अधिक अन्वेषण किया गया, और कई मास पर्यन्त २६ विद्यार्थियों को १० परीक्षकों के निरीक्षण में रक्खा गया। ज्ञात हुवा कि उन में से १० की स्मरण शक्ति बहुत ही खराब है, १२ की खराब और चार की मध्यम अवस्था में है। परन्तु किसी की भी स्मरण शक्ति अच्छी कहलाने योग्य नहीं, स्वास्थ्य भी सबका ठीक नहीं था।

सन् १७६२ ई० में नैपोलियन की आज्ञा से स्कूलों और कालिजों की परीक्षा की गई, तो ज्ञात हुआ कि जो विद्यार्थी तम्बाकू पीते थे उन के स्वाभाव और योग्यता उन विद्यार्थियों से बहुत ही कम थी, जो इस को न पीते थे।

अमेरिका के बहरी स्कूल में जो प्रभाव तम्बाकू के पड़े, वे एक कमीशन ने अपनी रिपोट में यों लिखा है "अङ्गों और शक्तियों की निर्बलता, पाचन शक्ति में अन्तर, स्नायुजाल पर कुप्रभाव पड़ता है, शिर पीड़ा और विचार संकीर्णता, स्मरण शक्ति में हानि, और ध्यान में विघ्न, अजीर्ण, धड़कन, कम्प, विकलता, निद्रानाश, मस्तिष्क, में अस्थिरता, आदि।

अमेरिका में ओलडाबर्ड के पारितोषिक नियत हैं। कहते हैं कि

उन को लेने वाले ६० वर्ष से आज तक कोई विद्यार्थी ऐसा नहीं हुआ, जो कि तम्बाकू पीता हो ॥

विलियम्ज़ कालिज के प्रोफेसर ने अपने विद्यार्थियों को कैसा अच्छा कहा था "स्मरण रक्खो कि तम्बाकू के उपयोग का मस्तिष्क पर वह कुप्रभाव पड़ता है, कि हम उस का अनुमान नहीं कर सक्ते। मुझ को इतने दृष्टान्त स्मरण हैं कि बड़े २ जबरदस्त मनुष्य इस को व्यवहार में लाने से खाक में मिल गये हैं। अतः........मैं तुम को प्रार्थना कर शिक्षा देता हूं, कि तुम लोग जो गवर्नमैन्ट और देश के सेवक बनने वाले हो, कदापि इस आग के सर्प को मुंह मत लगाना ॥

## यूनिवर्सिटी ऑफ विसकिन्सन ॥

अमेरिका में एक डाक्टर ने विद्यार्थियों को उपदेश दिया, कि "मुझे अच्छी तरह निश्चय है, कि श्रमशीलता और सहनशीलता शक्ति तम्बाकू के व्यवहार से न्यून से न्यून ५ प्रतिशत घट जाती है। और कार्य्यशक्ति शरीर से नष्ट हो जाती है" ॥

डाक्टर बरवाय साहिब ने विद्यार्थियों पर तम्बाकू पीने का असर जानने के वास्ते ९ वर्ष से १५ वर्ष की आयु तक के १३८ लड़के ऐसे इकट्ठे किये, जो तम्बाकू के व्यसनी बनाये गये। उन में से २२ के रक्तभ्रमण में घटती हुई, और दिल धड़कने लगा। उन की पाचनशक्ति में अन्तर आया, उनकी बुद्धि स्थूल हो गई, और उन को मद्य पीने लालसा हुई। १३ लड़कों की नाड़ी की गति में अन्तर पड़ा। ८ लड़कों में रक्तपरमाणु कम हो गये। १२ लड़कों की नास से रक्त बहने लगा। ४ लड़कों के मुख में घाव हुवा। एक क्षयी रोग में ग्रस्त हुवा। अवशिष्ट में से किसी ने भयंकर स्वप्न और किसी ने कुस्वप्नादि की शिकायत की। और यह बात विशेषतः

स्मरणीय है, कि उन में जितने ही अल्पायु थे उतना ही उन्हें अधिक असर हुआ । ११ लड़कों ने तम्बाकू छोड़ा, और ६ मास पश्चात् अपने अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त कर लिया । अवशिष्ट जनों को लोहसार और कुनैन आदि देते रहने पर भी वर्ष दिन में स्वास्थ्य लाभ न हुआ । एक मशहूर डाक्टर लिखता है, कि निम्नलिखित व्याधियां हुक्का पीने से होती हैं "रक्त विशेष पतला हो जाता है, और रुधिर का रक्त भाग घट जाता है, उदर में निर्बलता होती है, और बहुधा वमन करने को मन करता है, गले की घण्टोली फूट उठती है, और गले के भीतर का चर्म लाल होकर शुष्क हो जाता है, और कुछ चर्म गिर भी जाता है, हृदय निर्बल हो जाता है, और इस की गति में अन्तर पड़ जाता है, फुफ्फुस के भीतर खुजली हो कर कास का आना आरम्भ हो जाता है, आंखों की पुतलियां बहुत प्रथित हो जाती हैं, और धुन्धला सा दृष्टि आने लगता है, कानों में सीटी वा घन्टे की आवाज़ आने लगती है" ॥

एडिथइरमेज़ साहिब ने "गुड हेल्थ" में—"बालकों पर तम्बाकू का असर" पर एक निबन्ध लिखा था । उस का सम्पूर्ण अनुवाद तो लम्बा है, बहुत ही संक्षिप्त यह है, कि "तम्बाकू से विद्यार्थी निर्बल हो जाता है, उस का हृदय निर्बल और श्वास छोटा होता है । बालक जो आरोग्य रहना चाहते हैं, उन को तम्बाकू पीना उचित नहीं है । एक सिगार में इतना विष होता है कि यदि उस को निकाल कर दो मनुष्यों को दिया जावे, तो मार देगा, यदि वे उसके व्यसनी न हों । यह मारक विष बालक क्यों चूसते हैं? आमाशय अन्नपाचन नहीं कर सक्ता । रक्त पतला, निर्बल और पानी का सा हो जाता है । सब से प्रथम तम्बाकू से हृदयगति बढ़ती है, थोड़े समय पश्चात् यह श्रान्त हो जाती है, और हृदय निर्बल हो जाता है । हृदयगति रक्त को शरीर के प्रत्येक अंग में पहुंचाने के लिये पर्य्याप्त होता है । रक्त और हृदय के

निर्बल होने से फिर मस्तिष्क निर्बल होता चला जाता है, क्योंकि सब रक्त का ⅕ भाग केवल मस्तिष्क के वास्ते आवश्यक है। तम्बाकू से पट्ठे भी निर्बल हो जाते हैं। तम्बाकू पीने वाला शीघ्रता से सोच नहीं सक्ता और स्मरणशक्ति निर्बल हो जाती है। नेत्रों के पट्ठे निर्बल हो जाते हैं, दृष्टि निर्बल और धुन्धली हो जाती है। एक बड़ा डाक्टर लिखता है, कि ३७ अन्धों में से जो कि नेत्रों के पट्ठों के निर्बल होने से मेरे समीप आये, २३ केवल तम्बाकू की कृपा से अन्धे हुये थे। तम्बाकू से गला जलता है। मुख के भीतर की सतह ऐसी कठिन हो जाती है कि साधारण वस्तु का स्वाद ही नहीं आता है, और तीक्ष्ण मसाले तथा मादक द्रव्य, एवं मद्यादिपान की आवश्यकता अनुभव होती है। मद्यपान और तम्बाकू पीने का अटूट सम्बन्ध समझा जाता है। शराबी को आप प्रथम हुक्का पीने वाला अवश्य पाओगे। श्वास से गन्ध आता है, हाथ और वस्त्र से भी गन्ध आने लगता है ॥

## तम्बाकू से हानि और डाक्टरों की सम्मतियें ॥

उपर्युक्त तम्बाकू के विषय में सारा निबन्ध जिन्हों ने पढ़ लिया है, वे समझ सक्ते हैं कि तम्बाकू मुख, कण्ठ, फुप्फुस, हृदय, आमाशय, मस्तिष्क को विशेष रीति से हानिकारक है। तम्बाकू पान से जो जो व्याधियां उत्पन्न होती हैं, उन के सम्बन्ध में जितनी डाक्टरों की सम्मतियों का मैंने सञ्चय किया है, सब को यदि लिखा जावे तो एक बड़ी पुस्तक बन जावे। तम्बाकू की इतनी अधिक प्रथा है कि इस की हानियां जितनी भी वार बताई जावें, आशा है कि प्रभाव डालेंगी, और सम्भव है, कि लोग छोड़ते जावें। अत: सब अंग्रेज़ी डाक्टरों की सम्मतियों को तो नहीं लिखता हूं, हां! बड़े २ डाक्टर जिस २ रोग के होने की अनुमति करते हैं, उन को संक्षेपतः नीचे वर्णन करता हूं ॥

**मिस्टर अल्बर्टमक्स साहिब**—तम्बाकू स्मरणशक्ति को बहुत नष्ट कर देता है ॥

**डाक्टर गोरगास**—तम्बाकू विचारों में शिथिलता उत्पन्न करता है ॥

**डाक्टर सोल**—तम्बाकू स्नायुजाल में उष्णता कर उन में संचलन उत्पन्न कर देता है, और थोड़े समय पश्चात् अत्यन्त निर्बल बना देता है ॥

**मिस्टर अल्वर्टसिम्सन**—तम्बाकू पीने से स्मरणशक्ति अत्यन्त भयास्पद हो जाती है ॥

**डाक्टर रिचर्डसन्**—यदि तम्बाकू पीने वाले की तम्बाकू पीने वाली ही से शादी हो, तो एक दो पीढ़ी के भीतर सन्तान न शारीरिक अवस्था से मानुषी सन्तति कहला सकेगी, और न मस्तिष्क और बुद्धि की अवस्था से । तम्बाकू पीने वाले मां बाप से सन्तति में इतने जर्म्ज़ ( सूक्ष्मकृमि ) प्रविष्ट हो जाते हैं कि वास्तविक स्वास्थ्य कभी इन को प्राप्त नहीं होता ॥

**डाक्टर विलियमहेमण्ड**—तम्बाकू नवयुवकों की शारीरिक पूर्त्ति और डीलडौल को सर्वथा नष्ट कर देता है ॥

**डाक्टर क्रूयर**—मैंने कोई पुरुष न देखा कि जिस के माता पिता तम्बाकू पीते हैं, और उस के पट्ठे और बुद्धि निर्बल न हो ॥

**डाक्टर बरनार्ड**—तम्बाकू पीने से न्युरलजिया ( स्नायुतोद ) कुस्वप्नता और मस्तिष्क की निर्बलता हो जाती है ॥

**डाक्टर गोरगास**—हृदयाघात, शरीरशक्ति का घटना, हृदय की निर्बलता, दृष्टि दोष, तथा अजीर्ण आदि रोग हो जाते हैं ॥

**डाक्टर जॉन**—शाही शफ़ाख़ाना अमराज़चश्म में मुझ को अच्छी तरह ज्ञात हो गया है कि तम्बाकू से बढ़ कर दृष्टि का कोई दुश्मन और नष्ट करने वाला नहीं है ॥

**डाक्टर पैलडक**—तम्बाकू हृदय और मस्तिष्क के वास्ते प्राण-हर विष है ॥

**डाक्टर टेलर**—हृदय और मतिष्क पर कुप्रभाव पड़ता है, हृदय रोग, सन्यास, और अपस्मार आदि रोग बहुधा होते हैं।

**अल्बर्ट स्मिथ**—अमेरिका में इस समय ७ लक्ष पागल हैं, जिनमें ५ सहस्र केवल तम्बाकू के प्रभाव से हैं, न्यूयार्क के जलखाने में ६०० मनुष्य केवल मद्य पीकर उन्मत्तता में निगृहीत हैं। ५०० ने शपथ पूर्वक कहा, कि उनकी यह दशा तम्बाकू पीने से हुई। तम्बाकू पीने से मस्तिष्क, नेत्र और कानों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

**डाक्टर इबराहमस्पेर**—संन्यास और अपस्मार रोग तम्बाकू के परिणाम हैं।

**डाक्टर जानबार्न**—जितने रोगी मेरे समीप आये जिन की जिव्हा और ओष्ठ में सरतान (असाध्य घाव) था, वे सब तम्बाकू पीते थे।

**डाक्टर नाक्स**—अमेरिका की सेना से जितने सैनिक हृदय रोग के कारण सैन्य कर्म्म से पृथक् किये गये, वे तम्बाकू पीने वाले थे।

**डाक्टर चमल**—नवयुवको! देखना! तम्बाकू को हाथ मत लगाना अन्यथा जीवन कष्टमय होजावेगा। और, जीवित अवस्था में ही मृतप्राय होजाओगे।

**डाक्टर विलियम पारकर**—तम्बाकू पीने वाला यदि रोगी होजावे तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सक्ता है, और वे सांक्रामिक रोगियों की अपेक्षा भी शीघ्र मृत्यु के ग्रास होते हैं। इन को सन्यास और अपस्मार भी बहुधा होते है। और यही दशा उन पुरुषों की है जो इस को खाते है।

**डाक्टर साल**—अपस्मार के कारणों में से तम्बाकू पीना एक बड़ा कारण है ।

**डाक्टर चार्लस**—तम्बाकू खाना और पीना अपस्मार और सन्यास के बड़े भारी कारण है ।

**डाक्टर हेग**—तम्बाकू ही अपस्मार का भयानक निदान है, और स्नायुजाल सम्बन्धी रोगों का तो मूल है ।

**डाक्टर रश**—तम्बाकू से स्वर इतना ककर्श होजाता है कि गायक जन इस को विष से कम नहीं मानते हैं ।

**डाक्टर से**—तम्बाकू स्वर माधुर्य्य को नष्ट करता है ।

**डाक्टर अलमन**—तम्बाकू स्नायु जाल और दूसरे अङ्ग और शक्तियों पर और स्वर पर भी आक्रमण करता है ॥

**डाक्टर रोडवर्ड**—हकीमों को सहस्रों रोगी ऐसे मिलते हैं जो तम्बाकू व्यवहार में लाते हैं, और नित्य अजीर्ण में ग्रस्त रहते हैं ॥

**डाक्टर हाथार्न**—तम्बाकू पीने वालों और खाने वालों के रुपरंग के मुरझा जाने और गन्दे होने का कारण यह है कि पित्ता ( कलेजा ) अपने कार्य्य में शिथिल होजाता है ।

**मिस डैक्सन**—जितने उन्मतों की मैंने चिकित्सा वह तम्बाकू के कारण ही उन्मादी थे ।

**डाक्टर हैम्फरे**—क्या कोई मनुष्य तम्बाकू की कभी प्रशंसा कर सक्ता है ? जिस पर पशु भी मुखाक्षेप नहीं करते, जिस में कुछ पोषक तत्त्व नहीं, जिस से मनुष्य स्वयम् घृणा करता है, जिस से मस्तिष्क में मूढ़ता समा जाती है, जिस से शरीर प्राणघातक रोगों के लिये उपजाऊ बन जाता है ॥

**आल्योर् डबल्यू होम्ज़**—ऐ नवयुवको ! मैं तुम को कदापि यह सम्मति नहीं देता कि तुम अपने जीवन पुष्पों को धुआं से अपवित्र करो । मैं तुमको निश्चय दिलाता हूं, कि तम्बाकू का धुआं

इतना चिरस्थायी प्रभाव हृदय पर डालता है, जो तुम्हारे अनुमान से भी परे है।

**कूपर साहिब**—ऐ तम्बाकू ! तेरी उत्कट दुर्गन्ध के प्रभाव से स्त्रियां भी जिन के कि सङ्ग के लिये मनुष्य को सभ्य बनना आवश्यक है, हम से घृणा कर के घंटों के वास्ते दूर चली जाती हैं। तम्बाकू वस्तुतः विष है, जिस की आवश्यकता केवल बागवानों ( वाटिका रक्षकों ) को वृक्ष घातक कृमियों के मारने के लिये होता है ॥

**बादशाह जेम्जअव्वल**—ताम्रकूट नेत्रों के लिये हानिकर है। नाक का उस की गन्ध बुरी मालूम होती है। मस्तिष्क और फुफ्फुस को इस से अत्यन्त हानि प्राप्त होती है ॥

**डाक्टर ब्रोडे साहिब**—अधिक परिश्रम करने वाले मजदूरों को तम्बाकू की अल्पमात्रा तो कुछ हानि नहीं करती, परन्तु आधिक्य उनको भी अवश्य हानिकर है।

**डाक्टर ब्लेक साहिब**—तम्बाकू पीने से ओष्ठ फट जाते हैं। नसों को इस के धूम का प्रभाव निर्बल कर देता है। हृदय निर्बल हो जाता है। और अस्वस्थ मनुष्य को तो विशेष हानि होती ॥

**रैवरेण्ड अवारम्लर**—सिगरेट मस्तिष्क को हानि करते हैं, सन्तान आलसी शिथिल और मूर्ख होजाती है, कई लड़के सिगरेट पान से उन्मादी होगये। पुरुषत्व भी नष्ट होजाता है। हृदय की गति को भी सिगरेट घटाते हैं। यह हृदय को दग्ध करती है और सर्वाङ्ग के लिये हानिकर है। तम्बाकू पीने वाला विद्यार्थी सहाध्यायियों के साथ नहीं चल सकता।

**एक लायक डाक्टर**—चुरट पीना हमारे देश के नवयुवकों को नष्ट कर रहा है। इङ्गलिस्तान में एक मनुष्य ने प्रकाशित किया कि उसने गत तीन वर्षों में इतने सिगरेट पिये हैं, कि यदि उन को लम्बायमान कियाजावे तो २३ मील की लम्बाई होगी । ८ लक्ष

सिगरेट उसने पिये, और बहुत हानि देखकर उसी क्षण त्याग कर दिये।

**डाक्टर एकार्टनर**—तम्बाकू पीने से न केवल पाचन शक्ति और दृष्टि को हानि होती है, और स्मरण शक्ति निर्बल होजाती है, अपितु बधिरता भी प्रायः इसी का परिणाम है।

**एक हास्पिटल असिस्टेण्ट**—२ अक्टूबर सन् १९०५ ई० को एक यूरेशियन साहिब अम्बाला सिविल अस्पताल में सिविल सरजन साहिब के समीप अपने एक अनोखे रोग के निदान और चिकित्सा के वास्ते आये। रोग उन को यह था कि वह प्रत्येक वस्तु का अर्द्ध भाग दृष्टिगत कर सक्ते थे। पूछने पर सिगरेट ही इस के कारण निश्चित हुवे। "मटीरिया मेडिका" में लिखा है कि तम्बाकू पान से ओपटिक नर्व की अट्रोफी होजाती है, अर्थात् दृष्टि की नसें शुष्क होजाती हैं; किन्तु ऐसी अवस्था प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होती है।

**डाक्टर विण्ट्रास**—तम्बाकू पान तृषा वर्द्धक है, पाचन शक्ति नाशक और आध्मान, अजीर्ण, करता है।

**मिस्टर फ्रेंकसूरन**—आगामी सन्तति पर सिगरेट पीने के कारण एक ऐसी आपत्ति अवतीर्ण होने वाली है, जो मद्यपान की आपत्ति से दो हाथ बढ़ी हुई होगी॥

**एक डाक्टर**—जब बोयरों और अंग्रेजों में युद्ध हुवा तो ज़िला मान्चेस्टर में ११ सहस्र मनुष्यों ने वालन्टीयर बन कर युद्ध में जाना चाहा। उन में से ८ सहस्र को डाक्टरों ने देखते ही अस्वीकृत किया। और १२ शत नवयुवक स्वीकृत हुये। अस्वीकृतों में सब के सब ऐसे पुरुष थे, जिन्हों ने कि बाल्यावस्था से तम्बाकू पीने से शरीर की शक्तियां नष्ट की हुई थीं॥

**मिस्टर सोरन**—बालक देश और जाति की सर्वोत्कृष्ट भूमि है, उन को सिगरेट पान में ज़रा उत्तेजित करो तो वह निकम्मे नीच और

अधम हो जावेंगे, बरतानिया में लाखों लड़के सिगरेट पीने के व्यसनी हैं, और देश के प्रबन्धकर्त्ता डाक्टरों और मास्टरों की सम्मति है कि यह बुरा व्यसन जातिविनाश का कारण है ॥

**मेजर जनरल बेडन**—सिगरेट पीने वाले मूर्ख और ज्ञान के अन्धे हैं ॥

**सरविलियम ग्रोडेण्ट**—बालकों की पाचनशक्ति, हृदय, मस्तिष्क और स्नायुजाल को तम्बाकू अत्यन्त हानिकर है। बाल्यावस्था में तम्बाकू पान से बाल्यावस्था के कई व्यसन उत्पन्न हो जाते हैं ॥

**सर हेनरी लिटलजान**—पाचनशक्ति और दन्त नष्ट होते हैं, मुख ओष्ठ, और ग्रन्थियों पर कुप्रभाव पड़ता है ॥

**डाक्टर एण्ड्यूविल्सन्**—तम्बाकू पान एक अत्यन्त निकृष्ट व्यसन है क्योंकि वह शरीर को बहुत हानि पहुंचाता है ॥

**हैडमास्टर मदरसा चेम्फोर्ड**—तम्बाकू पीने वाला विद्यार्थी साधारण विद्यार्थियों से बहुत ही निकम्मा होता है, वह कक्षा में नीचा निर्बुद्धि, धृष्ट और मूर्ख होता है ॥

**हैडमास्टर सेण्टपिटर स्कूल**—सिगरेट पीने वाले विद्यार्थी कपटी होते हैं, वह पाठशालाओं के खेलों से जी चुराते हैं, क्योंकि उन में साहस और पुरुषत्व नहीं होता है ॥

**मिस्टर नोवल**—जो प्रसिद्ध किरकिट खेलने वाला है "मेरे गेंद फेंकने ( बौल देने ) की लोक प्रशंसा करते हैं। ठीक गेंद फेंकने के लिये तीक्ष्णदृष्टि और बलवान् पट्ठों की आवश्यकता है। मुझ में यह दोनों गुण हैं, क्योंकि मैंने तम्बाकू कभी नहीं पिया ॥

**सररिचर्ड वलंग**—( अफसर कारखाना जात इंजिनियरी बरंघम) "यदि मुझे ज्ञात हो जावे कि अमुक लड़का तम्बाकू पीता है तो मैं उस को अपने कार्य्यालय में नौकर ही न रक्खूं ॥

**टाम्स गेल्द आर. जी. बी.**-(जो बैलफास्ट में सिगरेट के बड़े कारखानेदार हैं ) "इस देश के लोगों का स्वास्थ्य नष्ट करने के उत्तरदाता वह नवयुवक हैं, जो सिगरेट पीते हैं" ( और न तुम जो बेचते हो ? ) ( रचयिता ) ॥

**एक डाक्टर**—बालकों में तम्बाकू पीने की रीति बहुत से देशों में कानूनन वर्जित है, यथा ममालिके मुतह्हदा अमरीका, जापान, यूरुप के कतिपय देश, तसमानिया, ओण्टारिव, प्रिन्स एडवर्ड जज़ायर, न्यू बरंजूक, ब्रिटिश कोलम्बिया, केप टाउन, जज़ायर चम्बल इत्यादि ॥

**डाक्टर मकनामारने**--पारलीयामेण्ट में तम्बाकू बालकों के हाथ बेचना बुरा नियत करने के वास्ते एक कानून पेश किया हुवा है। जापान में यदि २० वर्ष से अल्प आयु का युवक तम्बाकू पीता देखा जावे तो पुलीस उसका हुक्का और तम्बाकू छीन लेती है। यदि माता पिता पिलावें तो दो रुपये जुरमाना होता है ॥

**मिस्टर मोदील कस्बा केन्ट** के तम्बाकू विक्रेता ने १६ वर्ष से अल्पायु के लड़कों के हाथ तम्बाकू बेचना बन्द करके इस विषय का अपनी दुकान पर एक विज्ञापन लगा दिया है। उसकी सम्मति है कि यदि कोई बालक ७ और ९ वर्ष की आयु में तम्बाकू पीता है, तो वह १४ वर्ष की आयु में अर्द्धोन्मत्त हो जाता है ॥

## स्त्रियों के लिये ॥

क्या स्त्रियों को हुक्का पीना चाहिये ? एक लेडी डाक्टर स्त्रियों के हुक्का पान के सुधार पर लिखती है "स्त्रियों के हुक्का पान के विरुद्ध सब से बढ़ कर प्रमाण यह है कि पुरुषों की अपेक्षा वह बहुत अधिक हुक्का पीने लग जाती हैं। जब एक बार यह व्यसन पड़ जाता है, पुनः उसको साधारण सीमा से भी बद्ध करना असंभव हो जाता है। यदि सामान्यावस्था से हुक्का पीना पुरुष के लिये

उपयोगी है, तो वही मात्रा नवयुवक के लिये अत्यन्त हानिकारक है। यदि एक पुरुष २४ घण्टे में १ दर्जन सिगरेट पिये, तो उनसे उसके स्वास्थ्य पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु जो नवायु स्त्री एक दिवस में छ सात सिगरेट पी जाती है, वह अपने शरीर को हानि पहुंचाती है। स्त्री का तो यह बड़ा भारी कर्त्तव्य है कि, वह अपने स्वास्थ्य की रक्षा करे, अर्थात् आगामी पौदे की अच्छी और सबला माता बने। जो स्त्री अधिक तम्बाकू पीती है वह अपनी शारीरिक शक्ति को नष्ट करके अपने आपको स्वस्थ और उत्तम माता बनने के अयोग्य बना देती है। हुक्का पीने के सम्बन्ध में स्त्रियां यह प्रमाण देती हैं कि, इस से गृह क्लेश, सोच और पट्ठों की निर्बलता दूर हो जाती है, परन्तु इस प्रयोजन से तम्बाकू पिया जावे तो इसका प्रभाव वैसा ही विषैला है, जैसाकि अफीम का होता है। सम्प्रति लोग कोष्ठबद्धता की प्रायः शिकायत करते हैं, जिसका कारण तम्बाकू पीना ही है। कोष्टबद्धता उच्च विचार वाली स्त्री के स्नायुजाल और सुन्दर स्त्री के सौन्दर्य्य को नष्ट कर देती है॥

यदि बहुत बचाव और साधारणता से तम्बाकू का उपयोग किया जावे तो इस से किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचती। परन्तु सामान्यता की सीमा क्या है? किसी समय दो सिगरेट ही स्त्री को हानि पहुंचा देते हैं। हुक्का पीने की यह शिकायत बहुधा पीछे पड़ जाती है, कि इस से बुद्धि सम्बन्धी और मस्तिष्क सम्बन्धी स्फूर्त्ति और शक्ति किसी सीमा तक शिथिल पड़ जाती है, और ध्यान को किसी स्थल पर दृढतया नहीं लगने देती। स्त्री का शारीरिक ढांचा पुरुष की अपेक्षा अधिक कोमल और अधिक नरम होता है, और बहुत ही शीघ्र नष्ट भ्रष्ट हो जाता है, अतः स्त्री को कदापि तम्बाकू पीना न चाहिये॥

यह एक प्राकृतिक नियम है कि स्त्रियां कोमल स्वभाव होने के

कारण तम्बाकू की दुर्गन्ध से घृणा करती हैं। अतः उत्तम स्वभाव वाली स्त्री चाय से प्रसन्न रहती है, और नवीन रहन सहन को ध्यान में लाती है। हुक्का पीना विशेषतः काम करने वाली और नीची कक्षा की स्त्रियों में पाया जाता है, जो सभ्यता से रहित हैं, और इस योग्य नहीं हैं, कि वे सबल उत्तम और तेजस्वी बालक उत्पन्न कर सकें ॥

अन्त में हम अमेरिका के एक डाक्टर की सम्मति नीचे लिख कर, हृदय तथा मस्तिष्कगत विकारों के वर्णन को समाप्त करते हैं। अमेरिका के एक डाक्टर का लेख पढ़ कर तो सचमुच सिगरेट को एक क्षण में त्याग देना चाहिये, और जो मनुष्य इस को पढ़ कर भी सिगरेट पीता रहे, तो वह महामूर्ख है। "चुरट में पांच वस्तुयें ऐसी सम्मिलित होती हैं, जो मनुष्य को शीघ्र मार देती हैं। ( १ ) तम्बाकू का तैल नीकोटीन। ( २ ) इस के कागज़ का अर्क जो इसके ऊपर लिपटा हुआ होता है। ( ३ ) संखिया जो इस प्रयोजन से मिला हुआ होता है कि धुआं श्वेत निकले। ( ४ ) शोरा जिस से यह दृष्टिगत होता है कि तम्बाकू गिर न पड़े। ( ५ ) अफ़यून ताकि पीते ही मस्तिष्क में प्रभाव पड़े ॥

प्रथम यह रक्त में जाड्योत्पादक हैं। द्वितीय आमाशय को निर्बल कर पाचनशक्ति नष्ट करता है। तृतीय हृदय की गति में अनियमता उत्पन्न करता है। चतुर्थ पञ्चेन्द्रिय को शनैः २ अकारथ कर देता है। पञ्चम मस्तिष्क में बहुत से मादे उत्पन्न कर देता है। षष्ट नसों और पट्ठों पर कुप्रभावोत्पादक है। सप्तम कण्ठ और नथनों में शुष्कता उत्पन्न कर देता है। अष्टम फुफ्फुस में ऐसा वाष्प उत्पन्न कर देता है कि जिससे नैत्यिक श्लेष्म का भय है ॥

॥ इति ॥

# शराब—अलकोहल-स्पिरिट

तम्बाकू से द्वितीयकक्षा में (यद्यपि हानियों में इस से कुछ बढ़कर) मद्यका राज्य है। इस लिये अब इसका वर्णन आरम्भ किया जाता है॥

**शराब**—अरबी में शरबत को कहते हैं। अंग्रेजी में इस के वास्ते (Wine) और हिन्दी में सुरा, मद्यादि नाम हैं। शराब में इसका शर आब (शरारत का पानी) बनाने वाला जो अंश है, उस का नाम अलकोहल है। जितना यह अधिक हो उतना ही वह मद्य तेज़ होता है। अल्कोहल खालिस भी निकालाजाता है। और दो औन्स बड़े कुत्ते को मार सक्ता है। स्पिरिट के अर्थ मद्य सत्व के हैं। यह अलकोहल ही होता है। इस में किसी तैल की भी मिलावट होती है। स्पिरिट मैथिलेटिड और रैक्टीफाइड दो प्रकार की प्रसिद्ध है, यद्यपि और प्रकार की भी होती है। मैथिलेटिड स्पिरिट जलाने के काम आती है। इसकी रोशनी या धूआं नहीं होता है। परन्तु आंच बड़ी तेज़ होती है। इसी वास्ते औषधियां बनाने में आंच इसी की देते हैं। इसी लिये प्रत्येक डाक्टर के गृह पर आप स्पिरिट लैम्प अवश्य देखेंगे। यह रोग़न करने के काम भी आता है। जो रोग़न इस में डाला जावे वह शीघ्र घुल जाता है, और पतला हो जाता है, उत्तमता से किया जा सकता है, और पुनः उसके धूप में शीघ्र शुष्क हो जाने के कारण रोग़न की हुई वस्तु जल्दी ही कार्य्य योग्य हो जाती है। रैक्टीफाइड स्पिरिट विशेषतः औषधियों के काम आती है। बहुधा पदार्थ इस में जल्दी घुल जाते हैं। कई सत्वादि इसी के द्वारा बनते हैं। ऐसे काम इसी से लिये जाते हैं। स्पिरिट पीने के काम नहीं आती है, क्योंकि निरन्तर अलकोहल होने के कारण हानिकर

बहुत है। अल्कोहल विष है, और विविध प्रकार की सुरा में विविध प्रकार से होता है। जितना जिस मद्य में यह अल्प है, उतना ही वह थोड़ा हानिकर है, और थोड़ा नशा लाने वाला है। इसी की अल्पता और अधिकता के कारण, तथा कई कार्य्यालयों के अपने २ पृथक् नाम होने के कारण कई प्रकार की शराबे होती हैं॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| रैक्टीफाइड सिर्पिट में | | ८४ फी सदी | अल्कोहल होता है। |
| मथ्रीलेटिड | ,, | ४९ | ,, |
| जिन शराब | ,, | २९ से ४० | ,, |
| बराण्डी शराब | ,, | ४८ से ५६ | ,, |
| व्हिस्की शराब | ,, | ४४ से ५० | ,, |
| रम | ,, | ४० से ५० | ,, |
| खजूर की शराब | ,, | ४० | ,, |
| शीरी | ,, | १४ से १२ | ,, |
| ट्रेरा शराब | ,, | ,, ,, | ,, |
| शम्पियन | ,, | १० से १३ | ,, |
| बीयर | ,, | ४ से ७ | ,, |
| कोमस* | ,, | १ से ३ | ,, |
| वानन्म आरशफाई | ,, | ३ से ५ | ,, |
| क्लीअर्ट † | ,, | ६ से ११ | ,, |
| काली बीअर | ,, | ४ से ६ | ,, |
| देशी शराब किस्म अव्वल | | ७५ | ,, |
| देशी शराब किस्म दोम | | ५० | ,, |
| देशी शराब किस्म सोम | | २५ | ,, |
| आम तेज़ शराबों में | | ५० | ,, |

* दुग्ध से बनती है। सब से कम अलकोहल निकलता है।
† लाल शराब।

## अल्कोहल ।

एक नशा उत्पन्न करने वाला अर्क है, जो कि पानी के बोझ से कम होता है । यह वृक्षों के छिलके आदि की सड़ान्द से उत्पन्न होता है । इस के तय्यार करने की विधि को यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है । Absolute alcohol अर्थात स्वच्छ अल्कोहल, जिस को ईथल हाइड्रोक्साइड कहते हैं, इस में एक प्रतिशत केवल पानी होता है, और ९९ प्रतिशत स्वच्छ शर्र आब अर्थात् नशा उत्पन्न करने वाला अर्क अल्कोहल होता है । अल्कोहल बेरंगत होता है, जमता 'हीं है, तेज़ जलता है । इस की सुगन्ध अच्छी लगती है, पर स्वाद कटु होता है । हवा में रखने से पानी को अपने में शुष्क कर लेता है, और पानी के साथ शीघ्र मिल जाता है । यह अत्यन्त विष है और जितनी इसने संसार में हानि की है, शायद ही किसी ने की हो । यद्यपि इस विष से तत्काल मृत्यु तो कम हुई हैं, और केवल मदात्यय रोग ही हो जाता है, परन्तु इस के सदा काम में लाने से जो बीसों रोग पुराने उत्पन्न हो जाते हैं, उन से मनुष्य के जीवन का शीघ्र ही अन्त आजाता है, उस की गणना कठिन है । शराब और अल्कोहल के अगणित लाभ भी हैं। जैसे कि संसार में कोई वस्तु व्यर्थ नहीं है, और जैसा कि मैंने वर्णन किया कि प्रत्येक विष उत्तम से उत्तम ओषधि है, यह भी एक प्रकार की ओषधि है । जब इस का व्यसन किया जावे और इस की अधिकता की जावे तो इस से बढ़ कर कोई हानिकारक वस्तु नहीं है । इतनी शराब कि जिस में ५ औन्स अल्कोहल हो, यदि कोई मनुष्य जो कि इस का व्यसनी न हो पीवे, तो मार डालती है । जिन शराब १० छटांक से मृत्यु-घटना हुई है, किन्तु पोर्ट जिस में अल्कोहल बहुत कम है २ बोतलें मार सक्ती हैं । किसी समय इतनी से भी मृत्यु नहीं होती है, केवल चिन्ह ही भयकारी होते हैं ॥

**लक्षण**—जिस को अल्कोहल दियाजावे वा मद्य अधिक पीजावे तो निम्नलिखित लक्षण प्रकट होते हैं । कई पशुओं को भी मद्य पिलाने से निम्नलिखित लक्षण प्रकट हुये:—"अचेतना, नशा, श्वास प्रश्वास का वेग, नाड़ी का तेज़ होना, आंख की पुतली का फैलना, पट्ठों का फड़कना, घबराहट, बेचैनी, सिर का चकराना, चीखना, चिल्लाना, पिछले पाओं का निर्बलादि हो जाना" । मनुष्य में प्राय: निम्नलिखित चिन्ह प्रकट होते हैं:—नशा, बकना, निष्कारण हंसना, निर्लज्जता, दृष्टि नैर्बल्य, लड़खड़ाहट, नाड़ी की तेज़ी, प्रस्वेद, मुख का लाल होना, अधखुली आंखें रहना, ( आंखों का खुमार ) वमन, ग्लानि, उबकाई, बिना इच्छा मूत्र और पुरीष का आना, सिर का चकराना, निद्राधिक्य, शिर पीड़ा, भोजन में अरुचि होना, और अधिक पान से सन्यासवत् अवस्था होना, मुख से श्लेष्मा का बहना, कण्ठ से खराटे की आवाज आना, अधिक पी गई हो तो २४ घण्टे के भीतर मृत्यु हो जाती है" ॥

**डाक्टर जेम्स डब्ल्यू हालेण्ड**—यों लिखते हैं "आरम्भ में ज्ञान नष्ट होता है, अल्कोहल की गन्ध उस के श्वास से ज्ञात होती है, और निम्नलिखित चिन्ह हो जाते हैं:—घबराहट, मुख पर लाली, पट्ठों पर जोश, और लड़खड़ाती हुई चाल, सिर का घूमना, व्यर्थ बकना, पट्ठों की निर्बलता, त्वचा का कठिन और शून्य होना, निद्रा से उठने के पश्चात् पुनः निद्रा, ग्लानि, वमन, शिर:पीड़ा का प्राय: होना, इत्यादि । बहुधा आंखों की पुतली फैली हुई, किन्तु सुकड़ी हुई । यदि नेत्र रोशनी सहन न करें तो यह शुभलक्षण है । १० छटांक व्हिस्की एक समय पी लेने से चन्द मिनट में कष्ट से मृत्यु हो जाती है । यदि मृत्यु शीघ्र न हो तो तत्पश्चात् सन्न्यास से वमन होना प्रारम्भ हो जाता है । और ऐसी हालत में प्राय: आराम आजाता है । अन्यथा मौत पीछे पड़ जाती है" ॥

## उपचार ॥

स्टामक पम्प से शीघ्र आमाशय को धोया जावे वा वान्तिकर औषधियों से वमन कराया जावे, वमन के पश्चात् लैमोनेड वा सिकंजबीन पिलावें, सरद पानी में गोता देवें वा सरद पानी ऊपर डालें अथवा प्रथम गरम और फिर सरद, बार बार ऐसा करना। त्वचा के भीतर स्ट्रिक्रिया ( कुचला का सत ) थोड़ा सा प्रविष्ट करना, हृच्छक्ति का स्थापित रखना है। आधसेर के अनुमान से गरम कहवा का वस्तिकर्म करना, अर्थात् गुदाद्वार से चढ़ाना, जोकि एक नलिका के द्वारा जिसको डूश कहते हैं ( और अंग्रेजी दुकानों से मिलती है ) हो सक्ता है। वमन, रक्तस्राव, और वस्तिकर्म को यूनानी हकीम अच्छा बताते हैं ॥

नौसादर शराब का नशा उतारने के वास्ते उपयोगी है। स्मरण रहै कि नशा भय से भी उतर जाता है। धमकाना, डराना, वा कोई खेदयुक्त वार्त्ता सुनाना, कि जिससे ध्यान भीतर को खिंचे, और नशा उतर जावे। यदि शराब अधिक पी हुई है, तो थोड़ा चेत आजाना पर्य्याप्त नहीं, अतः अवशिष्ट उपचार भी करने उचित हैं, वरन अच्छा नहीं है ॥

## पोस्ट मारटम ॥

मरणानन्तर यह ज्ञात करने के लिये कि क्या खाया गया है, यदि चीरा जावे तो आमाशय की झिल्ली पर लाल निशानात मस्तिष्क की नसों में तथा फुफ्फुस में रक्त का इकट्ठा होना, भीतर से अल्कोहल की गन्ध का आना इत्यादि पाये जाते हैं। परन्तु सम्भव हो सक्ता है कि गन्ध का कारण वह मद्य हो जो चिकित्सा के वास्ते बहुधा रोगों में डाक्टर लोग देते हैं। इस लिये इस प्रकार परीक्षा किया जाता है। आमाशय से जो मिला है उसमें सोडीयम

कारबोनेट मिलादो, और एक आतशी शीशी ( रिटार्ड ) के द्वारा इसका अर्क खींचो, इस अर्क में क्लोराइट ऑफ केल्सियम संयुक्त करदो, और पश्चात् अर्क खींचो। और इस अर्क में शुष्क पोटाशियम कारबोनेट संयुक्त करदो। यदि मद्य से मृत्यु हुई है तो इस अर्क में उसकी गन्ध होगी। इसमें कर्पूर घुल सक्ता है, डाइल्यूट सल्फ्यूरिक-एसिड और बाईक्रोमेट ऑफ पोटासियम डालने से हरा रंग हो जाता है। इस अर्क की कई और विधियों से भी परीक्षा हो सक्ती है॥

## अन्तर॥

चोट आघातादि से शून्य और अचेत होना, शिरभ्रमण और शिर-पीड़ा हो सक्ती है। अफयून के भक्षण से हो सक्ती है, मद्य से हो सक्ती है, अपस्मार से भी होता है, और रक्त में मूत्र की मिलावट से भी यही लक्षण हो सक्ते हैं। इस व्याधि को अंग्रेजी में यूरीमिया कहते हैं, इन सब की पहिचान यों होती है:—

| अहिफेन ( अफयून ) | मद्य ( शराब ) | चौट और आघात | यूरेमिया | अपस्मार |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| १—कोई चिन्ह नहीं<br>२—शनैः २ ऊंघना, फिर शून्य होना।<br>३—चेहरा पीला, पुतली सङ्कुचित।<br>४—आराम कठिन।<br>५—अफ्यून की गन्ध | १—कोई चिन्ह नहीं यदि बेहोशी गिरकर हुई हो तो हालात जानने चाहियें।<br>२—प्रथम जोश में आना पुनः शून्य होना<br>३—चेहरा लाल, पुतली फैली हुई।<br>४—आराम आकर मृत्यु बहुधा होजाती है।<br>५—अल्कोहल की गन्ध। | १—आघात के चिन्ह<br>२—तत्काल शून्य होना<br>३—चेहरा पीला, व पुतली सुस्त और कभी फैली हुई<br>४—आराम बहुत शनैः २<br>५—अल्कोहल की गन्ध श्वास से नहीं आती है। | १—कोई चिन्ह नहीं मूत्र में अल्बयूमन शरीर में किसी २ स्थान में पानी फिरना<br>५—मूत्र की गन्ध | १—कोई चिन्ह नहीं<br>२—एकाइक चिन्ह प्रकट होते हैं, और शीघ्र बन्द हो जाते हैं और आरम्भ में अपस्मार का होते रहना।<br>३—मुख से फेन निकलना। |

## जीर्ण लक्षण ॥

यह तो वर्णन मद्य का विष की रीति पर किया गया, और मादकद्रव्यों की रीति पर जब इसका वर्णन किया जावे उसकी हानियों का वर्णन नीचे की तरह किया जाता है। विष की रीति से मद्य बहुत कम व्यवहार में आया है, किन्तु नशा की रीति पर संसार में इसका राज्य है। बहुत समय पर्य्यन्त पीते रहने से जो जीर्णविष लक्षण प्रकट होते हैं, उन को अंग्रेजी में क्रौनिक पाइज़निंग कहते हैं ॥

**विलियम मरल साहिब एम. डी.**–विष जीर्ण लक्षण, अपनी पुस्तक "विषचिकित्सा" में यों लिखते हैं, "अजीर्ण, वमन, अतिसार, कामला, मूत्र में रसा, मधुप्रमेह, मस्तिष्कविकार, वृक ( गुरदों का ) घटन, अर्द्धांग, उन्माद, और जिगर की खराबी" ॥

**सी आई आरमण्ड सिचल साहिब**–यों लिखते हैं "कलेजे का नसायुक्त होना, अपस्मार, कई अवस्थाओं में अजीर्ण, वृक्रोग, और अन्य प्रत्येक रोग उत्पन्न होते हैं, क्योंकि शरीर निर्बल हो जाता, और उसकी सहनशीलता जाती रहती है। तथा भयकारी व्याधियों को सहन करने के कारण बहुत शीघ्र मृत्यु हो जाती है। पाचनशक्ति नष्ट हो जाती है, क्षुधा कम लगती है, और पट्ठे निर्बल हो जाते हैं, भोगशक्ति की दशा बिगड़ जाती है। चर्म और मांस पेशियां भद्दी हो जाती हैं। कटि और सन्धिबन्धन में पीड़ा, बुद्धिहीनता आचार और मानसिक शक्तियों की निर्बलता, तथा अन्त में मद्यपान की इच्छा इतनी प्रबल हो जाती है, कि प्रतिक्षण उसी में डूबा रहना चाहता है ॥

## ए शराब खाना खराब ॥

तूने कैसे २ नष्टभ्रष्ट किये हैं। हे राम राम २ ! परमात्मा बचावे ! जो महाराजा कहलाते थे वह तेरी कृपा से द्वार २ भटके,

शूरों का शौर्य्य, ज्ञानियों का ज्ञान, स्वस्थों का स्वास्थ्य, धनिकों का धन, पण्डितों का पाण्डित्य, हकीमों की हिकमत, मान्यवरों का मान्य, सलज्जपुरुषों की लज्जा, तथा सुजनों के सौजन्य को तू क्षण में नष्ट कर देती है। ईश्वर तेरे पंजे से बचावे। तू उन्मत्तता की वह बिन्दु है, कि एकवार मुख लगा फिर नहीं छूटता है। तू वह छुरी है कि जिसको लगती है वही और आगे हो तुझ से मिलता है, और प्राण छोड़ता है। शतशःराज्य तूने मलियामेट कर दिये। ए खाना खराब! हिन्दुस्थान तो प्रथम ही दुःखस्थान हो रहा है। तू फिर भी दिन प्रतिदिन अपनी निर्दयता का हाथ पसारती ही जाती है। आ! बाज़ आजा!! इन हिन्दुओं को क्षमा कर, यह तो प्रथम ही सब दिशा से घिर रहा है। शैतान की बच्ची! अपना बोरिया बन्धना यहां से उठा। मरे हुये को क्या मारना? हिन्दुस्थानी आगे ही नष्ट हो चुके हैं, रही सही कसर क्यों निकालती है?

सुन ले ज़रा ए नाबकार मान ले कहा।
मुरदे को तेग़ ग़ज़ब की दिखला है क्यों रहा।
इस गुलसितां के गुल तो हैं तेरी समूम से।
पज़ मुरदा पेश्तर व दबे हैं ग़मूम से।
यहां अब्र मसायब तो है पहले ही छा रहा।
तू भी है अपने जुल्म की शकलें दिखा रहा।
अब इस ग़रीब हिन्द का पीछा तू छोड़ दे।
कर माफ़! तेरे आबे शर्र के ख़ुम को फोड़ दे।

ऐ नाबकार कहना मान, और ग़रीब हिन्दियों का पीछा छोड़!

ए शोला रुह शराब तेरा रुह सियाह हो।
जिसको लिपट गई है उसी को जला दिया।
जिसको शराब नोशी का चस्का ज़रा लगा।
कतरा समझ के सारे ही ख़ुम को उड़ा गया।

हाज़िम समझ के उसको किसी ने अगर पिया ।
मामूली खाना पीना भी उसका छुड़ा दिया ।
या खुदा तू हिन्दियों को इस से कर आज़ाद अब ।
ताकि वह भी रुख़ करें, तर्फ़ तरक्की मिल के सब ॥

नशा हिन्दियों से छुड़ा या इलाही,
यह बिगड़ी हुई दे बना या इलाही ।
हवा मैकदा की जो सर में भरी है,
मिटायेगी यह नक्शेपा या इलाही ।
वही पहली भारतवर्ष वाली हालत,
दिखा या इलाही दिखा या इलाही ।

पाठक गण ! किधर ध्यान है, ज़रा होश सम्भालो, और अपने घर तथा देश से इस मद्य को आज ही निकालो, रहे सहे भारतवर्ष को बचालो ! बचालो !!

देखना ! ऐसा न हो जो हो कहीं खाना खराब,
ऐसी कमफ़हमी से बरबादी है अक्सर देखना ।
गन्दगी नाला में सर पगड़ी कहीं टोपी कहीं,
मैपरस्तों का ज़रा यह हाले अबतर देखना ।
मुश्किलातों से बचो कहना हमारा मान लो,
वरना पछताओगे तुम इक रोज़ आख़िर देखना ।

---

## सोचो !

ख़ाना ख़राब कर दिया बिलकुल शराब ने,
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने ।
इज़्ज़त के बदले ज़िल्लतें इसके सबब मिलीं,
अशराफ़ से ज़लील बनाया शराब ने ।

दौलत भी थी और सेहत भी हमारे साथ थी,
मुफ़लिस बन मरीज़ बनाया शराब ने ।
हम पीने वाले शरबते सन्दल थे दोस्तो,
कुत्तों का मूत हम को पिलाया शराब ने ।
मैदाने जंग में थे कभी हम भी शाह सवार,
कीचड़ में नालियों के गिराया शराब ने ।
सदियों से जागते थे बहुत होशियार थे,
अब ग़फ़लतों की नीन्द सुलाया शराब ने ।
बीबी से उसने कतए तअल्लुक करा दिया,
फन्दों में रण्डियों के फंसाया शराब ने ।

---

## स्मरण रहे !

जो चाहते हो तुम खुशी से जीना नशा न पीना ।
बुरी बला है यह जाम पीना नशा न पीना नशा न पीना ॥

इसके पीने से तअक्कुल का हुवा बतलान,
मालोज़र का भी अक्सर हुवा करता है नुकसान ।
वाक़ई यह ज़हर हलाहल है बहरे इन्सां,
इसको अच्छा जो समझते हैं वह हैं बस नादां ।
दाफ़िये अक़्ल-खिरद होशो हवा से खमसा,
दुश्मने दीं है यह और अदूए ईमां ।

---

## मद्य किसी मत में ग्राह्य नहीं है ॥

**यवनमत**—कुरानशरीफ़ में लिखा है "मद्य का पीना महापाप है" **सुलेमान बादशाह** का वचन है, जब मद्य लाल हो, और उसकी छाया छत पर पड़े, तो यदि वह पीते समय अपनी उत्कृष्टता दिखलावे

भी तो उस पर दृष्टि मत डाल । क्योंकि अन्त में वह सर्प के समान डसता है, और बिच्छू की भांति डंक मारता है ।

**हदीस में आया है—**

"हज़रत अली करमल्लाह वजहु ने फ़रमाया:—यदि किसी कुए में एक बूंद मद्य गिर जावे, और उसको बन्द कर उस पर मकान बनाया जावे, मैं कदापि उसमें अज़ां नहीं दूंगा । और यदि मद्यबिन्दु समुद्र वा नदी में पड़े, और वह स्थान कभी शुष्क हो जावे, वहां घास उगे, तो वह घास पशुओं को न चराऊंगा" । देखिये कैसा घोर विरोध है । ईसा अलेहुस्सलाम ने फ़रमाया "संसार का मोह पाप की जड़ है । स्त्री भयंकर जाल है, और मद्य पापपथ पर लेजाने वाला है" ॥

**कुरानशरीफ़**-सातवें सिपारा में साफ़तौर पर मद्य और जूए का निषेध है ।

हदीस में आया है कि एक समय मद्य के विषय में विचार हुवा, और परिणाम में यह ठहरा कि मद्य निषिद्ध है । तदनन्तर प्रश्नकर्त्ता महाशय ने क्षमा मांगी, और कहा कि मैं केवल औषधि की रीति पर चाहता हूं । फिर उत्तर मिला, कि तुम्हारा ख़याल ठीक नहीं है, क्योंकि मद्य औषधि नहीं, प्रत्युत् साक्षात् व्याधि है ॥

**अब्दुल्ला बिन उमर** कहता है कि रसूलेखुदा सल्लिल्लाह अलेह वसलम ने फरमाया है कि, जो मद्य पीता है उसकी ४० दिन और रात तक नमाज़ स्वीकृत नहीं होती है । ४ वार प्रायश्चित्त करने के पश्चात् पीवे, तो पुनः प्रायश्चित्त स्वीकृत नहीं होता है, और वह नरकगामी होता है ॥

**तथाच**-लिखा है, कहते हैं, मैंने कहा कि ऐ रसूलिल्लाह हम सरद स्थान पर रहते हैं, और परिश्रम तथा दुःख से कार्य्य करते हैं; हम गेहूं का मद्य बनाते हैं और तब कार्य्यारूढ होते हैं, और सरदी से बचे रहते हैं । फरमाया—कि यह तो तुम को सुस्त करती है । मैंने

द्वारा मृत्यु पा चुके हैं । मैं इसको न पीने के कारण स्वस्थ, धनी, तथा सानन्द भी हूं ॥

**प्रोफ़ैसर हिचकाक**–मद्य, तम्बाकू और अहिफेन ( **अफीम** ) से बचना चाहिये ॥

**डाक्टर पार्क्स** एम. डी. एफ. आर. एसः–यदि मद्य न होती तो आधे पाप, और बहुधा सांसारिक दुःख न होते ॥

**डाक्टर अक्लुण्ड** एम. डी. एफ. आर. एसः–यदि मद्य न हो, तो आधे पाप, और बहुतसी निर्धनता, तथा बहुतसा दुःख संसार से दूर हो जावे ॥

**डाक्टर बी. डब्ल्यू. रिचर्डसन**–मद्य पाप का आढ़तिया है ॥

**सर जान हाल** के. सी. बी.:–मेरी सम्मति है कि स्पिरिट, मद्य, और माल्ट लिकर स्वास्थ्य के वास्ते कदापि आवश्यक नहीं है ॥

**डाक्टर मैक क्रौच**–मद्य से आचार नष्ट होता है, और मानसिक शक्तियां नष्ट होती हैं, तथा पाशविक इच्छायें बढ़ती जाती हैं ॥

**प्रोफ़ैसर मिल्लर एम. डी.** अलकोहल विष है, अधिक मात्रा में मार देता है, और अल्प मात्रा में मृत के समान कर देता है। रक्त को विष युक्त करके मनुष्य का नाश करता है ॥

**डाक्टर ट्राटर**–निम्न लिखित व्याधियां मद्य पीने वालों को होती हैं। अपस्मार, सन्न्यास, भयकारी स्वप्न, आमाशय का शोथ, आन्तों में शोथ, नेत्रों में लाली, फोड़े, कलेजे का शोथ, रिंगनवात, अन्तड़ियों में अटक, कामला रोग, अजीर्ण, जलोदर, गशी, मधुमेह, जबड़े का हिलना, फ़ालिज (अर्द्धाङ्ग वात) उन्माद, सख्त फोड़े अज्ञानता, नपुंसकता, मालीखोलिया ( पागल पन ) शीघ्र वृद्ध होना, बालकों को दुग्ध पीने के समय में रोगादि ॥

**डाक्टर हिज़न बाटम**–मैंने कई रोगों की चिकित्सा जिनकी अन्य विधि से चिकित्सा न होसक्ती थी, केवल मद्य के छुड़ाने से की।

**डाक्टर मजू**–मद्य न पीने वाले का स्वास्थ्य अच्छा होता है, वह थोड़ी मद्य पीने वाले की अपेक्षा रोग ग्रस्त कम होता है ॥

**डाक्टर केन एम. डी.**–मद्य प्रत्येक दशा में चाहे थोड़ी भी पिया जावे निश्चय आयु को घटाता है ॥

**सर ऐसले कूपर एम. डी.**–मद्य और विष एक ही बात है।

**डाक्टर जे जेम्ज़ रिज**–मद्य स्वास्थ्य के वास्ते कभी भी आवश्यक नहीं है, शरीर इस से कभी उष्ण नहीं होता है। अत्यन्त ठण्ड लगने से तो बहुत हानिकारक होता है। जब कठिन कार्य्य लगातार करना हो तो यह अधिक हानिकारक है। बालकों के लिये विशेषतः भयावह है। इस से आयु घटती है ॥

**दो सहस्र डाक्टरों की सम्मति**–एक समय विलायत में एक सभा हुई, और दो सहस्र डाक्टरों ने एक प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किये, जो कि निम्न लिखित है:—

"हमारी सम्मति है कि (१) मनुष्यों के दुःख, निर्धनता, रोग और पापों का कारण अधिकतर मद्य का उपयोग है। (२) पूर्ण नित्य स्वास्थ्य सब मादक द्रव्यों के त्याग से ही प्राप्त होता है। बीअर, एल, पोर्ट, साइडर, हर प्रकार के मद्य से दूर रहना उचित और आवश्यक है। (३) जो लोग इस के व्यसनी हैं, वह इसको शीघ्र वा शनैः २ त्याग कर सक्ते हैं। (४) मद्यों से और सब प्रकार के अन्य मादक द्रव्यों से भी संसार सर्वथा दूर रहे, तो इससे स्वास्थ्य बहुत बढ़ जावेगा, और संसार में धन, आचार और आनन्द की वृद्धि होगी ॥

**डाक्टर कारपेण्टर**–मद्य की शक्ति थोड़े समय के वास्ते होती है, और मद्यपायी शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥

**एक लायक डाक्टर**—मैंने तीन सौ अज्ञानियों की परीक्षा की तो ज्ञात हुवा कि उन में से १४५ मद्यपायियों की सन्तानें थीं ॥

**डाक्टर परनर**—मद्य का थोड़ा वा अधिक पीना हानिकारक है। जो जातियें मद्य को अस्पृश्य समझती हैं, उन में मनुष्यत्व और आचार पाये जाते हैं ॥

**डाक्टर ब्लेक**—मद्य की इच्छा दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, और अन्त में मद्यपायी अकाल मृत्यु मरता है। मद्यपायी की सन्तति का कुछ समय में अन्त आ जाता है। नशा उतरने के पश्चात् विशेष थकावट होती है। जो लोग थोड़ी २ मद्य भी पीते हैं, उनके पट्ठे ऐसे निर्बल हो जाते हैं कि अपना कार्य्य पूरा नहीं कर सक्ते, और थोड़ी सी चोट से वा दुःख से बिगड़ जाते हैं। आमाशय वृक् (गुरदे) कलेजा, मस्तिष्क, अवश्य निकम्मे हो जाते हैं ॥

**इन्स्पैक्टर जनरल सर जौन हौलः**—जिस सेना में मैंने नौकरी की उसके सिपाहियों को मद्य का एक विन्दु भी नहीं दिया, तथापि दुःख भोगने और विना वितान सरद वायु में पड़े रहने पर भी नियम से विशेष १ प्रतिशत भी रोगग्रस्त न हुये ॥

**डाक्टर कोपलैण्ड**—होश्यार और तेज़ स्वभाव वाला मनुष्य पागल हो जाता है ॥

**डाक्टर कारपैण्टर**—तीक्ष्ण मद्य विष का प्रभाव रखती हैं। मद्य में शारीरिक अङ्गों में विकृति उत्पन्न करने की शक्ति होती है। उसके पान से विशूचिकादि रोग होते हैं। उसके पान से रक्त में स्वाभाविक परिवर्त्तन नहीं होने पाता ॥

**अल्लाउद्दीन बादशाह**—जो व्यक्ति नशा उत्पादक वा मादक-द्रव्यों का उपयोग करता हुवा पकड़ा जावेगा, वह कठिन भयंकर दण्ड का भागी होगा, और एक तंग अन्धेरे कूएं में डाला जावेगा, जहां से बच कर जीवित निकलना असम्भव है ॥

**फीरोज़शाह बादशाह**–प्रत्येक नशा हराम है, जो व्यवहार में लावेगा उसे देशनिकाला दिया जावेगा, ( औरङ्गज़ेब ने इससे भी बढ़ कर हुक्म जारी किया था )

**डाक्टर हाथ**-मैंने उन लाशों ( मृतशरीरों को ) जो मद्य से मरे थे, चीरा, तो उनके मस्तिष्क से इतना मद्य निकला कि उससे बत्ती भिगो कर जल सकती थी ॥

**डाक्टर राबन्स**–जिन्दगी बीमा (Life insurance) कम्पनियों के कागज़ात से प्रकट है कि मद्य से परहेज़ करने वाले की अपेक्षा मद्यपायी की आयु कम होती है ॥

**डाक्टर बी साहिब** ने सरजान फ्रिंकल को जब वह बहरेमुंजमिद ( बरफ़ के समुद्र ) की ओर गया तो कह दिया था कि मद्य को साथ न लेजाना, और जो मद्यपायी हो उसको भी साथ मत लेजाना ॥

**डाक्टर कारपेण्टर**:-मैं २४ वीं रैजिमेण्ट में नौकर था, उनमें बहुत से मद्य न पीने वाले पुरुष थे । ये लोग उष्णदेश में कार्य्य करने पर भी सर्वथा स्वस्थ रहे; परन्तु मद्य पीने वालों ने बहुत कष्ट उठाये ॥

**डाक्टर प्रैफीयर**--शुद्ध बीयर के १६६६ भागों में केवल एक ऐसा होता है जो रक्त बृद्धि करता है ॥

**बैरन ली हेग**–मादकद्रव्यों के दो आतिशा ( द्वयग्निक ) से त्र्यग्निक करने का प्रयोजन ही यही है कि, रक्तवर्द्धक पदार्थ को और भी पृथक् किया जावे । मैं सिद्ध कर सक्ता हूं कि दो रत्ती आटे में अधिक तरो ताज़गी है । इसके समान अच्छी कहीं बीअर की ८ बोतलों में होगी । यदि कोई पुरुष इतनी बीअर प्रति दिन पिया करे तो, सब वर्ष के अन्त में उसकी इससे इतनी शक्ति मिलेगी जितनी केवल अढाई सेर आटे में मिल सकती है ॥

**एक लायक डाक्टर**—मादक द्रव्य विष हैं, यह मस्तिष्क और सब अङ्गों को रुग्ण कर देते हैं। यथाः—बुद्धि का मोटा होना, कलेजे और हृदय की शक्तियों की निर्बलता, दृष्टि और जिह्वा की निर्बलता, शरीर शिथिलता, पित्तादि दोष विषमता, ग्रन्थी कम्पवात, अङ्ग ऐंठना, सन्न्यास, अकाल मृत्यु, संग्रहणी, सन्निपात, आमवात (गठिया वात) अर्द्धाङ्ग वातादि ॥

**यजुर्वेद**—उस अर्क का जो नशा उत्पन्न करता है, और सत्पथ से हटाता और कल्याण कारिणी शक्ति को नष्ट करता है, पान न करो ॥

**कुरान**—मद्य पान और जुआ निषिद्ध हैं, क्योंकि ये पिशाचों के कर्म हैं ॥

**ख्वाजा हाफ़िज़**—यह पिशाचों की माता हैं ॥

**शेखसादी**—धिक्कार है, शराब पीने वालों को, शतशः धिक्कार है ॥

**केशवचन्द्र सेन**—शराब धर्म्म, सदाचार, और सब मनुष्यों के लिये बड़ा भारी शत्रु है ॥

**ख़लीफ़ाउमर राज़िउल्ला उनहु**—अभाग्य, निर्धनता, और महा-पातक का उत्पत्तिस्थान मद्य है ॥

**शङ्कराचार्य्य**—मद्य तुम्हारी जड़ों को काटने वाला है ॥

**हदीस शरीफ़**—सीधा मृत्यु का मार्ग है ॥

**डाक्टर लूई कोहनी साहिब**—बोझ की गाड़ी खींचने वाला एक घोड़ा जो कि सहज ही ५० मन बोझ को खींच सकता है, सम्भव है कि चाबुक के द्वारा थोड़े समय के वास्ते ८० मन बोझ खींचे। और उसका मालिक ऐसा जानकर कि यह घोड़ा ८० मन खींच सक्ता है, इतना बोझा खिंचवावे, तो सम्भव है वह कुछ दिवस पर्य्यन्त इतना बोझ खींच सके; किन्तु यह शीघ्र हानिकर प्रमाणित होगा, यहां तक कि वह फिर ५० मन भी न खींच सकेगा। मनुष्य के

पाचकयन्त्रों की भी यही व्यवस्था है, जोकि उत्तेजक पदार्थों से उत्तेजित किया जाता है ॥

## कवित्त

मद्यपी पिछान यही चाटते हों श्वान मुख,
आंख लाल चाल डगमगी पड़े यहां वहां ।
होश लाख कोश दूर ज्ञान का निशान नहीं,
पड़ गया धमाक वहीं चक्र आगया जहां ।
लाज वाज दूर गई वस्त्र का विचार नहीं,
देखते तमाशबीन सीन खूब है यहां ।
मद्यपान हान मित्र ! कहांलों करूं बयां,
छोर "घनश्याम" लाभ है न पाप है महां ।

---

## दोहा

सम्मति सब की एक है, छोड़ो आज शराब ।
वरना निश्चय जान लो, होगा हाल खराब ॥ १ ॥

## मद्य पीने की हानियों का इतिहास ॥

मद्य जब पिया जाता है तो सब से पहले मुंह में निम्नलिखित रोग पैदा होते हैं, जिह्वा की स्वादशक्ति का नाश, मुख के लुआब का शुष्क होना, पित्तप्रकृति वालों को छाला पड़ना, प्रतिदिन तेज पीने की इच्छा होना, इत्यादि । इन हानियों को यदि साधारण जान कर इन पर दृष्टिपात न किया जावे, तो आमाशय में प्रवेश करते ही इसकी हानियां आरम्भ हो जाती हैं ॥

## आमाशय ॥

प्रायः डाक्टर लिखते रहे हैं कि यद्यपि अधिक मात्रा में मद्य का पीना क्षुधा को घटाता है, और इसकी थोड़ी मात्रा से क्षुधा बढ़

जाती है। परन्तु शनैः २ ज्ञात हुआ, कि यह झूठी क्षुधा है, धीरे २ आमाशय इससे निर्बल होता जाता है। आमाशय के उत्तेजन से क्षुधा लगती है, परन्तु आमाशय इतना बलवान् नहीं होता कि भुक्तपदार्थ को पचा सके। अतएव भोजन के साथ पीने वालों को बहुधा वमन भी हो जाता है। क्षुधा बढ़ाने के लिये मद्यपान करना सर्वथा अज्ञता है। जब क्षुधा नहीं लगती तो वैद्य से चिकित्सा कराओ, चस्के की ख़ातिर यह बहाना ढूंढना उत्तम नहीं है। मद्य के साथ भोजन का व्यसन डालना कैसा बुरा है? फिर उसके विना क्षुधा ही नहीं लगती। और बहुत लोगों को अनुभव है, कि मद्य से आमाशय-ग्रन्थियों की वसा घट जाती है। आमाशय की नालियां सुर्ख हो जाती हैं, और उनसे रतूबत (लब) बहने लगती है। जो लोग यह कहते हैं, कि हम भोजन के साथ थोड़ासा मद्यपान करते हैं, इससे क्षुधा अच्छी लगती है, वे मूर्ख यह नहीं जानते, कि व्यसन भी एक प्रकृति का भाग है। अन्त में आमाशय उसका व्यसनी हो जाता है और पश्चात् उसको उत्तेजित करने के लिये इससे अधिक मद्य की आवश्यकता होती है। आज यदि १० विन्दु से ही आमाशय उत्तेजित हो सक्ता है, तो वर्ष के पश्चात् उसको कम से कम १०० विन्दुओं की आवश्यकता होगी। और इसके साथ २ हो आमाशय निर्बल हो जावेगा, तथा अच्छा ख़ासा भाड़े का टट्टू बन जावेगा। इसकी अपनी शक्ति नष्ट हो जावेगी। उस उत्तेजक सहायक की सहायता से कुछ कार्य्य करेगा, परन्तु अन्त में यह भी कुछ सहायता न कर सकेगा। डाक्टर ब्लैक साहिब के कथनानुसार "मद्य व्यसन प्रतिदिन बढ़ता है अन्त में मद्यपी अकालमृत्यु पाता है" उसको संसार के लिये अन्तिम नमस्ते करनी पड़ेगी। बस! आप सदा निश्चय कर लीजिये कि "मद्य सदैव आमाशय के लिये हानिकर है" आमाशय ही पर यदि स्वास्थ्य का निर्भर कहा जावे, तो अत्युक्ति नहीं। आमाशय शरीर की जड़ है, और

अवशिष्ट सब शरीर का पोषण इस स्थान से ही होता है। इसकी निर्बलता से जब शरीर के अन्य अंगों को भोजन न पहुंचेगा, तो अवश्य ही सब शरीर निर्बल हो जावेगा ॥

**न्यूहाइजीन** के साहसी पुरुषों ने जहां तक विवेचना की इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि, आमाशय यदि अपनी ठीक हालत में रक्खा जावे, तो सब शरीर नीरोग रह सक्ता है। उनका कथन है कि कुल रोगों की चिकित्सा ही आमाशय का सुधार है। मद्यपायी जानता है कि बिना मद्य के अब उसको क्षुधा नहीं लगती, और मद्य के साथ ही प्रतिदिन घटती जाती है। इस पर भी आश्चर्य्य यह है कि वह उसको त्याग कर प्राकृतिक शीतजल पीकर और प्राकृतिक नियमों का अनुयायी बन कर स्वस्थ नहीं बनता। मनुष्य पाप करता है, वह पापकर्म्म उसको दुःख देना चाहते हैं। और वह मद्य पीकर उनको विस्मृत करता है, और जितने समय उन बखेड़ों से पृथक् रहता है, उसको वह सुख और ऐश समझता है। यही कारण है कि "छुटती नहीं है मुंह से यह काफ़िर लगी हुई" इससे अपने स्वास्थ्य की भी परवाह नहीं करता है। यदि वह विद्या से, ईश्वर की प्रीति से, तथा धर्मावलम्बन से अपने विचार को वश में करना, संसार को असार समझता, तो उसका स्वास्थ्य भी ठीक रहता। पापों से भी पृथक् रहता, उसका परलोक भी सुधरता, और मद्यपान से जो भीतर २ पापेच्छा बढ़ती जाती है, उससे भी मुक्त रहता ॥

## पापेच्छा ॥

अंग्रेज़ी कहावत है कि जहां शैतान स्वयम् नहीं जा सकता, वहां मद्य को भेज देता है। डाक्टर डबल्यू. बी. रिचर्ड सन, डाक्टर मेककलूच, डाक्टर औकलण्ड एम. डी., लार्ड कर्जन, डाक्टर पार्क्स साहिब आदि की सम्मतियां जो पीछे दी जा चुकी हैं, उन पर

ध्यान दें। सब की सम्मति यह है, कि मद्य से पापेच्छा वृद्धि को प्राप्त होती है। कथा है, कि एक साधू एक वाटिका में भ्रमण करना चाहता था, वह उसके एक द्वार पर गया, तो वहां के द्वारपाल ने कहा, कि मद्य पीकर भीतर जाने की आज्ञा है, उसने इसको पाप समझा, और दूसरे द्वार पर गया, उसके द्वारपाल ने कहा, कि जो जुआ खेलें, उनको अंदर प्रवेश की आज्ञा है। पर उस साधु की साधुता कब आज्ञा देती थी, कि वह ऐसा करे। वह तीसरे द्वार पर पहुंचा, वहां उसको राजा के उद्यान दर्शन के अतिरिक्त पारितोषिक का लोभ दिया गया, कि अमुक व्यक्ति को मार दो। परन्तु इस महा पाप को स्वीकार कर वह प्राण घातक कैसे कहला सकता है। आगे बढ़ा, और चौथे द्वार पर कुछ और ही गुल खिला पाया। एक कुट्टिनी वहां रहती थी, द्वारपाल ने बताया कि इससे भोग किये बिना कोई भीतर नहीं जा सकता। साधू सोचने लगा और अन्त में यह सिद्धान्त ठहराया, कि मद्य साधारण अर्क है, इसके पान में कोई ऐसा पाप ज्ञात नहीं होता। वह पुनः वहां गया और एक प्याला पिया। कहते हैं कि उसका ज्ञान नष्ट हुआ, और साधुता रफूचक्कर हुई। जुआ भी उससे खिलाया गया, भोग भी करवाया गया, और दुश्मन को भी मरवाया गया। सचमुच मद्य सब पापों का एजन्ट इसी कारण लिखा गया है। जिसके अन्दर विवेक ही नहीं है, उसे पापों से भय ही क्या हो सकता है। मद्यपायी के वास्ते असत्य भाषण, दम्भ, कपट, मैथुन करना, किसी की वधू, व पुत्री पर कुदृष्टि पात करना, और नशा के समय में अपनी माता, भगिनी सबको कुदृष्टि से देखना, और किसी समय बलात्कार कलङ्कित करना, कोई बड़ी बातें नहीं हैं। शायद ही आप को कोई ऐसा दृष्टान्त मिले, कि कोई मद्यपायी अन्य बीसों पापकर्मों में फंसा न हो। मद्य का एक बिन्दू भी पान करने से पुरुष पतित हो जाता है, धर्म के नेताओं ने

इसी कारण से इसका अत्यन्त निषेध किया है, कि यह पाप की ओर लेजाता है। वरना एक बिन्दु कोई अभिचारा का तो कार्य्य करता है नहीं। जो भी हम लोगों में मद्य पीता है, छिप कर पीता है, ऐसा न हो कि कोई देखले। डाक्टरों ने अनुभवों से यह प्रमाणित कर दिया है, कि मद्यपायी के मस्तिष्क में एक प्रकार की हानि होती है, और इससे वह विवश होकर पाप की इच्छा करने लगता है॥

**कलेजा** आमाशय के पश्चात् मद्य अपना प्रभाव कलेजे और पित्ते पर डालता है। एक बकरी के कलेजे का टुकड़ा लेकर मद्य में डालो, और पुनः उसकी दशा का निरीक्षण करो। आपको ज्ञात होगा, कि कलेजे के साथ स्पर्श करते ही मद्य उसमें कैसा ख़राब परिवर्तन उत्पन्न कर देता है। इसके व्यवहार से कलेजा छोटा हो जाता है। हमने बीसों मनुष्य देखे, जिनको पीतवर्णता और कामला का रोग देखकर प्रश्न करें, कि आप मद्य का उपयोग तो नहीं करते ?। उत्तर हां में मिला। मद्यपान से कलेजा कदापि अपनी वास्तविक दशा पर नहीं रह सकता है। इससे पुरुष कामला, कलेजे के रोग, व्रण, अङ्गशोथ, जलन्धर, आदि व्याधियों में फस कर अत्यन्त दुःख भोगता है। मुझे एक भारी मद्यपायी की दशा ज्ञात है, जिसको एक बार कामलारोग हुआ, और उसके साथ ऐसे उपद्रव उपस्थित हुये, कि कहा जासकता है, कि राम २ मृत्यु के पंजे से बचा। उस दिवस से उसने मद्य छोड़ दिया। किन्तु यदि वह थोड़ा २ उपयोग फिर भी करता रहता, तो शीघ्र ही उसका जीवनान्त आजाता। मद्यपान से कलेजा छोटा हो जाता है, और अजीर्ण, ग्लानि, वमन, कलेजे का जलन, ध्मान, त्वचा की रुक्षता, और पीतता, पित्ता में व्रसोत्पत्ति, कभी २ अतिसार ( मरोड़ ) और रक्तातिसारादि, लक्षण आरम्भ होते हैं। कलेजा और पित्ता प्रति-दिन अपना कार्य्य त्याग कर अन्त में रुधिर को रक्त वर्ण नहीं कर सकता। और असीम निर्बलता आरम्भ हो जाती है। स्मरण रहे, कि

कलेजा छोटा होता है, इसीलिये ऐसे उपद्रवों की उत्पत्ति होती है। यदि प्लीहा बढ़ गया हो तो सबको ज्ञात ही है कि कितने उपद्रव हो जाते हैं। किसी समय कलेजा फूल भी जाता है, और इससे मद्यपायी का अन्तकाल आजाता है ॥

**अन्त्रियाँ**—शराब का प्रभाव आंतों पर भी होता है। वे ऐसी निर्बल हो जाती है, कि छोटीसी व्याधि को भी जीर्ण बना देती है। रक्तातिसार और अतिसार जिनको हम लोग साधारण समझते हैं, अंग्रेजों के वास्ते प्रलय है। कारण यह है कि वे विशेषतः मद्यपायी होते हैं; यदि उनको ये रोग लग जावें तो निर्बलता के कारण चिरस्थायी और किसी समय भयंकर प्रमाणित होते हैं। जब किसी मद्यपायी को आमातिसार हो जावे तो निश्चय से समझ लो, कि बहुत देर में शान्ति आवेगी। हमारी भान्ति यदि वे इस आशा पर कि स्वयम् अच्छे हो जाएंगे, इन रोगों की परवाह न करें तो जीर्ण होकर संग्रहणी, अतिसार आरम्भ हो जाएगा और वह मनुष्य भीतर ही भीतर खाया जावेगा ॥

**हृदय**—मद्य पीने से हृदय की गति तेज़ होती जाती है, जैसेकि स्टीम ( वाष्प ) को बढ़ा देने से इञ्जन तेज़ हो जाता है, परन्तु इस वेग का परिणाम अनिष्ट है। हृदय को विशेष कार्य करना पड़ता है, और वह निर्बल हो जाता है। जब नशा उतरता है, तो उसके बाद आराम करने के वास्ते उसकी गति अत्यन्त धीमी हो जाती है। इससे हृदय की बनावट स्थूल होजाती है, और वसा उत्पन्न होने लग जाती है। हृदय की धड़कन, निर्बलता और कभी २ डूब जाना, खड़े हो जाना आरम्भ हो जाता है। छाती भारी २ और श्वास प्रश्वास में कष्ट होने लग पड़ता है। अब आप ही विचारिये कि हृदय जो कि सारे शरीर में रक्त संचार करता है, और जो कि शरीर का सब से प्रधान अङ्ग है, और जिस की शक्ति पर हमें व्याधियों का भय

नहीं रहता है, जब वही निर्बल हो गया, तो हमारे स्वास्थ्य का क्या ठिकाना है? हम इस से यदि कृत्रिम रीति पर अधिक काम ले लें, तो इसका आराम अवश्य करना पड़ेगा। अपने आराम के समय वह शरीर में रक्त का सुसंचार न कर सकेगा। यदि हम उसके बाद फिर शराब पीकर उसकी गति को तेज करना चाहें तो, रोज़ २ की निरन्तर तेजी को वह सह न सकेगा। अन्त में यह यन्त्र (इञ्जन) किसी काम का भी न रहेगा। जैसे कि रेल के इञ्जन को स्टीम की अधिकता से यदि ४० मील के स्थान में ८० मील रोज चलाया जावे, तो अवश्य ही इसका अन्त शीघ्र हो जावेगा। शरीर में इस हृदय के निर्बल होने के कारण यदि रक्त संचार ठीक २ रीति से न होगा, तो निःसंशय वो कई प्रकार से कुम्हलाना आरम्भ हो जावेगा॥

**फुफ्फुस**—शराब फेफड़े की कोमलता में भी हानि पहुंचाती है। फेफड़ों का एक खंड जो कि नर्म स्पञ्ज की भांति होता है, यदि मद्य में डाला जावे, तो वह कठिन स्पञ्ज की तरह अनेक आकृतियां बदलता है। क्या यह विस्मयजनक बात नहीं है कि अंग्रेजों में जहां इतनी स्वच्छता का ध्यान है, जो कि हम लोगों के स्वप्न में भी नहीं आसकता, जहां पर कि वे उत्तमोत्तम भोजन करते हैं, खुली वायु में रहते हैं, भ्रमण और सानन्द रहना इत्यादि मानुषी जीवन के दैनिक आवश्यकीय कर्म्मों का पालन करते हैं, वहां देखिये:—विलायत में तपेदिक ( क्षयीरोग ) जितना होता है, और जैसा भयंकर होता है, ऐसा यहां नहीं होता। इसका कारण यही है कि ये लोग मद्य पीने से अपने फुफ्फुसों को नष्ट कर छोड़ते हैं। इनको थोड़ीसी वायु लगने से ही कास और श्वास आरम्भ हो जाता है। इनका दो चार दिवस के बुखार से ही चेहरा पीला हो जाता है, और प्रायः क्षयी के

लक्षण आरम्भ हो जाते हैं। हम ने प्रायः मद्यपायियों का परिणाम तपेदिक ( क्षयी रोग ) देखा गया है ॥

**मस्तिष्क और स्नायुजाल**—बेहोशी एक और लक्षण है। मैं एक समय यात्रा कर रहा था, और एक अंग्रेज़ भी मेरे साथ बैठा था, उसने बोतल निकाली और मद्य पीना आरम्भ किया। अन्त में वह अचेत हो गया और डगमगाती हुई टांगों से उठा, हमने पकड़ कर उसको ऊपर की सीट पर लिटा दिया, कुछ समय पश्चात् धड़ाम से नीचा गिरा हमनें फिर उठाया; पर आश्चर्य्य अधिक हुवा इस बात पर हुवा कि जब उसको इस आघात और व्यथा के कारण जो थोड़ी होश आगयी थी, उसने उसे दूर करने के अर्थ पुनः बोतल खोली और पीनी आरम्भ की और वहां पर जा लेटा। पश्चात् उसको कुछ सुधबुध न रही। उसके शरीर से एक २ वस्त्र उतार कर यदि कोई ले जाता तो आशा नहीं थी कि वह आंख उठा कर देखता भी। धिक्कार है ऐसे नशे पर जिसके पीने से अगले होश हवास भी गुम हो जाते हैं ॥

एक समय हमारे हां एक सरदार साहिब महमान आये, उनकी स्त्री उनके साथ थी। सुना कि आप मद्यपायी ( शराबी ), अफयूनी और भंगी भी हैं। रात्रि को जब आपके मस्तिष्क में खलल हुवा, लगे बकने; उनके कोई पांच शत्रु थे, उनको यह भान होता था कि वही आरहे हैं और इनको मारना चाहते हैं। उनको गालियां निकालते थे, मानो वह इनके सामने हैं। अभी कहते कि वह देखो सीढ़ी लगा रहे हैं, अभी ऊपर आकर मुझे मार देंगे। पुनः कहते, लगाओ तुम सीढ़ी जब तुम ऊपर चढ़ोगे मैं तुम्हें नीचे गिरा दूंगा। यहां तक कि मुझे आजगाया और कहने लगे कि पण्डित जी अपने सिपाहियों को कहो कि इन्हे पकड़लें। कभी कहते तुम बदमाशों की मैं प्रभाते खबर लूंगा। पण्डित साहिब साक्षी और वकील साहिब भी

यहां सोये हैं। कहां तक वर्णन करूं, प्रयोजन यह है कि सारी रात उनकी इसी कष्ट में व्यतीत हुई। कभी भयभीत होकर कांपते थे और कभी गालियां निकालते थे। प्रातः स्नान करके बाहर गये और कोतवाली में जाकर कह दिया कि मेरी स्त्री और मेरे पुत्र को अमुक अमुक मेरे शत्रु दरया पर लेगये हैं, और वहां मार कर फेंक दिया है। पुलीस दरया पर गई, सारा दिन ढूंढते रहे, अन्त में उन्होंने पूछा कि वह कहां उतरे हुये थे। उत्तर दिया कि ठाकुरदत्त के यहां। और आनन्द यह है कि उसको मेरा स्थान ही नहीं मिलता था। पुलीस वाले पूछ कर आये और हमें आश्चर्य्य हुवा जब कि उन्होंने पूछा कि सरदार साहिब की स्त्री और पुत्र को कौन लेगया, जो कि ऊपर थे। अस्तु उन्हें वापिस किया। सरदार साहिब बैठे २ कहने लगेः—पण्डितजी भूकम्प आगया है। मैंने कहा क्या भय है, बैठिये। तो देखिये आप क्या खूब फरमाते हैं:—

"हमाँ यारां दोज़ख़ हमाँ यारां बहिश्त" किन्तु पुनः एक मिन्ट पश्चात् ही लड़के को लेकर बाज़ार में उपस्थित हो गये। रात्रि समीप थी, अतः हम ने उन से प्रार्थना की कि हम आपका सत्कार करने योग्य नहीं हैं॥

डाक्टरों का कथन है कि अधिक मद्य पान से एक व्याधि डिलिरियम टरमिनस (Delerium Ternimes) हो जाती है। इस के लक्षण यह हैं:—अल्प क्षुधा, व्याकुलता, घबराहट, बात २ में झगड़ा, विभ्राम, मुख रुक्षता, शङ्कित स्वभाव, अव्यवस्थित चित्त, पुतलियां फैली हुई, नेत्र लाल, हस्तपाद में कम्प, मल युक्त जिह्वा, निर्बल परन्तु तेज नाड़ी, तृषा, कभी वमन, कोष्ठबद्धता, उदर, आमाशय और कलेजे पर पीड़ा, दिमाग़ में खलल, विविध शङ्काओं की उत्पत्ति, कभी उठना, कभी बैठना, कभी सर्प का भय, कभी भूकम्प, कभी चोर आते हुये देखना, कभी शत्रुओं से घेरा जाने की शिका-

यत, स्वप्न आने लगे तो विचित्र २, और फिर उठ कर ख़याली बातें बनाने लग पड़ना, ( जैसा कि हमारे सरदार साहिब की दशा थी ) जिधर मनोगति हो विना आवश्यकता चले जाना, इत्यादि २। प्रायः तीन चार दिन के बाद ये लक्षण हट जाते हैं, और उसके बाद दस बारह घन्टे गूढ़ी नींद आती है। और बड़ी निर्बलता रहती है। यदि कभी २ ये लक्षण सात दिन से भी अधिक रहते हैं। रोगी बड़ा भारी मद्यपायी है, या व्याधि कई समय हो चुकी है तो, निद्रा सात दिन के बाद नहीं आती है। शरीर की उष्णता अधिक हो जाती है, नाड़ी की गति द्विगुण हो जाती है, और अन्त में बुद्धि में बेहोशी और अङ्ग ऐंठना ( जिसको अंग्रजी में कौमा कहते हैं ) इत्यादि में फस कर मृत्यु को प्राप्त कर जाता है ॥

मद्य से मस्तिष्क निर्बल हो जाता है, स्मरणशक्ति दिन प्रतिदिन भागती है, इन्द्रियों में शून्यता आजाती है, व्यर्थ विचार आया करते है, जिन पर कुछ वश नहीं होता। एक बात पर चित्त स्थिर नहीं रहता, अन्त में मस्तिष्क और ( नखाह ) जो स्नायुजाल ( पट्ठों ) का मूल स्थान है, वह निर्बल हो जाते हैं। अतः कारणात् पट्ठे भी निर्बल हो जाते हैं, हस्तपादादि कांपते हैं, कम्पवात हो जाती है, इन सब का अन्तिम परिणाम उन्माद है। जो लोग यह कहते है कि हमारे राजा अंग्रेज भी तो मद्य पीते हैं, उन्हें हम बिलायत के पागलखानों की रिपोर्टें पढ़ने की सम्मति देते हैं, जिन से उनको पता लग जायगा कि कितने शराबी जो उन्मत्त हो कर मरते हैं। केवल यही नहीं कि वे स्वयं ही उन्मादी होते हैं, प्रत्युत अपनी

## सन्तति पर भी प्रभाव

छोड़ जाते हैं। उनकी सन्तान भी मद्य पीने वाली कुकर्मी और पागल होती है। एक डाक्टर साहिब का कथन है कि, मैंने ३१० पागलों

का अनुसन्धान किया, तो उनमें से १४८ शराब पीने वालों की सन्तानें थीं। मद्यपायियों के प्रथम तो सन्तति होती ही नहीं, होती है तो अल्पायु होती है, और निर्बल रोगयुक्त ही रहती है। जो अधिक मद्यपायी होते हैं, उनकी सन्तान कैदखानों पागलखानों और हस्पतालों में प्राण अर्पण करके अपने वंश का मूलोच्छेदन करती है। जैसेकि ताम्रकूट से शिथिलता और असहिष्णुता उत्पन्न होती है, मद्य से अभिमान और बेपरवाही के विचार उत्पन्न होते हैं। महाराज वेश्याओं के घर लाखों की जायदाद जमा कर देते हैं, किन्तु उस समय तक परवाह नहीं करते, जब तक कि चिलम भरने के लिये वहां नौकर नहीं हो जाते। धन का नाश, सन्तानाभाव, अपने शरीर का सत्यानाश की परवाह नहीं करते। इन कारणों से अवश्य ही उस वंश का तो ख़ातमा हो जाता है। निश्शेषता आजाती है। मद्यपायी की सन्तति कदापि बुद्धिमान् नहीं होती, एक डाक्टर साहिब कहते हैं कि मैंने अत्युत्तम रीति से अन्वेषण किया है कि पागलखानों में आधे से अधिक शराब के ही कारण विगड़े हुये होते हैं। मद्यपायी अपनी सन्तान के सम्मुख मद्य पीकर और भी हानि करते हैं। प्रथम तो उनके बच्चों के भीतर पैत्र्यसम्बन्ध ही से मद्य की लालसा होती है, और मस्तिष्क विकारयुक्त होता है, पुनः जब वह रात्रि को मेज़ पर बोतलें और गिलास सजा कर अपने पिता महाशय को अन्य महाशयों के साथ गुलछर्रे उड़ाते देखते हैं, तो अगले दिन सुभा होते ही अपने साथियों के साथ वैसे ही स्वांग रचते हैं और इधर उधर से थोड़ी बहुत मिल जावे तो पान भी कर लेते हैं। अभिप्राय यह है कि जब ये वड़े होते हैं तो खूब मद्यपान आरम्भ कर देते हैं, और शीघ्र ही पागल बन जाते हैं। ए मद्यपान करने वालो! यदि अपने लिये नहीं तो अपनी सन्तान के लिये भी मद्य त्याग नहीं करोगे?

डाक्टर कोप लैण्ड साहिब लिखते हैं कि मद्य से सावधान और

चञ्चल प्रकृति वाला मनुष्य रोगी और पागल हो जाता है। डाक्टर ट्राटर साहिब का कथन है कि, मद्य से हिस्टीरिया, आर्दितवात, उन्माद, पागलपन, अर्द्धाङ्ग वातादि रोग होते हैं। ऐसा भी हुआ है कि, मद्य की अवस्था में मस्तिष्क में रक्त संचय से मृत्यु होजाती है॥

## मांसपेशियां

मांस पेशियों पर मद्य का प्रभाव स्नायु जब मांस पेशियों को आज्ञा करते हैं, तो वे सब काम करते हैं। प्रत्येक का संचलन उन्हीं मांस पेशियों के द्वारा होता है। मांस पेशी जहां अपना कार्य्य त्याग दें, वही स्थल शून्य हो जाता है। मद्यपान के पश्चात् ही डगमगी सी चाल, कम्पती हुई जिह्वा, अस्थिर नेत्र, कांपते हुये हाथ, प्रकाशित करते हैं कि, मांस पेशियों पर बहुत शीघ्र मद्य का कुप्रभाव होता है। नशे और अचेतनता से मांस पेशियों पर कुछ वश नहीं रहता है, और मांस पेशियों की निर्बलता से तमाम शक्ति नष्ट हो जाती है। मद्यपायी के शरीर में वसा वृद्धि हो जाती है, और कई मद्यपायी बेडौल स्थूल होकर अपने स्वास्थ्य का नाश कर बैठते हैं॥

## वृक्क ( गुर्दे )

मद्य का गुर्दों पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अलब्यूमन नूरिया ( Albumin nuria ) एक प्रकार का प्रमेह रोग है, जिसमें मूत्र के साथ अलब्यूमन ( अंडे की ज़र्दी के समान पदार्थ ) आने लगता है। मूत्र आने में तो पीड़ा नहीं होती, परन्तु शरीर भीतर ही भीतर घुलना आरम्भ हो जाता है, पाचन शक्ति विकृत होजाती है, मुख में पीलापन रहता है, स्वास्थ्य चिन्ह कभी दृष्टि गोचर नहीं होते, कितना ही खावे मुख सुन्दर ही नहीं प्रतीत होता। गुर्दे मानासिक शरीर के भीतर मानो शोधनाध्यक्ष का कार्य करते हैं। ये यदि शिथिल और व्याधि युक्त हैं, और शोधन नहीं कर सकते तो

स्वस्थ होना सम्भव ही नहीं है। गुर्दे की निर्बलता से गुर्दों की नालियों में विकार आजाता है॥

## अन्य विविध भागों पर

रक्त प्रवाहिनी नालियां मद्य पान से भर जाती हैं, और अन्त में रक्त भ्रमण बहुत शिथिल हो जाता है, और रक्त में वसा की मात्रा अधिक हो जाती है। मद्यपायियों की शारीरिक उष्णता अन्त में बहुत घट जाती है, और सर्दी गर्मी का प्रभाव मद्यपायी पर अधिक होता है। डाक्टरों की सम्मति है कि, मद्यपायी (येलो फीवर) (Yellow fever) में अधिकश: ग्रस्त रहते हैं:—कतिपय पुरुषों का यह कहना झूठ है कि, मलेरिया (मौसमी बुखार) इससे नहीं आता है। कोई कारण नहीं है कि, जब सब शरीर निर्बल है, तो प्रत्येक व्याधि तत्काल प्रभाव न डाले। न जाने क्यों इस समय सर्व साधारण का यह विचार होने लगता है कि शराब प्लेग से सुरक्षित रखती है। सम्भव है कि क्योंकि मद्यपी कठोर मन का होता है, अत: उसके हृदय पर प्रभाव न करें, परन्तु यदि जर्म्ज़ (प्लेगकृमि) भीतर प्रवेश कर जाएं, और प्लेग का भय होजावे, तो अन्य की तो बचने की आशा है, परन्तु शराबी तो यमधाम ही को सिधारेगा, क्योंकि उसके भीतर बल तो है ही नहीं, जो प्रतिबन्धक हो सके। इसी प्रकार कुछ मनुष्यों का अनुमान है कि देश परिवर्तन से जो जल नहीं पचते हैं, तदर्थ शराब लाभदायक है। मैं कहता हूं सम्भव है कि, उपयुक्त हो, और उस से जल पाचन हो जाता हो, परन्तु एक लाभ के वास्ते इतनी हानी करने वाले पदार्थ का उपयोग बुद्धिमान् कदापि नहीं कर सकते। वैसे भी भोजन से प्रथम सुंठी और हरीतकी के क्वाथ में घी मिलाकर पीने से अथवा यवक्षार को गरम जल से कभी २ खाने से जल अवश्य पच जाता है। तथा इसी प्रकार की अन्य कई सहज

युक्तियां कुछ दिवस पर्य्यन्त करने से हर प्रकार का जल पच सकता है। फिर भी इस सत्यानाशी शराब का प्रतिरोध, छोड़ना और छुड़ाना यदि बुद्धिमान् न करेंगे तो कौन करेगा ? कतिपय मनुष्यों का कथन है कि शीतकाल में शीत से हमारी रक्षा करता है। परन्तु देखिये, इस पर भी ध्यान दीजिये कि, सरजौन फ्रंकलिन जब (बहरमुज़मिना) बरफ के समुद्र में जिससे अधिक शीत किसी स्थल पर हो ही नहीं सकती, गये तो डाक्टरों ने थोड़ीसी भी मद्य अपने साथ किसी को न लेजाने दी थी। रूसी डाक्टर नल साहिब लिखता है कि जब शरद ऋतु में सेना प्रस्थान करता है तो, मैं किसी को मद्य पीने नहीं देता। केवल क्षुद्रज्ञानी मनुष्य ही ये देखते हैं कि, कुछ समय के लिये हृदय की गति अधिक होने से जो एक हानिकारक उष्णता उत्पन्न होती है; और केवल इसी कारण से शरद् ऋतु में मद्य लाभदायक है। किन्तु उनको उसी समय के बाद का ध्यान नहीं रहता। सब डाक्टरों की सम्मति है कि मद्यपायी शीत सहन नहीं कर सकता। लंडन में जितने शीत लगने से इन मद्यपायियों के रोग उत्पन्न होते हैं, व डाक्टरों की पुस्तकों में प्रकाशित होते रहते हैं। बस अभी साहिब बहादुर बाहिर गये हैं, ऋतु अच्छी है, मार्ग में ही बादल आगये, क्या मजाल जो साहिब बहादुर फौरन सख्त बीमार न हों। उस दशा में जब कि हमारे लोग जो मद्यपान नहीं करते नग्न ही वर्षा में दौड़ते फिरें तो किसी प्रकार की भी हानि नहीं है। किन्तु मद्यपायी इस वार्ता का क्या उत्तर देते हैं कि शरद ऋतु में शीतप्रतिबन्धन के वास्ते पान करते हैं तो, पुनः ग्रीष्म ऋतु में सवर्था त्याग क्यों नहीं करते। मद्य अत्यन्त शुष्कोष्ण है, और ग्रीष्म ऋतु में किसी प्रकार से भी उत्तम नहीं हो सकता है। फिर छोड़ते क्यों नहीं ? उत्तर क्या दे सकते हैं ? वह तो केवल बहाना था ग्रीष्म ऋतु में उष्ण देशों में मद्य विशेष हानि पहुंचाती है, उष्णता थोड़ी भी सहन

नहीं हो सकती है । मस्तिष्क पर शुष्कता चढ़ी रहती है, उन्माद आ जाता है, उष्णता में काम नहीं हो सकता। धूप में तो एक पैर चलना असम्भव सा हो जाता है। यर्कान के चिह्न आरम्भ हो जाते हैं कभी कभी वमन आया करती है। डाक्टर कार्पैन्टर साहिब लिखते हैं कि, मैं २४वीं रेजीमेन्ट के साथ मुलाज़िम था। उष्ण देश में जब इस सेना को काम करना मिला तो परहेज़ करने वाले तो स्वस्थ रहे, किन्तु मद्य पीने वालों को असीम कष्ट हुआ। इसी प्रकार अन्य कई सैनिकडाक्टरों का कथन है मद्यपायियों का कथन है कि थोड़े से मद्यपान से उनके मस्तिष्क और हृदय में प्रसन्नता रहती है और विचार शुद्धि होकर कार्य्यों में समुद्यत होते हैं। खेद ! हा खेद ! यह नहीं समझते कि मद्य ने उनके हृदय और मस्तिष्क को निर्बल कर दिया है, विचारों पर उनका वश नहीं, कार्य्य संनद्धता उनकी नहीं होती, अतएव मद्य की आवश्यकता होती है कि, कृत्रिम रीति से वह थोड़ा सा सञ्चालक हो जावे। नशे के उतरने के बाद जो दशा होती है, वह हमारे कथन की पुष्टि करती है, उस समय हृदय और मस्तिष्कादि वास्तविक दशा प्रकट करते हैं और उनको ज्ञात होता है कि वह मद्य के बिना मिट्टी के पुतले हैं ॥

ईश्वर ने मानव शरीर के भीतर गति शील स्थलों में श्लेष्म भर दिया है। सारे जोड़ों में श्लेष्म होता है, जैसे कि किसी मशीन के पुरज़ों को ठीक २ चलाने के लिये उनमें स्निग्धता पहुंचाई जाती है। मद्यपान के अनन्तर कृत्रिम उष्णता और उत्तेजन से जो शरीर रूपी यन्त्र का सञ्चालन होता है, उसमें श्लेष्म का अधिक व्यय हो जाता है। और स्वयं मद्य जो कि शुष्क तथा गर्म है, प्रत्येक स्थल पर प्राप्त होकर उसको और शुष्क कर देती है। अन्त में यह होता है, कि श्लेष्म का व्यय होता जाता है, तथा अनुचित घर्षण से

फिर विकार होता जाता है। मद्य का भूत जब सिर पर सवार होता है, और चैतन्य का नाश कर स्वयम् वहां प्राप्त होता है, तो कुछ न कुछ तो मनुष्य करेगा ही। सब लोग जानते हैं, माता, पिता, भगिनी, और वृद्ध पुरुषों के सन्मुख अनुचित शब्द बकना, गालियां निकालना, अधर्म्म कर्म्मों के विचार उत्पन्न करना, और ऐसे शब्द जो कदापि कोई वृद्ध पुरुषों के सम्मुख नहीं निकाल सकता, निकालना, सुना जाता है। एक ग्राम में दोनों बाप बेटे मद्यपायी थे, और जब दोनों ही पर मद्य का भूत सवार होता ते लड़ते झगड़ते, यहां तक कि एक कहता कि तू मेरी प्रिया के समीप क्यों गया था? और दूसरा कहता कि तू क्यों गया था? जिस समय नशा उतर जाता, पुनः अपने २ कार्य्य में लग जाते। लिखा है:—"कि केवल सन् १८८३ ई० में इसी मद्य की कृपा से सिर्फ़ बर्तानियां में दो लाख घटनायें आक्रमण (हमला) करने की, और सात हज़ार घटनायें, स्त्री त्याग तथा परस्पर पृथक्त्व की हुईं। ५१ सहस्र स्त्रियां बन्दी गृह में भेजी गईं। यह तो दशा है, फिर भी डेढ़ अर्ब से अधिक दुष्ट मद्य पर तुले हुए हैं॥

## गुण भी हैं

कोई लोग प्रमाण देते हैं कि मद्य नज़ला, प्रतिश्याय और श्लेष्मिक रोगों को उपयोगी है। जैसे बङ्गसेन में लिखा है:—कि अर्श (बवासीर) संग्रहणी, और कुच रोगादि को लाभकारी है। थोड़ी सी क्षुधा भी बढ़ जाती है। हम कहते हैं:—कि संसार में कोई वस्तु निरर्थक नहीं है, और इस में भी बीसों लाभ हैं। यदि आप को धर्म के विरोध का डर नहीं है, तो अवश्य रोग के अर्थ ही वैद्य सम्मति लें। परन्तु यदि ज्वरों के वास्ते चिरायता पान किया जावे, तो फिर ज्वर उतरने के बाद भी क्या आयु भर चिरायता पीते रहना चाहिये? मद्य का उपयोग रोग निवृत्ति के पश्चात् त्याग देना

उचित है। कोई पुस्तक, कोई वैद्य इसके व्यसनी बनने की शिक्षा नहीं देते। डाक्टर बहुधा रोगों में जहां कि हृदय की गति को अधिक करने की आवश्यकता पड़े। और रोगी घुट रहा हो, बराण्डी पान करा देते हैं। किन्तु उनके वास्ते भी विशेष शिक्षायें हैं, अल्प मात्रा में किसी व्याधि में देने से यह और औषधियों की भांति बहुत उत्तम प्रभाव करती है, इन्हीं लाभों को दृष्टि में रख कर कतिपय महाशय प्रथम थोड़ा सा मद्य पीना आरम्भ कर देते हैं, परन्तु जैसाकि पहिले कहा जा चुका है, उन लोगों की वह मात्रा पीछे से सर्वथा स्थित नहीं रहती, और दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। यह पुस्तक इस विषय पर नहीं है, अतः मद्य को रोगों में वर्तने के लिये जो आवश्यकीय बातें हैं, उनको यहां उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं समझी गई॥

**मुफर्राएअलकुलूब**—प्रसिद्ध यवनानी ज्ञान की पुस्तक में लिखा है:— मादकद्रव्यों का इतना पीना कि नशा उत्पन्न करने वाला हो, कुरान में भी वर्जित है। और वैद्यों के समीप भी अतिशय निषिद्ध है। इस वास्ते कि नशा इन्द्रिय और मन में तमोगुण उत्पन्न कर देता है, और जब अधिक मात्रा में लिया जावे तो शरीर को नष्टभ्रष्ट कर देता है। यहां तक कि वह मृत्यु का भी दूत है॥

## खुमार

यवनानी हिकमत में कई प्रकार के शिरोरोगों में से एक प्रकार की मद्य से उत्पन्न हुई २ शिरःपीड़ा भी है। इसके सम्बन्ध में "तिब्बएअकबर" से निम्नलिखित उद्धारण देना पर्य्याप्त होगा है॥

"जानलो कि खालिस मद्यपान, विशेषतः जब कि वह पुराना और गाढ़ा हो, तथा स्वच्छ न हो, खुमार के कारण शिरःपीड़ा उत्पन्न करता है। मद्य पीने के पश्चात् आमाशय में यदि पक्क न

होवे और उसका कुछ अवशिष्टभाग आमाशय में रह जावे, तो उससे उष्णता के परमाणु ( अवख़रा ) मास्तिष्क की ओर उड़ते हैं, वे इकट्ठे हो कर शिर में पीड़ा कर देते हैं। इस अवस्था को 'खुमार' कहते हैं। इसका लक्षण यही है कि, मद्य पीने के अनन्तर उत्पन्न हो। फिर यदि श्लेष्म अर्थात् रतूबत इस अवशिष्टभाग के साथ संयुक्त हो जावे तो शिरोर्ति रोग आरम्भ हो जावेगा। और शिर अत्यन्त भारी होगा, विशेषतः यदि रोगी की कफ प्रकृति हो। और यदि इस अवशिष्टभाग से पित्त मिले, तो वमन और ग्लानि होगी। एक मनुष्य खुमार युक्त देखा गया, उस पर ग्लानि का प्रभाव था, फिर उसने एक वमन किया तथा उसी वर्ण का मूत्र किया, पश्चात् उसके मुख और जिह्वा में फुंसियां निकल आईं। और उसी दिवस मृत्यु पाई। जितने समय तक जीवित रहा, मतलाता रहा, यहां तक कि जिह्वा बाहर निकल आई, फिर सूज गई, पश्चात् नकसीर निकली और मर गया" ॥

## भोगशक्ति ( ज़ौफ़बाह )

कई मनुष्यों का विचार है, कि मद्य भोगशक्ति को उत्पन्न करता है; पर यह मूर्खता है। मद्यपान से वीर्य में गति उत्पन्न होती है, और पुनः एकत्रित होकर निस्सरणोन्मुख होती है। सङ्ग करते ही वह सब निकल जाता है। और जो कुछ जोश के कारण प्रथम होता है उसको भोगशक्तिवर्धक कहा जाता है। वास्तव में यह भोगशक्ति का नाशक है, क्योंकि वीर्य को उसी क्षण निकालने और अवशिष्ट को शुष्क करने ( अतःएव मद्यपी को द्वितीय वार स्त्रीसंग में अधिक समय लगता है , से शनैः २ नष्ट करता है। पश्चात् केवल मद्य के द्वारा वा ऐसी अन्य उत्तेजक औषधि द्वारा ही स्वल्प सा जोश आसक्ता है, वर्ना नहीं। इस लिये यह विचार सर्वथा असत्य है। मद्य जब आमाशय, अन्त्रियां, हृदय, फुफ्फुस, वृक्, ( गुर्दा ) मसाना, आदि सबको

निर्बल और विकृत करता है, तो क्या कारण है कि वह भोगशक्तिवर्धक हो ? हानियों के सिवाय जिसमें कोई लाभ न हो, ऐसी वस्तु से सम्बन्ध रखना क्या अनुचित नहीं है ?

## अंग्रेज भी तो पीते हैं

कतिपय ज्ञानान्ध मनुष्य यह कहते हैं कि देखो अंग्रेज महोदय गण जो हमारे बादशाह हैं, और ऐसे ज्ञानी हैं, वे भी मद्यपान करते हैं। अस्तु यह तो मिथ्या कथन है ही, कि जो ऐसे ज्ञानी हैं वह मद्य पीते हैं, क्योंकि सब बड़े माननीय पुरुष नशा से परहेज़ करते हैं, और अगणित डाक्टर इसके विपरीत सदैव लिखते रहे हैं। अन्य साधारण जन अवश्य अधिक मद्यपान करते हैं। उनके दैनिक जीवन का भाग मद्य है, न मद्य पीने वालों को वहां के लोग नीचदृष्टि से देखते हैं। उच्च श्रेणी के लोगों में से जो मद्य पीते हैं वह अत्यन्त थोड़ी और सर्वथा परिमाण से पीते हैं और वह भी ऐसा कि जिसमें अल्कोहल केवल नाममात्र हो। तिस पर भी आप यह विचार न कीजिये, कि अंग्रेज लोग सब स्वस्थ हैं। अंग्रेजों के उत्तमोत्तम आविष्कार ऐसे लोगों पर निर्भर नहीं है, जिनको आप प्रतिसमय मदोन्मत्त देखते हैं। वे और ही बैठे हैं। इन बेचारों को कभी उर्दू भी सीखना पड़ जावे तो बीस वर्ष में भी नहीं सीख सक्ते, जिस अवस्था में कि उन की अंग्रेजी भाषा हम दो वर्ष में सीख सकते हैं। जितने रुपये साधारण अंग्रेज़ औषधियों और डाक्टरों की फ़ीस पर व्यय करता है, इतना हमारे बड़े धनाढ्य का भी व्यय नहीं होता होगा। स्मरण रखिये कि इनके रहने के ढंग और इनकी जीवनपद्धति हम लोगों से बहुत उच्च अवस्था में हैं। इसी से वे इतना मद्य पीकर भी बचे हुये हैं। यदि हम लोग इतना पीने लग जावें, तो निर्बीज ही हो जावें। वे खुली वायु खाते हैं, व्यायाम करते हैं, बड़ी आयु में विवाह करते हैं। उत्तम वस्त्र धारण, और उत्तम खानपान इनका साधारण काम है। इनमें से

हम को कुछ भी प्राप्त नहीं होता है, अतः हम सर्वथा नाश को प्राप्त हो जायेंगे यदि इनके अनुगामी बनेंगे । अफसोस ! खेद का स्थान है ! हम लोगों पर कि हम उनकी बुरी बातों को तो शीघ्र अनुकरण करने लगते हैं, और उत्तम बातों पर जरा ध्यान भी नहीं देते । चुरट मुख में, और बोतल जेब में, बाबुओं का यह फ़ैशन होता जाता है । तमाम लोग नकारे और नपुंसक होते जाते हैं । तथापि मद्य का परित्याग नहीं करते । अभी थोड़े से मद्य ने ही यह दशा करदी है, यदि पूर्णतया अंग्रेजों का अनुगमन हो गया, और जब न दोस्तों मित्रों का, न धर्म का भय रहा, खुल्लमखुल्ला लोग मद्य पीने लगे, तो बस सत्यानाश है । हम में से जो लोग मद्य नहीं पीते हैं, वे उन अंग्रेजों से जो मद्य पीते हैं, कई गुणा अच्छे हैं । अंग्रेजों के दिखावटी रंग किये हुये लाल चेहरे देख कर मत भूलो ! दो दिन के ज्वर आने पर उनकी शक्ल जाकर देखो, तो मुर्दापन दिखाई देगा । कभी अंग्रेज पुरुष और स्त्री को वस्त्र रहित देखो, तो ज्ञात हो जावेगा कि किस भांति अस्थिकङ्काल ( हड्डियों का पिंजरा ) एकत्रित किया हुआ है । साधारण रोग जिन का हम ध्यान भी नहीं करते, उनके लिये भयंकर हो जाते हैं, क्योंकि इनका आभ्यन्तर भाग विकारों से भरा रहता है ॥

**महोदयगण !** मेरा कहना नहीं मानते, तो उनका कहना ही मानो, जो डाक्टर उनके भाई उनको हर समय शिक्षा करते रहते हैं। हुक्का और चुरट के सम्बन्ध में मैंने बीसों डाक्टरों की संक्षिप्त सम्मतियों का उल्लेख कर दिया, उनको जरा ध्यान से पढ़िये ॥

हां ! एक बात और निवेदन करूं मद्य शैतान की दाईं भुजा है, इससे किसी को भी इन्कार नहीं है । यदि यह सत्य है, तो ऐ ! भारतवासियो ! मैं बड़ों के नाम पर तुमसे अपील करता हूं कि हमारा भारत देश सदाचार की उन्नति में प्रसिद्ध रहा है, धर्म की चर्चा सदा

से यहां रही है। विलायत विषय भोग का पुतला है, जो वहां विषय भोग में जीवन व्यतीत नहीं करता, वह मृतप्राय है, उसने संसार में व्यर्थ जन्म लिया है। इस वास्ते हुक्कापान, मद्यपान, नृत्य आदि बीसों बातें इनमें ऐसी ही पाई जाती हैं। विलायत के समाचार पत्र भोग विलास की पिपासा को दूर करने के लिये बहुतेरा प्रयत्न करते हैं। वहां पुरुष और स्त्री भोग विलास के वास्ते विवाह करते हैं। अतः वे जो करें करने दो, अन्त में या तो वे अवश्य समझ कर सन्मार्ग पर आवेंगे, अथवा अवनति पावेंगे। तुम बड़ों के नाम पर धब्बा न लगाओ। विषय भोग से तुम्हारे ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में पर्वत से भारी रुकावट है। तुम शैतान से दूर भागते हो, मद्य उसकी दाईं भुजा, है। ज्ञान की तलवार से उसे काट दो वह तुम से बहुत दूर चला जावेगा॥

## लोग कैसे सीखते हैं॥

हमारे पास प्रतिदिन जो डाक आती है उससे, और जो महाशय यहां आते हैं उनसे, दोनों प्रकार से हमने जहां तक अन्वेषण किया, यही पता लगा है कि कुसंगति ही ने केवल मद्य प्रत्युत प्रत्येक दोष का कारण होती है। मैं एक पुरुष को जानता हूं जो कि बड़ा परहेज़गार और पवित्र था। यहां तक कि इसके सम्बन्ध में मद्यपान की आशंका भी करना चन्द्रमा पर थूकने के समान था। मैं अकस्मात् उसका एक पत्र पढ़ कर विस्मित हो गया, जिसमें उसने लिखा था:—मुझे एक निमन्त्रण मिला। मेरे मित्रों ने मुझे पीने को विवश किया, मैंने पी तो नहीं, पर मुख ही लगाया" यद्यपि अभी तक आरम्भ न हुआ था, परन्तु कौन कहता है कि, कल मित्रों के विवश करने से आरम्भ न हो जावेगा? प्रत्येक को प्रथम मद्य जबरदस्ती ही पिलाया जाता है। यही हाल उसका भी हुआ। कुसङ्गति मद्यपान की शिक्षा देती है। कुसंगति ही वेश्या गमन सिखाती है। कुसंगति

ही हस्तमैथुन सिखाती है। कुसंगति ही अक्षक्रीड़ा ( जुआ ) सिखाती है। सब कुछ कुसंगति ही करती है । इसलिये कुसंगति से बचते रहो। जिनको तुम कुकर्मी समझते हो, उनके निमन्त्रण स्वीकृत न करो। मनुष्य सब कुछ औरों से ही सीखता है । सज्जन पुरुषों के समीप बैठो, जिससे कि नेकी और भलाई ही सीखो। कई लोग इस को औषधि के ही बहाने से आरम्भ करते हैं। प्रतिश्याय हुआ, और मित्रों ने कह दिया कि एक घूंट मद्य का पीलो। होते २ बोतलों तक वारी आगई; क्योंकि:—"छुटती नहीं है मुख से यह काफ़िर लगी हुई" ॥

## मद्य और पानी

जैसाकि लिखा गया है कि, कतिपय मनुष्य जल के स्थान में भोजन के साथ मद्य पीते हैं। मनुष्य के शरीर में अनुमानतः ⅔ वरन् इस से भी अधिक पानी है। मनुष्य के शरीर को पानी की बहुत आवश्यकता होती है। ताज़ा पानी स्वास्थ्य प्रद होता है। निर्मल जल रसायन है, प्रसादक है। पानी की प्रशंसा ही यदि करने लगें तो एक बड़ी पुस्तक चाहिये। यदि एक मद्य की बोतल और एक पानी की बोतल दोनों में एक २ टुकड़ा पके मांस का डाल दें, और दोनों को हिलायें, तो देखेंगे कि, पानी वाला टुकड़ा जल्द गल जाता है; मद्य वाला शुष्क, और संकुचित हो जाता है, और गलता नहीं है। इससे स्पष्ट है कि मद्य से आमाशय में जाकर मांस कठिनता से गलेगा और आमाशय का कार्य अधिक करना होगा। यद्यपि इसी का जोश कुछ समय तक उसको चलाता जावेगा, परन्तु अन्त में सर्वथा निर्बल हो जावेगा। पानी सर्द तर है, और मद्य शुष्कोष्ण है। ज़मीन और आसमान का फ़रक है। हमको अपने अङ्गों को चलाने के लिये और उनको गरम करने के लिये पानी शर्दतर की आवश्यकता है, न कि शुष्क उष्ण की। रक्त में जब तरी अल्प हो

जाती है, हमारी जिह्वा, कण्ठ, मुख शुष्क होने आरम्भ हो जाते हैं। और इसी का नाम पिपासा है। अब आप ही कहिये कि हम को मद्य की शुष्कता की आवश्यकता है, या पानी की तरी की ? एक डाक्टर लिखता है:—यही अवस्था उस मनुष्य की है, जो कार्य्य के समय मद्य पीता है। वह कुछ समय पर्य्यन्त तो उत्तमतया कार्य्य करता जाता है, परन्तु स्वल्प ही समय के पश्चात् वह थक जाता है, और आराम चाहता है। तब या तो एक गिलास और पीना पड़ेगा और या अवशिष्ट कार्य्य ऊंघते २ ही होगा, क्योंकि इसने संचय के अतिरिक्त अपना व्यय ही किया। सब लोग अनुभव कर सकते हैं, कि यदि वह उत्तम भोजन करें तो दिन भर बड़ी उत्तमता और तेज़ी से कार्य्य कर सकते हैं। परन्तु यदि वे भोजन के साथ एक गिलास बराण्डी का पी लेवें, तो थोड़े समय पर्य्यन्त तेजी से कार्य्य कर सकते हैं, और फिर आधी तेजी से। एक बात बड़ी आश्चर्यजनक है कि जो उष्ण स्थानों में कार्य्य करते हैं, और प्रस्वेद से लिप्त रहते हैं, वे भी मदिरा मांगते हैं, और जो शीत से शून्य हो जाते हैं, वह गर्मी पैदा करने के लिये ऐसा करना चाहते हैं। किसकी मानें ? वस्तुतः दोनों झूठे हैं, और मदिरा दोनों में से किसी को भी उपयोगी नहीं है ॥

## आयु ॥

अनुभव से सिद्ध होगया है कि मद्यपायियों की आयु सामान्यतः पैंतीस वर्ष छे मास की होती है, परन्तु न पीने वालों की आयु सामान्यतः ६२॥ वर्ष है; अर्थात् मद्य पीने से पूरी से आधी रह जाती है। लाइफ़ इन्स्योरैन्स कम्पनियों (जीवन का बीमा करने वाली कम्पनियों) ने सिद्ध कर दिया है कि मादकद्रव्यों को व्यवहार में लाने वाले परहेज़गारों से अल्पायु होते हैं। एक साहिब लिखते हैं "कि महामारी

वा दुर्भिक्ष कोई ऐसा भयंकर नहीं है, जैसा कि मदिरापान । मद्यप थोड़े समय में ही स्थूल होकर मदिरा का पीपा हो जाता है । मुख पर फिटकार बरसने लगती है। फुफ्फुस और मस्तिष्क निर्बल, शिरःपीड़ा, आंखों में खुमार, धैर्य्य हानि, पाचनशक्ति का विकार, स्मरणशक्ति का नाश, नेत्ररोग, दृष्टिहीनता, इत्यादि साधारण बातें हैं । मस्तिष्क और वात सम्बन्धी रोग, यथाः—अपस्मार, अर्दित, अर्द्धाङ्गवात, कम्पवात, कलेजे की बृद्धि, पित्ताधिक्य, धड़कन, इत्यादि हो जाते हैं । क्रोध और चित्त का अव्यवस्थित रहना बढ़ जाते हैं, और आत्मोन्नति का द्वार निस्सन्देह बन्द हो जाता है । पाशविक वृत्तियां प्रबल हो जाती हैं । अन्ततः इनका परिणाम शीघ्रमृत्यु है" ॥

ब्रिटिश असोसियेशन के एक जलसे में डाक्टर राबिनसन् साहिब ने स्पष्टतया सिद्ध किया कि पथ्यभोजी की अपेक्षा मद्यप की आयु छोटी होती है, पथ्यभोजी अधिक काल पर्य्यन्त शक्तिवान् रह सक्ता है । कोई भी मद्यप दीर्घायु नहीं प्राप्त कर सकता। सारे ही अधिक आयु वाले पथ्यभोजी ही रहे हैं ॥

**डाक्टर हूफ्लैण्ड साहिब** व्यङ्गता से एक स्थल पर बूढ़े और स्वल्पायु होने के उपाय बताते हुये लिखते हैं:—चिन्ता, भय, और दुःख में निमग्न रहो, अधिकशः मदिरा और मादकद्रव्यों का सेवन करो । शारीरिक विकृति और निर्बलता के लिये ये बड़े अनुभूत योग हैं । प्रसिद्ध प्रोफेसर ब्राइड लेनर्ड साहिब ने आयु कम होने के कारणों में मद्य का स्पष्टतया वर्णन किया है ॥

कप्तान रेले साहिब लिखते हैं "कि अरबिस्तान के जंगलों के बहुत से जनसमूह केवल अपनी ऊंटनियों के दुग्धपान से अपना जीवन व्यतीत करते हैं । जो लोग इस भोजन का नियम से उपयोग करते हैं, वह कदापि रोगग्रस्त और चिन्तायुक्त नहीं होते । पूरे स्वास्थ्य तथा शक्ति के साथ लम्बी आयु प्राप्त करते हैं । वह मद्य की

कदापि स्पर्श नहीं करते हैं, क्योंकि उनके मत में यह वस्तु अधर्म-युक्त कही गई है ॥

ओयूथम साहिब कहते हैं "आर्य्यवर्त्तीय ऋषि मुनि केवल फलाहार और ताज़ी तरकारी खाते थे। और वर्णन किया जाता है कि ये लोग डेढ़ २ दो २ सौ वर्ष पर्य्यन्त जीवित रहते थे" ॥

प्लूटार्क कथन करता है "कि प्राचीन लोग इस प्रकार ठीक व्यवस्था से रहते थे कि जब १२० वर्ष के हो जाते, तब उनका बुढ़ापा आरम्भ होता था। उनके हाथ पैर और जङ्घा सदैव नग्न रहते थे। फलाहार खाते, और निर्मल पानी पीते थे"। पाल एक उपदेशक था, उसने १७८ वर्ष की आयु प्राप्त की। अत्यन्त ही साधारण खाना खाता, खजूर रोटी और पानी पर निर्वाह करता था। कहां तक लिखता चला जाऊं। मेरे पास करीब १०० डाक्टरों की सम्मतियां हैं। पुस्तक बढ़ रही है। बुद्धिमानों को संकेत पर्य्याप्त है। जरा नेत्र उठा कर देखने से स्वयं ही ज्ञात हो जावेगा, कि कोई मदिरा पीने वाला लम्बी आयु नहीं प्राप्त करता है ॥

मनुष्यों की शराब के कारण हुई २ मृत्यु की गणना भी दिखाई जा सकती है। पर उससे क्या लाभ होगा। उपर्युक्त वर्णन यदि पर्य्याप्त नहीं तो फिर आप से मदिरा छुट चुकी! धर्म्म पुस्तकों में स्पष्टतया लिखा है "कि मद्य सीधा मृत्यु मार्ग है" ॥

एक फारसी वाले ने शराब शब्दस्थ वर्णों के खूब अर्थ किये हैं--

श--से शहवत परस्ती ( विषय भोग ) शैतानी ( पिशाचता ) शरारत ( लुच्चापन ) ॥

र--राग़िब है बुरे अफ़आल की ( दुष्कर्मप्रेरक ), राहनुमा कंजर-खाना का, और रुसवा ( बदनाम ) करने वाली है ॥

अ--अहमक़, उल्लू, अफ़सदो, ( शोकातुर ॥

व—बेहोशी ( अचेतना ) बेइज्जती ( अपमान ) बेवकूफी (मूर्खता) बदमस्ती ( खरमस्ती ) ॥

अय ! मदिरा पान करने वालो ! इस पुस्तक को पढ़ने के अनन्तर क्या छाती पर हाथ रख कर शपथ से आप कह सक्ते हैं कि मद्य को निस्सन्देह आपने अनुचित नहीं मान लिया हैं ? सचमुच मान लिया है, परन्तु खेद का स्थान है यदि फिर भी आप न छोड़ सकें। मद्य छोड़ने के लिये मानसिक शक्ति की अत्यन्त आवश्यकता है। व्यसन दूसरी प्रकृति होती है, व्यसन छोड़ना असम्भव सा है। तथापि मैं यह कहूंगा कि यदि आप चाहें तो एक क्षण में मद्य परित्याग कर सकते हैं। मादकद्रव्यों को छोड़ने के लिये औषधियां एक बहाना होती हैं। वस्तुतः मानसिकशक्ति ही से उसकी निवृत्ति होती है। अब मैं कहां तक लिखता जाऊं ज्यों २ लिखता हूं, लेखनी आगे ही आगे बढ़ती है। मद्य ने बिल्कुल सत्यानाश कर दिया है। इसकी हानियों के पूर्ण उल्लेखयुक्त इतिहास की पूर्त्ति मेरी इस लेखनी से जो कि एक लघुपुस्तक में बन्द है, नहीं हो सक्ती। अतः इस विषय को यहीं पर समाप्त करके अब—

## काली बला—अफीम

का वर्णन आरम्भ करता हूं। अफीम को संस्कृत में अहिफेन, अंग्रेजी में ओपियम (Opium), अरबी में लबनअलखशखाश, फारसी में तिरयाक, यूनानी में अपयून, तबरेजी में तिरयाक, सिरयाली में वईआलियोन, व इसकीकल कहते हैं। अफीम खशखाश के (आपू के) पौदे से निकलती है। डोडा पोस्त जिसमें दाने (खशखाश) भरे होते हैं, उसको चाकू से चीरते हैं, तो गाढ़ा रस इनमें से निकल कर बाहर आजाता है, जिसका नाम अफीम है। भारतवर्ष, एशिया कोचक, चीन, स्याम, अनाम आदि देशों में अधिक होती है। अमरीका

में भी इसकी खेती होती है। डाक्टरी अन्वेषण है कि अफयून में ९ प्रतिशत मारफ़िया ( अफीम का सत्व अत्यन्त विष ) होता है। और कोडामाइन, नारकोटीन, नारसीन, मीकोनीडाइन, मीकोनिक एसिड इत्यादि अन्य बहुत से भाग भी पाये जाते हैं॥

किन्तु बड़े २ भाग जिनके होने से ही अहिफेन का अस्तित्व समझा जाता है, मारफिया और मीकोनिक एसिड हैं। नारकोटीन जो मदिरा में पाई जाती है, यह मादक नहीं है। मारफिया ही अत्यन्त विष, निद्रोत्पादक और मादक है। नारकोटीन पुष्टिकर्त्ता और बारी के ज्वर को रोकता है। भारत की अफयून में नारकोटीन अधिक होता है। और इसी वास्ते बहुधा रोगों में अन्य औषधियों के साथ यह बरती जाती है। इसको उचित रीति से उपयोग करने पर अनेक लाभ होते हैं। परन्तु नशे के लिये उपयोग करने से लाभ भी नहीं रहते हैं, और हानि ही हानि अधिक दीख पड़ती हैं। मारफिया जो अफयून में होता है, यह किसी देश की अफयून में तो २० प्रतिशत और किसी में ५ प्रतिशत पाया जाता है। अब ध्यान दीजिये कि इन दोनों अफयूनों के नशा में कितना अन्तर होगा। भारत की अफयून में प्रायः ४ से ९ प्रतिशत मारफ़िया होता है। अफयून में एक भाग जो कि केवल १ प्रतिशत हो सक्ता है कुचला सत्व के तुल्य होता है, इसी कारण से इसके खाने पर ऐंठन आदि हुवा करते हैं॥

## हत्या

आर्य्यावर्त्त में आत्महत्या से मृत्यु प्रायः अफ़ीम से ही होती है। यदि विष अन्य किसी को दिया जाता है, तो संखिया व्यवहार में लाते हैं। भारत में जितनी मृत्यु विष से होती हैं, उन में से ४० प्रतिशत अफ़ीम की है। बच्चों की मृत्यु बेसमझी से हो जाती हैं।

स्त्रियां सुलाने के वास्ते उनको प्रति दिन अफ़ीम दे देती हैं। कभी अधिक दी जावे, वा दो बार दी जावे, अथवा एक पहिले दे जावे, और दूसरी फिर दे देवें, तो मृत्यु घटनायें होती हैं। उसे पानी में घोल कर पी लेने से प्रायः आत्म घात कर लेते हैं। कभी २ बच्चे अफ़ीम की डिबिया उठाकर उसमें से खाकर मर जाते हैं। बालहत्या के काम के लिये भी अफ़ीम भारत में व्यवहृत होती है। विलायत में खालिस अफ़यून के स्थान में अफ़यून का टिंक्चर जिसको लाडेनम कहते हैं, खाई जाती है। एक व्यक्ति के उदर पर पुल्टिस में मिलाकर एक औन्स लाडेनम बान्धा गया, उसका विष प्रविष्ट होगया, और मृत्यु सामने आई। घाव पर मारफिया लगाने से भी मृत्यु हुई है। मारफिया की पिचकारी त्वचा के भीतर करने से भी मृत्यु हो जाती है। घाव पर अफ़यून लगाने से भी विषचिह्न प्रकट होते हैं। हुक्का के द्वारा अफ़-यून पान करने से भी मृत्यु हो सक्ती है॥

जिनको अफ़ीम का व्यसन न हो, उनकी मृत्यु ३, ४ रत्ती अफ़यून और एक रत्ती मारफिया से प्रायः हो जाती है। बालकों पर अफ़यून का असर बहुत तेज होता है। बहुत ही शीघ्र मृत्यु होजाती है, यहां तक कि कभी २ चिकित्सा की वारी भी नहीं आती। जो लोग व्यसनी हों, उनकी बात और है। ४ तो० अफ़यून, २ माशे मारफिया प्रतिदिन भक्षण करने वाले लोग विद्यमान हैं। कई रोगों में भी अफ़यून दी जाती है। व्याधि की विद्यमानता में आमाशय अधिक अफ़ीम सहन कर सक्ता है। यथा कज़ाज़ (अपतंत्रक) में, परन्तु वृक रोगों में, तथा हृदय शैथिल्य आदि रोगों में थोड़ी सी अफ़यून भी अधिक हानिकारक है। इसके अतिरिक्त प्रकृति विशेष पर अफ़यून का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। यह आवश्यक नहीं है कि एक मनुष्य यदि एक मासा सहन करेगा तो दूसरा स्वस्थ पुरुष भी अवश्य उतना ही सहन करे। डाक्टर क्रिस्टनी साहिब ने लिखा है कि तीन

मनुष्य, जिनमें से एक को कास, एक को प्रतिश्याय, और श्वास थी २ रत्ती अफ़यून खाने से ही यमधाम को चले गये । ५ दिवस का बालक २ विन्दु टिंक्चर ओपियम अर्थात् लाडेनम से मरा । एक मास के बालक को ४ विन्दु मृत्यु का कारण हुये । एक मनुष्य ४ ग्रेन अफ़यून के साथ ९ ग्रेन काफूर मिलाकर किसी औषधि के वास्ते खाने से मर गया ॥

## मृत्यु का समय ॥

अफ़यून भक्षण के पश्चात् न्यून से न्यून पौन घण्टा में मृत्यु का होना निश्चित हुआ है, किन्तु प्रायः ७ से १२ घण्टे के मध्य में मृत्यु हो जाती है, इसके बाद २२ घण्टे तक स्वास्थ्य की आशा रहती है । और २४ घण्टे के पश्चात् तो पूरी आशा हो जाती है । किन्तु कई दशाओं में २—३ दिवस में भी मृत्यु होती देखी गई है ॥

## अहिफेन खाने के बाद के लक्षण

यदि अफ़यून निगल ली जावे तो २०—४० मिनट तक कुछ ज्ञान नहीं होता है, परन्तु यदि घोल कर पान की जावे, तो तत्काल प्रभाव डालती है, और लक्षण प्रकट होने लगते हैं । किसी अन्य नशे की अवस्था में लक्षण बहुत समय पश्चात् प्रकट होते हैं । किसी २ समय घण्टा दो घण्टा पर्य्यन्त कोई चिन्ह प्रकट नहीं होते । प्रथम सिर में भारीपन और चक्कर मालूम होता है, ऊंघ आती है, अन्त में अचेतना होनी आरम्भ हो जाती है, और पीछे सर्वथा पुरुष ज्ञान शून्य हो जाता है । उस समय गाढ़ी नींद सी होती है, श्वास रुक २ कर बहुत धीरे आने लगता है, किसी समय प्रतीत भी नहीं होता है । नेत्र बन्द, पुतलियां सुकड़ी हुई, और रोशनी का न प्रतीत होना, नाड़ी तेज, किन्तु छोटी, पुनः भरी हुई, शिथिल, जब मृत्यु समीप होती है, तो नाड़ी वेगयुक्त अनियमित और सूक्ष्म होजाती है, त्वचा

नरम और शीतल, मुखवर्ण रक्त वा पीत, और केवल ओष्ट काले, आखिर चेहरा श्वेत हो जाता है। प्रारम्भ में रोगी ऊंची २ आवाज़ों से उठता है, परन्तु कुछ समय पश्चात् उसका जगाना अत्यन्त कठिन होजाता है। और अन्त में चाहे कितना ही हिलाओ, उसको कुछ ज्ञान नहीं होता है। गाढ़ निद्रा, मुख पीला और कान्ति रहित हो जाता है। श्वास प्रश्वास की मांस पेशियां शिथिल हो जाती हैं, और मौत आकर घेर लेती है। श्वास से अफ़यून की गन्ध भी आती है। मृत्यु इन्द्रियों का ज्ञान शून्य होना, संज्ञा नाश, श्वासावरोध, और श्वास-क्लिष्टता, अचानक गति के साथ रक्त की गति के रुकने से भी हो जाती है, किन्तु प्रायः इसी भान्ति निश्चल पड़े २ हो जाती है। किन्हीं दशाओं में वमन (काले रंग की) अतिसार, बकत्रास, पुतलियों का प्रसार आदि होकर बिकाशि विष के सब चिन्ह प्रकट भी नहीं होते, और बहुत शीघ्र मृत्यु हो जाती है। किन्तु कभी २ अधिक अफ़यून और घोलकर पीजाने से चन्द मिनटों में लक्षण आरम्भ होकर आधे घण्टे में अत्यन्त अचेतना होकर मृत्यु हो जाती है। डाक्टर आरनल्ड सेमल ने लिखा है कि किसी समय १८ घण्टे के पश्चात् चिह्न प्रकट हुये। आमाशय भरा हुआ हो तो लक्षण शीघ्र प्रकट होते हैं। चिह्न उस दशा में भी शीघ्र प्रकट होते हैं, जब कि मनुष्य बैठा रहा हो, न कि वह इधर उधर कार्य्य करता रहे। जब अफ़यून अल्प मात्रा में खाई जावे और इन दशाओं में जब कोई अफ़यून वाली औषधि खा लीजावे, वा स्तम्भनादि के अर्थ अफ़-यून की गोलियां खाई जावें, तो भी चिन्ह ऐसे ही होते हैं, परन्तु कम प्रथम शिर भारी वा किसी २ समय चक्कर आता है, पुनः निद्रा सी आती है, सन्धि बन्धन शिथिल हो जाते हैं। उस समय सो जावे तो अद्भुत अवस्था होती है। पड़े २ भय आता है, वह समीपवर्त्ति मनुष्य को बताना चाहता है, किन्तु न उठ सक्ता है और न बोल

ही सक्ता है, न मुजा ही हिल सक्ती है, क्योंकि अफयून मुखद्दर ( विकाशि ) सन्धिबन्धन को शिथिल करने वाला है। अत्यन्त घबराहट में थोड़ी जागृति होती है, और शान्ति आती है, पुनः तन्द्रा आती है, बस यही दशा होती है। अन्त में गाढ़ निद्रा में ऐसे ही स्वप्नों के भीतर सोता है, जब तक कि अफयून का प्रभाव जाता नहीं रहता। आगामी दिन कोष्टबद्धता होती है, और पुनः आलस्य और नेत्र निमीलन होना आदि चिन्ह रहते हैं। अधिक मात्रा की दशा में लक्षण बढ़कर दीखते हैं, और मृत्यु हो जाती है ॥

## चिकित्सा

यदि अफ़यून का विष घाव पर लगाने के कारण चढ़ने लगा है तो उसी क्षण घाव को धो डालो, और त्वचा के भीतर ¼ ग्रेन एट्रोपिया की पिचकारी करदो। अफ़यून खाने के बाद जितनी शीघ्र वमन करवाकर, वा स्टामक पम्प लगवाकर उसको निकाला जावे, उतनी ही शान्ति की अधिक आशा होती है। आमाशय को धोने के वास्ते पानी के स्थान में हरी चाय का काढा, वा कहवा का पानी जिसमें बहुत महीन कोयला मिलाया गया हो, व्यवहृत होता है। वमनकारी औषधियों से अथवा कण्ठ में पंखा आदि हिलाकर वमन शीघ्र आरम्भ करा देनी चाहियें। तेज़ चाय अफ़यून के वास्ते उत्तम औषधि समझी जाती है। इसका विष अफ़यून के विष का मारक है। सल्फेट औफ जिंक अर्थात् नीलेथोथे से भी वमन आजाता है। अथवा शुद्ध ताम्बे के नानकशाही पैसे भी पानी में उबाल कर देते हैं, उनसे भी वमन आजाता है। यह सामान्य चिकित्सा हमारे ग्रामों में प्रचलित है। वमन के अनन्तर विरेचन दिया जासक्ता है। रोगी को सोने न देवें, प्रत्युत वह इधर उधर भ्रमण करता रहे। इससे व्यायाम कराना हमारा अभिप्रेत नहीं है, ऐसा करने से अचेतना का

भय होता है । चाय फिर भी बार २ देनी चाहिये, और शीतल जल के छींटे मुख और गरदन पर मारने चाहियें, कि नींद न आवे । तौलिया पानी से भिगो कर ऊपर के शरीर को मारते रहें । प्रथम बैलीडोनिया चाय के विष का प्रतिकार समझा जाता था; किन्तु अब टानिक एसिड अर्थात् चाय का सत्व इसका फाद ज़हर माना गया है ॥

परमात्मा ने प्रत्येक विष का एक प्राकृतिक प्रतिकार उत्पन्न किया, चाहे हमको ज्ञात हो वा न हो । अफयून के वास्ते मुझ को एक बूटी स्मरण है कि जिसके लम्बे २ पत्ते गन्ने की भांति होते हैं, नीलोफर की भांति फूल लगते हैं और बागों में होती है । मथुरा आदि की तरफ उसका शाक पका कर खाते हैं, वह अफयून का विष प्रतिकारक है । प्याले में पाव भर अफयून डाल कर पाव भर उसका क्वाथ वा रस जो प्राप्त हो, डाल दो सब भस्म हो जावेगा, मानो उसमें कुछ असर ही नहीं है । अफयून भक्षण के तत्काल पश्चात् उसकी दो चार पत्ती खाई हुई पर्य्याप्त हैं । आमाशय में विष का एक चिह्न भी प्रकट नहीं होता है । विलम्ब से मालूम होने पर भी रक्त में संयुक्त हो कर रक्त तक पहुंचे हुए अफयून के प्रभाव को घटा देती है । प्रयोजन यह है कि इसकी उपस्थिति में ईश्वर की दया से अफयून से मृत्यु नहीं होती है । हां ! बहुत विलम्ब हो जावे; तो कुछ नहीं कर सक्ते ॥

अंग्रेजी उपचार तो इतना ही है कि स्टामक पम्प, वमन कराना, नाइट्रिकएसिड, सुरमा, नीलाथोथा, जिंगार १५—२० रत्ती पावभर पानी में घोल कर वमन के लिये पिलाना । अथवा तूतियावाली औषधियां पानी में घोल कर दो बार वमनार्थ पिलाना, और ऊपर से कण्ठ खुजलाना । इससे वमन न हो तो खनिज तूतिया को आध पाव पानी में मिला कर दो तीन बार पिलाते हैं । इससे भी वमन न हो तो यह आमाशय के सुन्न होने का चिन्ह है । १ रत्ती अन्टिमनी अर्थात्

सुरमा को नस के भीतर प्रविष्ट करने से भी वमन आजाता है । कहवा का काथ वा चाय तेज़ पिलाते रहना चाहिये । इस समय में साबुन और नमक से वस्तिकर्म्म किया जावे तो उत्तम है । सोने न देवें । यदि आराम न हो तो जराह से फसद खुलवा दें । और यदि वस्ति न कर सकें तो कानों के पीछे पीछे पछने और जोंके लगवावें, थोड़ा आराम होने पर तत्काल जुलाव, एलवा, महमूदा ( मकमोनिया ) उसारायरेवन्द, जमालगोटा वा केलूमल, जो मिले, उसीसे जुलाब देदें । गद्दी और पिंडलियों के रुख पर आन्तरिक प्लस्तर लगाकर छाला भी डलवाते हैं । शयन न करने दें, तत्पश्चात् घृतयुक्त और स्वादु भोजन करावें । जनाब मुहम्मद असगर हुसेन साहिब लिखते हैं:—"मुझ तुच्छ ने इस विष की विशेष चिकित्साओं से यह अनुभव प्राप्त किया है कि प्रथम घृत और दुग्ध मिलाकर वमन करावें । अरहर के पत्ते वा गोमा के पत्ते जो कि एक हिन्दी बूटी है और प्रायः गेहूं के पोदे के समीप उगती है, पिलावें । एरण्ड के पत्तों का अर्क वा उसकी गुद्दी खिलावें । ३ माशे निर्वसी, अफीम और अन्य विषों के वास्ते लाभदायक है । प्याज़ भी उपयोगी है । सरपुंखा और कसूंदा का रस भी अफीम और अन्य भक्षित विषों के वास्ते लाभकारी है । निर्वसी, पपीता, नारियल दरयाई, जहरमोहरा खताई, थोड़ी सी पीपल, गुलाब के अर्क में पीस कर मिश्री से मीठा करके पिलाना बहुत ही लाभकारी है, और बहुधा विषों को दूर करता है" ॥

जितनी अफीम खाई हो तत्काल उससे दुगनी हींग पानी में घोल कर पिलावें तो, अफीम हींग में ही भस्म हो जावेगी, वा वमन द्वारा निकल आवेगी ॥

हींग २-३ माशे पानी में मिलाकर वा जोश देकर दो तीन समय पिलावें, और एरण्ड की कोंपल का तैल कर्ण और कण्ठ में टपकावें । ताज़ा गाय का घी और दुग्ध अफीम की हानि का सुधारक

है । रेठा पानी में घिस कर पिलावें और नाक कान में टपकावें । गेन्दा के फूल की पत्ती सुखा कर बराबर शक्कर मिलाकर ६ मासे से २ तोला तक खिलावें । मूली के बीज पानी में पीस कर पिलाने से वमन होगा ॥

हल्दी १ तो० पानी आध पाव—तीन छटांक में जोश दे कर पिलावें । अखरोट की गुली भी अफीम का प्रतिकार कहा जाता है । और ताज़ा गोघृत अफीम की हानि का सुधारक है । ककरूंदा का रस भी पिलाते हैं । खानिज नौसादर ४ मा० पानी में घोल कर पिलाना, फिटकरी १ तो० पानी और दूध में पिलाना, सुहागा १ मा० चौराई की जड़ १ मा० को साठी चावलों के पानी में घोट छान कर पिलाना, कटेरी या कंडयारी का रस २ तो० नीलाथोथा ३ मा० पानी में घोल कर पिलाना, वमन लाकर आराम करता है । सोंठ घोट कर पिलावें, घन्टा २ भर के विलम्ब से कई वार देकर वमन करावें । ६—७ शरीफा ( सीताफल ) की पत्तियों को पानी में घोट कर पिलाना उपयोगी है । नकछिकनी १ तो० पानी में घोट कर पिलावें, और सब नखों में नमक लगावें ॥

## यवनानी चिकित्सा

सोए, मूली का पानी, मधु, लवण, से वमन कराना, और पुनः वस्तिकर्म कराना है । वस्ति कर्म रेचक औषधियों के इष दुष्ण ( गुनगुने ) क्वाथ से होना चाहिये । स्मरण रहे कि अफीम खाये हुये को थोड़ी बिलम्ब हुई हो तो वमन लाभकारी है । और यदि विशेष विलम्ब हो गया हो, तो वस्तिकर्म कराना चाहिये, या विरेचन देना चाहिये । वस्ति कर्म अधिक उत्तम है । बनफशा के फूल, जौ का आटा, खतमी, गेहूं की भूसी, नीलोफर, उन्नाव, लसुन, चकुन्दर के पत्ते, कासनी के पत्ते, खब्बाजी, गोखरू, मुलहठी, अलसी, द्राक्षा,

अमलतास, लाल शक्कर, तुरंजबीन, शीरखिश्त, में से जो प्राप्त हो उसका क्वाथ, एरण्डी का तेल, कद्दू का तेल, इत्यादि संयुक्त कर वस्तिकर्म करें। या साधारण उष्णोदक ( गरम पानी ) से भी वस्तिकर्म उत्तम है। वस्तिकर्म के वास्ते एक सेर जल उपयुक्त हो सकता है। इसी प्रकार अन्य भी बहुत से टोटके हैं। जैसे कि अफीम से अधिक मृत्यु होती है, वैसे ही हम ने उपचार भी विशेष लिख दिये हैं। ईश्वर जाने कौनसा उपचार किस समय काम आजावे। स्मरण रहे कि एक दिन रात में एक दूसरे के बाद जल्दी २ बीसों उपाय न करने चाहिये। क्योंकि भिन्न २ औषधियां देने से वे स्वयं विष के समान हो जावेंगी। इसलिये जो वहां प्राप्त हो, वा जो उत्तमोत्तम लिखी गई हो, उनमें से एक दो को परीक्षित किया जा सकता है, परन्तु समझ के साथ।

( नोट ) पुराने हकीम काले खसखास के दाने के दूध को अफीम के वास्ते बर्ता करते थे, आजकल सफेद खसखास का दूध अफीम होता है। काले खसखास का जोशान्दाह ( क्वाथ ) धूप में शुष्क करके भी अफीम बनाते हैं, किन्तु यह साधारण है। जंगली काहू से भी इसी प्रकार अफीम तय्यार की जाती है। यह अफीम से बहुत कम बलकारक होती है। खसखास सुर्ख अर्थात् लाला के दुग्ध से भी अफीम बहुधा देशों में तैय्यार की जाती है। इसे रात्रि को चीर देते हैं, और प्रातः सूर्य निकलने से पहिले अफीम खुरच लेते हैं, क्योंकि असल अफीम धूप में रखने से पिघल जाती है। गन्ध तीक्ष्ण विशेष प्रकार की होती है, स्वाद कटु, चिकनाहट और पानी में बहुत शीघ्र घुल जाती है, और घुलने पर तह नहीं जमती है। सूंघने से निद्रा की सी अवस्था ज्ञात होने लगेगी, दीपक की लौ पर रक्खें, तो तत्काल स्वच्छ ज्वाला उत्पन्न होगी, और जलती हुई के बुझाने पर तुन्द और तेज़ गन्ध निकलेगी। नकली अफीम कई तरह से तैय्यार होती है। अफीम शीतल शुष्क है, औषधियों में इसकी मात्रा एक

रत्ती पर्य्यन्त है । ६ माशा तो अवश्य प्राण हर लेती है । तिलों के तेल में अफीम घोल कर खाई जावे तो तत्काल असर करती है, और कोई औषधि आराम नहीं कर सकती । अतः अफीम भक्षित को तैल का देना अतिशय वर्जित है । अफीम जब आमाशय में प्राप्त हो जावे, तो खट्टी औषधि का देना भी उसके प्रभाव को बढ़ाता है । खट्टास से अफीम बहुत शीघ्र घुल कर पच जाती है । हां ! जब वमन वा विरेचन द्वारा अफीम निकल जावे, तो उसके अवशिष्ट लेस को दूर करने के लिये खट्टी वस्तु का देना लाभदायक है । कहते हैं, कि हुक्के के द्वारा अफीम शीघ्र प्रभाव करती है ॥

## पोस्ट मार्टम की अवस्था

एक जानवर को प्रातः काल के समय ९ माशे अफीम खिलाई गई । दो प्रहर पर्य्यन्त कुछ असर न हुआ । अतः पश्चात् शिथिलता और पिछले पांव निर्बल हो गये, शिर और मुख की मांस पेशियों में स्पन्दन होने लगा, नाड़ी निर्बल हो गई, और ६ घन्टे यही दशा रही, अनुभव शक्ति नष्ट हो गई, और उसी रात्रि को मृत्यु भी होगई । प्रातः इसका उदर चीर कर देखा गया तो अफीम उसकी अन्त्रियों में थी, और लेसदार रतूबत तह २ में थी । फुप्फुसों में रक्त के भरे हुये काले धब्बे स्थान २ पर पाये गये । अफीम खिलाकर कई कुत्तों को देखने से ज्ञात हुआ कि उनके दिल के भीतर का रक्त काला और जमा हुआ था ॥

मनुष्यों में अफीम खाने से सदैव एक से लक्षण नहीं पाये गये हैं, यह प्रायः होता है कि, मस्तिष्क की नसें फूली और सूजी होती हैं । कभी २ मस्तिष्क की झिल्ली जो कि मस्तिष्क के मध्य में है, उसमें शीरम ( रक्तार्क ) पूरित होता है, आमाशय में से अफीम की गन्ध आती है, त्वचा सड़ जाती है और काली पड़ जाती है, और मस्तिष्क को छीलने से उसकी बूंदें लाल दृष्टि पड़ती हैं ।

आमाशय में जो कुछ हो, उसमें अफीम की परीक्षा करने की विधि यह है कि, जो कुछ मिले उसे फिल्टर कर लें, या छान लें। कठिन भागों के फिर सूक्ष्म खंड करने चाहियें, और फिर जो तरल पदार्थ नीचे बैठ गया हो, उससे मिला देने चाहियें। अब इसमें थोड़ा सा ऐसीटिक ऐसिड और ऐसीटेट औफ लीड मिला दें, इससे अफीम का एक भाग घुल जाता है, और ऐसीटेट औफ मारफिया इसके भीतर उपस्थित हो जाता है। उसको छान कर देखें कि इसमें ऐसीटेट औफ मारफिया विद्यमान है वा नहीं। इसके दो भाग किये जाते हैं:— एक में सोल्यूशन औफ क्लोराइड औफ आयरन, मिलाया जाता है। इस पर पीतता युक्त नील रंग उत्पन्न हो जाता है। दूसरे भाग को आंच पर सुखाया जाता है, उसके साथ नाईट्रिक ऐसिड मिलाने से पीत रंग, जो फिर नारङ्गी की भांति लाल हो जाता है, उत्पन्न हो जाता है। इस में प्रक्लोराइड औफ़ आयरन मिलादें तो रंग रक्त की भांति लाल हो जाएगा। यदि अफीम की गन्ध ठीक आवे, रङ्गत लाली पर और भूरी हो, चीनी की रकाबी में रगड़ने से चिकनाहट ज्ञात हो, और वारनिश के समान हो जावे तो, उत्तम है। यदि गन्ध खट्टी हो, रंग काला, और रगड़ने से चिकनाहट न पायें, तो नाखालिस अफीम को पानी में घोल कर जोश देकर कपड़े में छानें, यदि न छने तो गोंद की मिलावट है, यदि रेत होगी तो ऊपर रह जायगी। इस अफीम के अर्क को चीनी की रकाबी में रख कर थोड़ा सा आयोडाइड औफ़ पोटाशियम पानी में मिला हुआ डालें। यदि रंग हरा या नीला हो जावे तो, निशास्ता का मेल है। थोड़ा सा लिकर पोटासी और तूतिया का सोल्यूशन एक टैस्ट ट्यूब मिला कर और २–३ बिन्दु अफीम के अर्क के डाल कर उष्णता पहुंचावें। खांड और गुड़ मिला हो तो रंगत लाल हो जावेगी, अन्यथा काली॥

अफीम के योग डाक्टरी में बहुत हैं। हम उनकी सूची नीचे देते हैं॥

| नाम योग | कितने में कितनी अफीम |
|---|---|
| एनीमा औफ ओपियम | १ औन्स में १ ग्रेन |
| ओपियम लाजिंजर | दस टिकिया में १ ग्रेन |
| प्लास्टर औफ ओपियम | १० भागों में १ भाग |
| टिंकचर औफ ओपियम लोडिनम | १४॥ विन्दुओं में १ ग्रेन |
| स्कार्च पारगोरिक | ९६ बिन्दुओं में १ ग्रेन |
| पारगोरिक इलिग्ज़र | आधे औन्स में १ ग्रेन |
| कम्पौण्ड पाउडर औफ पिक्कायना ओपियम | १० ग्रेन में एक ग्रेन |
| बैटल्ज़ लिकर ओपियम स्टैडिट्वस | २० बिन्दुओं में २ ग्रेन |
| कम्पौण्ड काईनो पाउडर | ५ भागों में आधा भाग |
| कम्पाउण्ड पिल औफ सोप | $\frac{1}{5}$ भाग |
| कन्फेक्शन औफ ओपियम | $\frac{1}{4}$ भाग |
| आयण्टम्मेण्ट औफ टाल्ज़ एण्ड ओपियम | $\frac{1}{12}$ भाग |
| लिक्विड एक्सट्रक्ट औफ ओपियम | १ औन्स में २२ ग्रेन |
| पिल औफ लेड एण्ड ओपियम | ८ ग्रेन में १ ग्रेन |
| लेड एण्ड ओपियम स्पौजीटरी | एक स्पौजीटरी में १ ग्रेन |
| लीनिमेन्ट औफ ओपियम | ४औन्स में १ औंस टिंकचर ओपि० |
| राइन औफ ओपियम | १४॥ बिन्दुओं में १ ग्रेन |

## नशे के लिये अफीम का दुर्व्यसन

अफीम भक्षण की प्रथा सब से बढ़ कर चीन देश में है, और यही उनके शताब्दियों से पड़े रहने का कारण है। अब अफीम के विरुद्ध वहां से आवाज आई है, और अब वह लोग भी जागृत हुये

है भारत में भी इसने थोड़ी भ्रष्टता नहीं की है अफीम का व्यवहार भारतवर्ष में कई रीतियों पर होता है; कोई गोलियां खाते हैं, कोई क्वाथ, कोई चण्डू व मदक इत्यादि हुक्का में पीते हैं। राजपूताने में इसकी प्रथा शायद चीन से भी बढ़ कर है। मुझे मेरे एक मित्र ने बताया कि वह एक रईस के हां गये, जैसे हमारे हां हुक्का की खातिर की जाती है, अफीम के क्वाथ की प्यालियां भरी हुई क्रमशः २ स्थाली में रखी हुई लाई गईं। सभा में प्रत्येक को दी गई, मुझ को मेरे सम्बन्धी ने बता दिया कि इनकार मत करना, अपमान समझते हैं। मैंने भी प्याली ली और मुख को लगाई। हमारे आर्य्यावर्त्ती करते कमाल हैं। अफीमभक्षी ऐसे २ मनुष्य विद्यमान हैं कि ३ समय दिन में खाते हैं, और यदि उनकी एक वार की मात्रा को घोल कर पिलाया जावे तो ५० मनुष्य एक साथ यमालय को सिधारें। एक उर्दू कवि ने अफीम पर कुछ कविता बड़ी उत्तम की थी जो उद्धृत करते हैं:—

हाल अफ़ीम का सुनाता हूं, खाने वालों को मैं जताता हूं।
ताकि वाकिफ़ खूब हो जावें, नुक्स अच्छी तरह समझ जावें॥
रूह को फूंकदें नोजवानों की, जड़ निकाले यह नौजवानों की।
नाश करती है यह जवानों का; जोर ढाती है यह तवानों[१] का॥
जबकि होता है खूब इसका खुमार, मक्खी मालूम हो नशा में पहाड़।
कम यह करती है ताकत जां को, राहत रूह जिस्म इन्सां को॥
सीना गरमी से चाक करती है, और जवानी में पीर[२] करती है।
बादशाह को फ़कीर करती है, दिल जला कर यह खाक करती है॥
जिसने खाया उसे जहां से गया, मौत का यह पैगाम[३] है गोया।
जी का हर बाग पुर ख़िजां हो जावे, दिल का इससे चिराग गुल होजावे॥

---

१ हृष्ट पुष्ट, २ बूढ़ा, ३ संदेसा।

दीन व ईमान को भी खो जावे, रूसियाह खुदा के हां जावे ।
ब्राह्मण खावे तो यहीं जल जावे, शेख खावे तो दोज़खी हो जावे ॥
हंसने वालों को यह रुलाती है, जागने वालों को यह सुलाती है ।
है ज़ईफों को संजरे बेदाद, और जवानों के वास्ते जल्लाद ॥
ज़िन्दा दिल इससे मरदूद हो जावे, बाग़ दिल पुर खिज़ां से भर जावे ।
सुस्त हो जोकि होवे चुस्त, नौजवां इससे होवे कज़ा पुश्त ॥
है असर इस्तेमाल का इसके, काम थम जावे सारे आज़ाके ।
इसका चस्का किसी को पड़ जावे ज़ोफो रंजो अलम में घिर जावे ॥
अक्ल मफकूद इससे हो जावे, ताकते ज़हनी दूर हो जावे ।
इससे बूदार है न कोई शै, मुंह बनाओ जो नाक तक पहुंचे ॥
ज़ायका है इसका बहुत बदतर, खाने वाला समझलो है बगड़ ।
मेरे कहने का गर नहो बावर, खाने वालों को देखलो जाकर ॥
कहता है सबसे यह जलीलो हकीर, दूर रहना है इससे अकसीर ।
है दुआ यह शमास का खालिक से, सब बचें इसके चसकाय बदसे ॥

## अफीम के लाभ

जैसा कि लिखा जा चुका है, अफीम भी अन्य विषों की भांति अगणित लाभों से पूरित है, इसमें योगवाही होने के अंश भी पाये जाते है; अतः एक विद्वान् डाक्टर ने लिखा है कि मुझ को अफीम, पारा, और कोनैन देदो तो संसार के ¾ रोग इन्हीं से दूर कर दूंगा । हमारी तो सम्मति है कि सर्व रोगसमूह निवृत्ति इन्हीं से हो सकती है, क्योंकि तीनों ही योगवाही हैं । अफीम को सुरमा वा इपीका काना के साथ दो तो प्रस्वेद अधिक आवेगा, चाक के साथ अति विड्बन्धक हो जावेगी, काफ़ूर के साथ अधिक उत्तेजक प्रभाव करेगी, बस सिद्ध

४ झुकी कमर, ५ अङ्ग, ६ जाती रहे, ७ मस्तिष्क, ८ छोटा बेड़ ।

हुवा कि कुछ न कुछ योगवाही लाभ विद्यमान हैं। अफीम के लाभ वैद्यक, यूनानी, और डाक्टरी पुस्तकों में औषधि की रीति पर बहुत से लिखे हुये हैं, व्यसन इसका अत्यन्त हानिकारक है। पीड़ानाशक, ऐंठननिवारक, मलवर्द्धक, प्रस्वेदक, व्यवायी है। प्रथम भयकारी प्रभाव डाल कर पुनः प्रमाद और सुस्ती करती है। बहुधा वेदनायुक्त रोगों में देने से शांति देती है कई रोगों में इसको डाक्टर काम में लाते हैं, और हकीम वैद्य भी तथैव इसके गुण गाते हैं; किन्तु क्योंकि हम अफीम के गुण कथन नहीं कर रहे हैं, अफीम और उसके विषैले प्रभाव का कथन करना है, अतः इसको छोड़ देते हैं। अफीम के लाभ तब ही हैं जब कि हकीम वा डाक्टर की सम्मति से खाई जावे ॥

## अफीम कैसे आरम्भ होती है

अफीम के खाने वालों को प्रायः मैंने देखा है कि उनके समीप किसी रोग का नाम लो, तो वह उसकी चिकित्सा अफीम बतला देते हैं, इस प्रकार साधारण व्याधियों में भले पुरुष भी आरम्भ कर देते हैं और अन्त में व्यसनी होना पड़ता है। और कोई अनजान हकीम भी किसी नज़ला और कासादि के रोगी को कह देते हैं, कि १ चावल अफीम नित्यप्रति खालिया करो, किसी समय हकीम लोग और डाक्टर किसी व्याधी के वास्ते अफीम कुछ दिवस पर्य्यन्त खिलाते हैं, और रोगी उसी प्रकार ज़ारी रखते हैं। किसी २ देशविभाग यथा राजपूताना में इसको न खाने वाला तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है, इसी के कारण आरम्भ होती है। स्तम्भक औषधियां जिन में अफीम होती है, उनके सदा के प्रयोग से भी अफीम का व्यसन हो जाता है। नवयुवक जितने अफीम आरम्भ करते हैं, प्रायः सबके सब स्तम्भन के अर्थ आरम्भ करते हैं। शून्यता कारक (निकाशि) होने से आरम्भ में

स्तम्भन करती है, किन्तु प्रतिदिन अधिक मात्रा में भक्षण करने की आवश्यकता होती है और अन्त में पट्ठे ऐसे अशक्त हो जाते हैं कि अफीम बढ़ाने पर भी स्तम्भन घटता है और उत्तेजकशक्ति तो सर्वथा नष्ट हो जाती है क्योंकि पट्ठे शिथिल और निर्बल हो जाते हैं। और जब यह शक्ति ही जाती रही तो सब आनन्द फीका हो जाता है, स्तम्भन अब किस काम का है। जब कभी चार मित्रों में बैठो और जब कभी ऐसे अफीमादि के विषय में सुनो, वहां से उठ जाओ। गुण श्रवण करो तो उनके स्वास्थ्य और उनकी मुख कान्ति की ओर भी ध्यान दो, केवल गुणों पर लट्टू न हो जाओ। जवानी दीवानी है, आनन्द स्तम्भनादि इस आयु में ढूंढते २ भोग विषय के पीछे भटकते इस काली बला के फन्दे में ग्रस्त होजाते हैं। कैसा उत्तम लिखा है:--

"**विषय वासना** एक दो वार स्त्री की भांति उसके सम्मुख आती है, और जादू भरी दृष्टि से उसके मन को लुभाती है, मोहयुक्त कटाक्षों से संकेत करती है, और अन्त में सब्ज़ बाग दिखाकर अपने जाल में फंसा लेती है, और उसके आगे अपना एक भोजन आसन बिछाकर नाना प्रकार के विषयुक्त भोज्य पदार्थ निराली रीति से चयनारम्भ करती है। कहीं लाल मदिरा का प्याला है, कहीं लहलहाती भंग का प्याला है, कहीं सुनहरी पोस्त के पानी का दौरा है, कहीं चीनी के सुन्दर प्यालों में चीनिया हैं, किसी स्थल पर दिये की लाट पर चाण्डू के छींटों के वास्ते पृथवी पर लम्बा बिस्तर बिछा है, कहीं चरस के दम लगाने की सुन्दर कली धरी है, इधर गांजा का सामान है, उधर मदक भी महमान है। प्रयोजन यह है कि सर्व प्रकार के नशे विद्यमान हैं। किसी को भोग शक्ति वर्द्धक और आनन्दवर्द्धक, किसी को क्षुधावर्द्धक और प्रसादक, किसी को व्यवायि और किसी को स्तम्भक बताकर उनकी ओर अभिलाषा बढ़ाती है। अक्ल के अन्धे और गांठ के पूरे झटपट उधर झुक जाते हैं, होश हवास

प्रथम ही भेट कर बैठते हैं और धीरे २ स्वास्थ्य और आरोग्यता से भी हाथ धो बैठते हैं। लोगों के देखते २ विषय भोक्ता के आनन्द उन्माद में परिवर्त्तन हो जाते हैं। पट्ठे शुष्क और शिथिल हो जाते हैं, पुरुषत्व का नामोनिशान भी नहीं रहता है, आमाशय निर्बल हो जाता है, क्षुधा अल्प हो जाती है, और भोजन में आनन्द नहीं आता है, नेत्रों में मुरदनी छा जाती है, चेहरे का न रूप रहता है न रंग, मन में न जोश और न उमंग, हाथ कांपते हैं, टांगें थरथराती हैं, पांव उधर फिरा, हाथ उधर गिरा, शिर इधर ढलका, धड़ उधर टरका, प्रकृति जली भुनी, मानो अपने आपसे घृणा करता है, जो गांठ में था वह तो ठेकेदार की भेट है, अब न कोई कार्य्य हो सक्ता है और न कोई उधार देता है, उधर नशा के बिना रहा नहीं जाता, अन्त में भिक्षा की कफ़नी गले में डाल कर बोलते जाते हैं—"एक पैसे के घोड़े पर चढ़ाने वाले तेरी खैर, एक दमड़ी का सब्ज़ा पिलाने वाले तेरा भला!" लो अभी युवा है और अब ही वृद्धों से बढ़ कर हुवा, बल्कि बिलकुल मुवा है, अभी प्राकृतिकआयु के आधे भी नहीं पहुंचा था कि परिणाम आरम्भ हुवा है। इन सब बुराइयों, दुर्दशाओं के प्रत्यक्ष दृष्टिगत होने पर भी इस काली बला वा नागनी से घृणा नहीं करते हैं, प्रत्युत और आगे प्यार से गले मिलाते हैं। सांसारिक आनन्द, पुरुषत्व, स्वास्थ्य जो हज़ार नियामत हैं, अन्तिम नमस्ते कर जाती हैं, भोगेच्छा नाम को नहीं रहती, शरीर दुर्बल कृश और भद्दा हो कर इतना रुक्ष हो जाता है कि १ सेर भर दूध पीने के बिना पाखाना नहीं उतरता है, स्मरणशक्ति का नाश और मुख सौन्दर्य्य का नाश सर्व शक्तियां और इन्द्रियां कुन्द" ॥

**अफीमियो !** सोचो क्या थोड़े दिवसों का स्तम्भन चाहते हो ! जिसके कि पश्चात् इतनी हानियां हैं कि भोगशक्ति भी नहीं रहती है ? यदि रोगी हो तो चिकित्सा कराओ, अफीम मत खाओ !

कतिपय मनुष्य नज़ला, प्रतिश्याय, ( जुकाम ) आंखों से पानी जाना, सन्धिवेदना, कटिशूलादि के वास्ते काम में लाते हैं। अफीम प्रस्वेद के अतिरिक्त शरीरस्थ सर्व श्लेष्मा को शुष्क करती है, इस कारण से इनको उपयोगी है, चिकित्सक चाहे तो काम में ला सक्ता है, किन्तु इसका व्यसन लगा कर इन रोगों से छुड़ाना सर्वथा अज्ञानता है। प्रथम तो छुटकारा होता नहीं, केवल थोड़े मास पर्य्यन्त आराम होता है, पुनः अफ़ीम की मात्रा बढ़ती जाती है और असली रोग पुनः आवर्त्तित हो जाता है। और यदि किसी अवस्था में जब तक खावें, तब तक रोग में कमी भी रही, तो भी इन थोड़े से रोगों के वास्ते औषधि के स्थान में उस बला का व्यसन करना, जो पश्चात् ज्ञान, विवेक, इन्द्रिय, सबको नष्ट भ्रष्ट करदे, बड़ी मूर्खता है। मैं कहता हूं कि अफ़ीम की हानियां जानने के वास्ते एक अच्छे अफीमची की शकल देखना पर्य्याप्त है। अफीमी मैले कुचेले रहते हैं, और कई २ दिवस पर्य्यन्त मुखप्रक्षालन भी नहीं करते, क्योंकि अफीमची पानी से अधिक भयभीत होता है। भाग्यवान् अफीमची भी पवित्र और सुथरा न होगा। शरीर दुर्बल होकर शुष्क हो जाता है, ऊंघ २ कर कैसी धीरे २ बातें करते हैं। चेहरा पीत जरद होता है, अफीम खाने के थोड़ी देर के पश्चात् जीवन के चिह्न वा स्फूर्ति ज्ञात होती है, वरना अवशिष्ट समय में सुस्ती और निश्चलता में बड़े भारी दुःखी की भांति पड़े रहते हैं, न कोई कार्य्य कर सक्ते हैं न कोई काज। हम सब लोग—

## अफीमचियों की ऊंघ (पीनक)

को जानते हैं। उसके कई दृष्टान्त हैं। कहते हैं कि एक अफीमची दुग्ध लेने के वास्ते गया, गूजरों ने अभी द्वार भी न खोला था, आप द्वार के समीप खड़े थे कि एक गाड़ी वाला पोश, पोश करता आया, आप दीवार के साथ लग गये। वहां पीनक आ गई, सारी रात

उसी स्थल पर चिमटे रहे। बड़ी फजर एक स्त्री गूजरों की उठी और मोरी पर लघुशंका करने लगी, तो आप को कुछ होश आया, फरमाते क्या हैं:—" हां! दुग्ध में पानी डाल दे मैंने देख लिया है"। जनाब डाक्टर गुलाम हुसैन साहिब ने अपने उल्ला नामी नौकर का जो कि अफीमची था, परन्तु भोजन अच्छा पकाया करता था, और इसी वास्ते डाक्टर साहिब ने उसको नौकर रखा था, किस्सा कथन किया है। वह लिखते हैं, " एक दिन मैं रोगियों को देखकर दिन के १० बजे मकान पर आया, और नियत समय पर भोजन मांगा तो उत्तर दिया कि, तरकारी गरम करके अभी उपस्थित होता है। मुझको वाट देखते पाव घंटा बीत गया, वह भोजन न लाया, तो मैं उठकर बाबरची खाने में गया। देखता हूं कि उसकी आंखें बन्ध हैं और तरकारी जल गई है, यह दशा देख कर मुझको क्रोध के स्थान में हंसी आ गई, ऊंघ से उसको सावधान किया और बाजार से खाना मंगवाकर खाया"।

क्या साहिब! अफीमची भी सांसारिक किसी कार्य्य के योग्य रहते हैं? कहते हैं कि एक अफीमची साहिब अपनी स्त्री के बहुत कहने सुनने पर धन प्राप्त करने के वास्ते किसी दूसरे शहर को प्रस्थित हुये। आधे मार्ग में दोपहर काटने के वास्ते सो गये, और अफयून का गोला चढ़ा लिया। उठ कर आप जिस ओर से गये थे उसी ओर को रवाना हो गये, सायंकाल होते हुये पुनः अपने नगर में पहुंच गये। फरमाते हैं यह शहर भी हमारे शहर ही का नमूना है, प्रश्न करते हैं कि किसी तैली का यहां घर है। ( क्योंकि आप भी अबदुल्ला नामी तेली थे ) लोगों ने अबदुल्ला का पता बताया, बहुत खुश हुये, शहर भी वैसा और तेली भी बल्कि मोहल्ले का नाम भी एक। दरवाजे पर गये, रात्रि का समय था, स्त्री ने तो पहचान लिया किन्तु एक ओर जा बिठाया, आप भी सोचते रहे कि हो न

हो स्त्री भी मेरी स्त्री की शकल की है, स्त्री ने भोजन लाकर खिलाया बड़े प्रसन्न हुये, और नाम पूछा जब स्त्री का नाम भी वही निकला, तो हंस और प्रसन्न हुये, स्त्री ने धड़ाधड़ जूतियां लगानी आरम्भ की तब हजरत की आंखें खुलीं। बहादुर ऐसे होते हैं, और पानी से इतने भयभीत होते हैं कि एक समय अफीमचियों की सभा से उठ कर एक नहर से पानी झुक कर लेने लगा, वहीं ऊंघ आई गिरा, बस किनारे तो आगये पर क्या फरमाते हैं—" अच्छा मित्र जाओ हमारी तो यही आशीश है, जहां रहो खुश रहो। एक अफयूनी को हुक्का पीते देखा। घूंट लेकर अफयून की ऊंघ भी आगई। आप ऐसे ऊंघ में घुटे कि सिर पाऊं में पड़ गया॥

सर्व नशों का नियम है कि जितनी मात्रा प्रथम खाने से सन्तोष होता है, कुछ दिवस पश्चात् उससे नहीं होता और मात्रा बढ़ाने की आवश्यकता होती है। आज यदि एक चावल भर प्रतिदिन तुम्हारे नज़ला और पानी को बन्द करती है तो वह दिन आवेगा कि रत्तियों मासों खानी पड़ेगी, बस ऐसी हानियां आपड़ेंगी कि कथन नहीं हो सक्ता है। पस इन रोगों के वास्ते ठीक औषधि न करना, और उस काली नागनी को पीछे डाल लेना मूर्खता है। जहां तक हो मेरा अनुभव है एक भी अफीमी ऐसा नहीं देखा है, जो उसे छोड़ना न चाहता हो। जब प्रश्न होता है तो प्रायः यही उत्तर मिलता है कि व्याधिवशात् प्रारम्भ की थी और अब पृष्ठारूढ़ हो गई है, मेरा सत्यानाश कर दिया है, यदि आप छुड़ावें तो आपकी पूर्ण कृपा होगी॥

हम जब स्कूल में पठन करते थे तब एक सहपाठी अधिक अफीम सेवन किया करता था। उसने कहा कि जब मैं बालक था तो मुझको सुलाने के अर्थ अफीम दी जाती थी, और जब मैं बड़ा हुवा तो चुरा चुरा अफीम खाने लगा। हमारे गृह के प्रायः सब ही लोग अफीम खाते हैं, और मुझको भी इसका व्यसन है॥

ऐ माताओ ! तुमको दया नहीं आती केवल कार्य्यकी लालसा से अथवा अपना बनाव शृंगार करनेके अर्थ बालकको खिलाने बहलानेके कष्ट निवृत्यर्थ बालकका अमूल्य जीवन स्वास्थ्य तथा बुद्धिको नष्ट करती हो। बालकोंके लिये जो कि अभी वृद्धि और पुष्टता को प्राप्त कर रहे हैं, अफ़यून विशेषतः हानिकारक है। कोई अफ़यूनभक्षी बालक आगामी जीवन में धनी, बुद्धिमान, स्वस्थ और बलवान् न होसकेगा। एतदतिरिक्त असङ्ख्य मृत्युयें इसके कारण होती हैं। बस ! इन हानियोंको ध्यानसे पढ़ो ! और बालकोंको अफ़यून देना सर्वथा त्याग दो। बालकों पर अफ़यूनका प्रभाव बहुत तेज़ होता है। यदि भूलसे द्वितयिवार दीजावे, वा संयोगवश किञ्चिन्मात्र भी अधिक मात्रामें दीजावे, तो अवश्य बालक कालकी शरण होजाता है। एक डाक्टरने लिखा है कि एक रत्तीके सोहलवें भागसे दो दिन का बालक मृत्यु पथ ढूंढ लेता है॥

## प्रभाव।

सबसे प्रथम अफ़यूनका कुप्रभाव आमाशय पर होता है, वहां खराश होती है, जिसके कारण ग्लानि और वमनकी सम्भावना है, विकाशिगुणित्ववशात् आमाशय क्रियाशिथिल, और आन्त्रियों का सञ्चाल अल्प होजाता है। यही कारण है कि अफ़यूनियोंको क्षुधा अल्प लगती है, जब पाचन शक्ति निर्बल होगई और क्षुधा अल्प लगी तो रोग वितान गड़ गया, फिर यह अफीम पक्वाशय अर्थात् आन्तोंमें प्रविष्ट होकर कोष्टबद्धता करती है। और बहुत समय बैठनेसे भी पुरीषावतरण अल्प होता है, कोष्टबद्धता आरम्भ हुई तो बीसों रोगों की नींव स्थापित होगई॥

इसके पश्चात् मस्तिष्क पर जब इसका दुष्प्रभाव पहुंचता है, तो सुस्ती और तन्द्रा ज्ञात होने लगती है। संज्ञा नाश होजाती है, स्मृति

नष्ट होजाती है, जितना मनुष्य अधिक ज्ञानसम्पन्न होता है, उतना ही अधिक दुष्प्रभाव मस्तिष्क पर होता है, ज्ञानतन्तु अशक्त होजाते हैं, शिथिलशायी और तन्द्रागत होनेके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य्य इसको भाता नहीं, तेज़ी और स्फुर्ति जाती रहती है, मस्तिष्कमें शुष्कता आजाती है, और सर्वशरीरकी श्लेष्मा शुष्क होजाती है, निद्राकी यह अवस्था है कि अफ़यूनी रात्रि के १२ बजे तक तो सोता नहीं है, और अवशिष्ट रात्रि में किंचिद् निद्रा आती है ॥

**जिगर** को भी अफयून शिथिल कर देती है, कलेजा जब शिथिलावस्थामें होता है तो पित्त अल्प उत्पन्न होता है और भोजन उचितरीत्या पाचन नहीं होता है, मलका धूम्रवर्ण होता है, और मुख और शरीर पर पीतता छाजाती है, क्षुधा अल्प लगती है, शारीरिक और मस्तिष्क शक्ति घट जाती है, प्रत्येक कार्य्यमें शैथिल्य और आलस्य होता है। अफीमसे मैथुन शक्ति भी अत्यन्त निर्बल हो जाती है ॥

**वृक्कद्वयपर** इसका प्रभाव मूत्राल्पताका होता है, जिससे असंख्य रोगोत्थानका भय है, अतः अफ़यून वृक्करोगीको देना वर्जित है, मधुप्रमेहमें कोई डाक्टर इसका प्रयोग करते हैं, कोई इससे विरुद्ध हैं। वैद्यक मेदके योगों पर भी कहीं २ वरती गई है, और सर्व हकीम सहमत हैं कि अफयून के व्यवहारसे शरीर दुर्बल होजाता है और क्षुधा घट जाती है, अङ्ग सङ्कोचता और क्षय शोषादि रोग उत्पन्न होते हैं, पाचनशक्ति बुद्धि और विचार सर्वान्तारिक शक्तियों में निर्बलता आजाती हैं, शून्यता आजाती है। दर्शन, घ्राण, श्रवण, स्पर्शनादि शक्तियां अशक्त होजाती हैं। अफयूनी थोड़ी बातसे भी भयभीत और संकोचयुक्त होजाता है। आमाशय, कलेजा, मस्तिष्क और हृदयमें अशक्तता आजाती है, कोष्टबद्धता और अपक्तिकी शिकायत रहती है

परिणामशूल, मूत्रकृच्छ, मास्तिष्क्य शुष्कता, नासिका शौष्यादिके रोग दुःखित करते हैं, स्वरभंग, राईका पर्वत, थोड़ी सी बातसे भय कृपणता उत्पन्न होजाती है। सन्तानोत्पत्ति कम होती है, मनुष्य समूह में जानेसे घृणा होती है, निद्रा नहीं आती, बाह्य और आभ्यन्तरीय इन्द्रियां समल होजाती हैं, पागल और सुस्त होजाता है ॥

## अहिफेन पर डाक्टरों का सम्मति सार :-

**डाक्टर विल्सन टाईन साहिब** प्रिंसिपल मैडिकल मिशनरी ट्रेनिङ्ग-राजपूतानेमें वास करनेसे मुझको अफ़यूनके सम्बन्धमें निम्न लिखित अनुभव हुआ है। बहुत बालक अफ़यूनके स्वभाव डालने से मरते हैं, बहुत सी मौतें अफ़यूनके कारण होती हैं, बहुत से पापों की नींव लगती है, कोई अफ़यूनी अफ़यून खानेको अच्छा नहीं बताता, प्रत्युत उसका त्याग करना चाहता है, किन्तु छुटती नहीं है। डाक्टरोंने जो हानियां अफ़यूनकी लिखी हैं, वह वस्तुतः बहुत कम हैं ॥

**डाक्टर वरण्टन साहिब** :-यतः अफ़यूनके उपयोगसे शून्यता उत्पन्न होजाती है, अतः उनपर उत्तेजक प्रभाव नहीं होनेके कारण शरीराङ्गोंमें रक्तसञ्चार कम होता है।

एक योग्य हकीम :-"अफ़ीमीं के अतिसार, रक्तातिसारादि रोग प्रायः साधारण भी भयङ्कर होजाते हैं"।

**डाक्टर रिचर्डसन साहिब**-ने मैडिकल सोसाइटी में निम्न लिखित हानियां बतलाई :-"अफयून का व्यसन प्रतिदिन बढ़ता है, मानसिक शक्ति घटती है, मस्तिष्क क्रिया, और शरीर की प्राकृतिक और स्वाधीन गतिमें हानि प्रतीत होती है। शरीर शुष्क कृष्ठ, कमर टेढी और अकालमें वृद्धावस्था के रोग तथा लक्षण उपस्थित होते हैं।

**डाक्टर थी साहिब** ने उपरोक्त कथनका अनुमेदन करके बताया कि इसको छोड़े बिना इस की हानियोंका अन्य कोई उपाय नहीं है।

**एक चीन का अखबार** लिखता है कि अनुभव हुआ है कि अफ़यूनको मानसिक बल से एकाएकी त्याग देने से कोई भयंकर परिणाम प्रगट नहीं होता जैसा कि लोग समझते हैं ॥

**डाक्टर हैरत**–अफ़ीमी झूठ बहुत बोलते हैं।

**डाक्टर ह्यूकस**–मैंने चांडू और गांजा पान करने वालोंकी घृणित दशा अदृश्य होकर स्वनेत्रोंसे चांडुखानामें देखी, जो कि शिक्षाप्रद है।

**एक और डाक्टर**–पोस्ती और अफ़यूनीके लोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं, अफ़ीमभक्षीकी प्रकृति फिर जाती है, शुष्कता अधिक आजाती हैं, मांस घुल जाता है और सिर्फ त्वचा ही त्वचा रह जाती है।

**एफ. एस. काप्लिस्टन साहिब एक्साइज़ कामिश्नर ब्रह्मा**–यद्यपि अफ़ीमकी कृषिबन्धनासे सरकारकी हानि सम्भावित है। परन्तु इस हानिको तुच्छ समझना चाहिए, क्योंकि बहुत निकम्मे, निखट्टू पोस्ती अफ़यूनी मेहनत करने लग जायंगे। और परिणाम यह होगा कि स्वास्थ्य और मनुष्यगणनामें उन्नति होगी, तो शनैः २ मालगुज़ारी की बढ़ती और अन्य बातों से भी यह न्यूनता पूर्ण हो जावेगी।

**श्री० ए. एच. हैल्डर ब्राण्ड साहिब डिपटी कामिश्नर** 'मेरी सम्मति है, अफ़यूनका व्यसन इस देशमें जुरम बढ़ानेका कारण होता है।

**राय बहादुर मिलखीराममल जी इन्सपेक्टर पुलिस अहमदाबाद**–मदक पान सर्व दोषोंसे निकृष्ट दोष है, इससे बल

कदापि नहीं हो सकता । अपितु इसका पान करने वाला निर्बल और पीतवर्ण हो जाता है, प्रायः पान करने वाले जुआरी और पापोंके कर्ता होते हैं, छोटी २ चोरियां और दम्भ उनका व्यवसाय है ।

**कमिश्नर अक्साइज़ मध्य देश**—येनकेन प्रकारेण यह यत्न होना उचित है कि अफ़यून भक्षण पानादि सब बन्द हो जावें ।

**इंगलिस्तान और आइरलैण्ड के बड़े २ पंच सहस्र डाक्टरों की सम्मिलित सम्मति**—चरस और अफीम भक्षण का व्यसन आचार और वैद्यक रीति से दोष युक्त है ।

## अहिफेन कृषिः ।

गवर्नमेण्टको अहिफेन कृषिसे पञ्चकोटि मुद्राका लाभ है, सर चारल्स हेचीसन साहिब बहादुर लिखते हैं :—कि सेर भर अफ़ीम के वास्ते कृषकोंको ४$\frac{2}{3}$ आना मिलते हैं, और गवर्नमेण्ट १ सेर अफ़ीम को इतने रुपयों पर विक्रय करती है, कि १६ सहस्र प्रतिशत लाभ होता है । यह देरका हाल है, अब तो अफीम और भी मंहगी है । बड़े २ अफसर बहुत समयसे इस बातको लिख रहे हैं कि गवर्नमेण्ट को इस लाभको त्याग कर अहिफेन कृषि-बन्ध करना चाहिये, प्रायः लिखते रहते हैं कि गवर्नमेण्टको चाहिये कि अहिफेन कृषि और विक्रयण बन्द करदे, हम आश्चर्य्यावगाहित हैं कि यदि "अहिफेनकृषि" बन्द होगी तो डाक्टर और हकीम अफ्यून जैसे अमृत को कहां से प्राप्त करेंगे । यदि अन्य देशोंसे आवेगी तो अधिक मूल्यवान् होजावेगी अब भी कुछ कम नहीं है, (जहां प्रथम वैद्यों को आनों सेर मिलती होगी । अब हमको १००) सेर मिलती है, इस कारण कि इसके वास्ते लाईसैन्स हैं और गवर्नमैण्ट ने इस विचारसे कि मूल्य बढ़ जावेगा तो लोग कम खावेंगे, इतनी बहुमूल्य करदी, कि हमारे समीप गणना नहीं है, अतः नहीं कहा जा सकता कि इससे अफ़ीमके

व्यसन प्रतिबन्धमें कृतकार्य्यता हुई है वा नहीं, परन्तु यदि है भी तो वैद्यगण विचारे साथ ही क्यों मारे जावें, क्यों न गवर्नमेण्ट उनको २) सेर अफ़ीम प्राप्त करावे, औषधियों के अर्थ लाभ अल्प ही लेवें।

## अहिफ़ेन और दरिद्रता।

हमने बहुत कम देखा है कि अफ़यूनी धनवान हों, जितने धनी हैं उनकी जागीरें इत्यादि ऐसी अवस्थामें कि जिनसे कार्य्यवाही होरहीहै वरना बहुधा अफ़ीमची निर्धन ही दृष्टिगोचर पड़ते हैं। इसका विशिष्ट कारण तो यही प्रतीत होता है कि अफ़ीम चूंकि शिथिल कर देती है, और किसी कार्य्यको अफ़ीमची तन्द्रारहित होकर नहीं कर सकता, अतः आवश्यक है कि थोड़े समय पश्चात् वह निर्धन होजावे। निर्धन अफ़ीमची की सन्तान अति कष्ट में रहती है, इधर उधर से कोई पैसा मिला तो वह अफ़ीम लेवे वा बालबच्चोंका ध्यान करे, कई मांगने वाले अफ़ीमके कारण फ़क़ीर बनें, ध्यानसे दृष्टि डालें तो अफ़ीम का परिणाम दरिद्रता अवश्य प्रतीत होगी। ऐ निर्धन हिन्दूस्तानियों इस दरिद्रता का त्याग करो!!

**पोस्त, चांडू, मदक** अफ़ीमके स्थानमें प्रायः पोस्तका पानी बना कर पान करते हैं, कोई अफ़ीमको एक प्रकारसे शुद्ध करके हुक्का में भर कर लेट कर पीते हैं, हुक्काका नेचा मुखमें धारण कर वह चांडू पीने वाला ईंट पर शिर धर कर लेट जाता है, और दम लगाता है। भक्षणार्थ मिठाई इत्यादि प्रथम ही समीप रखी होती है। कहते हैं कि दम लगाते समय यदि हुक्का खेंच लिया जावे तो चाण्डनोश मर जावे, दम घुटने लगे। अफ़यूनका सत प्रथम तो धुआंसे शरीरके अन्दर जाता है और हुक्काके द्वारा मस्तिष्क पर कुप्रभाव होता है अतः चाण्डूनोश प्रथम ही लेट जाते हैं। और दिल घुटनेके वास्ते मिष्ठान्न समीप रखते हैं। हन्त! ऐसा जीवन।

धिक्कार है, ऐसे पुरुषों की समझ पर। पोस्त, चाडू, मदकादि सर्व अफ़यूनकी व्यवहृत भुक्ति रीतियां है, इनके दुष्प्रभाव विकार भी वही है, जो उपरि अफयूनके सम्बन्धमें कथन करते आए हैं इन सबको वैसे ही त्याग करना उचित है। पोस्त के नशा का एक दृष्टान्त एक डाक्टर साहिब ने लिखा है, जहां मैं रहता हूं उस मुहल्लाके निकट एक ब्राह्मण रहता था, जो पोस्त अतिशय पान करता था। प्रायः बालक उसको खूंटी कह कर चिढ़ाते थे। इसका मूल पता लगाने से ज्ञात हुआ कि एक रात्रि वह पोस्ती विना विस्तर चारपाई पर पडा था। उसकी स्त्री को किसी की बिन्दोरी में जाना था, जाते समय घर में बिना बिस्तर लेटे पति को देखा तो उसको कष्टतया उठा कर बिस्तर विस्तरित कर चली गई, जब स्त्री विस्तरण करने लगी थी, तो वह ब्राह्मण एक खूंटी को पकड़ कर खड़ा हो गया था, वैसे रात भर खूंटी पकड़े खड़ा रहा, प्रातः काल उसकी स्त्री आई और पति का अवलोकन किया तो क्रुद्ध होकर कहा, कि निर्भोगी तू सम्पूर्ण रात्रि भर इसी प्रकार लटकता रहा। स्त्री के चिल्लाने से संज्ञा हुई तो कहा कि विस्तरा कर चुकी ? होते २ यह बात प्रसिद्ध हो गई और बालकों ने इसकी चिढ डाल दी ॥

**बजट हिंद सन् १९०७ ई० पर पारलीयामेण्ट में वजीर हिंद मिस्टर मारले का अहिफेन सम्बन्धी संवाद सारः— ॥**

"मुझे बिश्वास है कि पारलीयामैण्ट के सभ्य महोदय गण की एक अधिक गणना अहिफेन प्रश्न में विशेष दिलचस्पी रखती है।

## अहिफेन विष से गर्भपात भी हुआ

एक डाक्टर साहिब विलायत के एक समाचार पत्र में लिखते हैं:— कि एक २२ वर्ष की रोगिणी हस्पताल में लाई गई। उसको ४ मास का गर्भ भी था। रोगिणी ने दस्तावर गोलियों के धोखे में अफीम की

गोलियां खाली थी। उस समय तन्द्रा छाई हुई ज्ञात हुई थी, पुतलियां संकुचित, नख कुछ नील वर्ण युक्त, जिह्वा कुछ शुष्क थी। स्टामक पात्र से तत्काल आमाशय धोया गया। प्रथम बार शोधन से २॥ रत्ती अफीम निकली। चार बार शोधन किया गया, परन्तु रोगिणी अर्द्ध घण्टे के भीतर सर्वथा अचेत हो गई। जिह्वा, होंठ, और नख विशेष नीले हो गए, सन्धि बन्धन, शिथिल पड गए, और सायंकाल पर्य्यन्त लगातार कई औषधियां देते रहे, परन्तु लाभ कुछ न हुआ, और नाड़ी निर्बल होती गई। प्रातः काल रोगिणी कराहने लगी। इसका कारण गर्भाशय की पीड़ा थी। आश्चर्य कि उन खुर्राटों की आवाज़ बन्द हो गई। रोगिणी ने नेत्र खोल दिए और सचेत होकर इधर उधर देखने लगी। पीड़ा अधिक होकर एक घण्टे के भीतर गर्भपात हो गया।

दिवस भर रोगिणी को चेत रहा और सायंकाल को १०२ दरजे ज्वर हो गया और रोगिणी अचेत हो कर अर्धरात्रि को यमधाम सिधार गई। देखिये! कि अल्प मात्रा में अफीम गर्भपात को बन्द कर देती है, और अधिकता ने क्या किया।

## कोकीन

भारतीय कैसे अभागे हैं कि आये दिन इन पर नये २ कष्ट और आपत्तियां आती रहती हैं, इस सीमा तक अधोगति को प्राप्त होगये हैं कि प्रत्येक दोषको यह तत्काल ग्रहण कर लेते हैं। कोकीन का प्रयोग मादक द्रव्यों की रीति पर इतना बढ़ गया है कि रोना आता है, और यह कितना बढ़ जाता यदि सरकारी रोक टोक न होती। अब इसकी चोरी बिक्री होती रहती है। जो पकड़े जाते हैं, सज़ा पाते, परन्तु लोभवश फिर लग जाते हैं। कोकीन अत्यन्त बिष है। एक रत्ती एक मनुष्य को मार सकती है। दन्तवैद्य दन्त उत्पादन के समय शून्यता करने को कुछ लगाते हैं, वहां से ही जो किंचित् मात्रा में

रक्त में प्रवेश करती है, हृदय घुटना आरम्भ होजाता है। अत्यन्त स्मवाई है, और यही कारण है कि इसको नशा की रीति पर प्रयुक्त करते हैं। कहते हैं स्वादिष्ट होती है, और व्यभिचारियों के वास्ते अफ़यून से बढ़कर कार्य्य साधक है। एक पुरुष की स्वयम् कथित कथा हम अभी लिखेंगे। अर्द्ध रत्ति से अधिक कोकीन चाहे त्वचागत की जावे वा म्यूकस ( झिल्ली ) पर रखदी जावे तो मारक चिन्ह प्रकट करती है।

## चिन्ह

हृदय का घुटना, नाड़ी निर्बल वेगयुक्त, श्वास और नाड़ी प्रायः विषम, मुख वर्ण की अधिक पीतता, जैसे मृत्यु छा जाती है, भारीपन, श्वासावरोध, मतली, वमन, कभी नेत्रान्धता, कभी दौरे भी होते हैं।

## चिकित्सा

इसकी चिकित्सा सम्प्रति विशेष ज्ञात नहीं हुई है, अपितु कतिपय डाक्टर लिखते हैं कि ईश्वर जाने आराम आवे वा न आवे कुछ नहीं कहा जाता है डाक्टर विलियम मरेल एम० डी० साहिब ने तो इतना लिखा है कि रोगी को सीधे घुटने उठाकर आराम से लेटे रहना उचित है, और यदि जोश की आवश्यकता हो तो बराण्डी मुख के मार्ग वा त्वचा के मार्ग दी जावे और बस ! किन्तु डाक्टर जेम्स डबल्यू हालैण्ड साहिब ने लिखा है कि आमाशय के शोधनान्तर यत्किंचित् क्षारविषों की चिकित्सा है वही करनी उचित है। टैनन दें, आयोडीन १ ग्रेन, पोटासियम् आयोडीन एक ग्रेन, पानी में घोल कर देवें। जोश देने की आवश्यकता हो तो ह्विस्की और कैफ़ीन दिया जाता है। पट्ठों के जोश के लिये मारफिया दिया जाता है, चर्म नील वर्ण पड़ जावे तो आक्सीजन डी जीटैल्स भी दिया जाता है और एमिल नाइट्रेट को सूंघा जाता है।

## परीक्षा

आमाशय से जो मलादि लिया जावे यदि उसमें कोकीन हो तो आयोडीन पोटासियम आयोडीन सोल्यूशन में घोल करके उसमें संयुक्त करने से उसके भीतर जो कोकीन होती है वह रक्त वर्ण होजाती है।

**नशा की रीति पर कोकीन का व्यवहार** विलायत में बहुत कम है, आर्य्यावर्त्त में यह थी ही नहीं अतः इस पर विशेष अनुसन्धान नहीं है। डाक्टर हालैण्ड साहिब ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में केवल डेढ़ पांक्ति में यों लिखा है, "कोकीन के व्यासनिक प्रयोग से सदाचार नष्ट होता रहता है। और पट्ठे निर्बल और विषम होजाते हैं"। एक बार एक महाशय ने समाचार पत्र में अपनी व्यवस्था मुद्रित कराई थी जो निम्न लिखित है:—

## 'मै' और कोकीन

न जाने इन की निगाह ने किया था क्या जादू।
वह खींच ले गए बे अरिन्त पार करके मुझे ॥

सन् १८९९ ई० में मैंने किसी समाचार पत्र में यह पढ़ा था कि सहारनपुर के भोग विलासी लोग कोकीन अधिक खा रहे हैं। मैं सन् १९०० ई० की अपरेल में सहारन पुर आया और यह ज्ञात करना चाहा कि कोकीन क्या है और क्यों खाते हैं, और इसके लाभ भी कुछ हैं या नहीं। मैं सैय्यद मुहम्मद हसन से कि जो इसको सहारनपुर में प्रचलित करने वाले थे, मिला और पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्वादिष्ट और स्तम्भक होने के अतिरिक्त अन्य कुछ लाभ नहीं देती, और उन्होंने भी बड़े बल से कहा कि इसमें कोई हानि नहीं है। मैंने उनसे लेकर देखी तो वह सेल खड़ी की भांति पिसी हुई थी। डाक्टरों से ज्ञात हुआ कि यह एक प्रकार का विष है। उन दिवसों में इसको

बहुत थोड़े लोग खाते थे परन्तु सन् १९०३ ई० पर्यन्त बहुत से प्रत्युत शतशः मनुष्य कोकीन के ग्राहक हो चुके थे और इसी प्रकार इसका व्यवहार दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता था; यहां तक कि यह सन् १९०५ ई० में इतनी उन्नति कर गई थी कि यदि कोई उचित रीत्या गणना करता तो शायद प्रतिशत अस्सी कोकीन के खाने वाले मिलते और अब इससे भी अधिक बढ़ गई है। ३ जनवरी सन् १९०५ ई० को मेरे एक मित्र के यहां मेरा निमन्त्रण था, वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि यहां नृत्य और गान की सभा भी थी। यहां मेरे अन्य भी बहुत से मित्र सभा में सम्मिलित थे, भोजनान्तर जब गाना आरम्भ हुआ तो सब लोग कोकीन खा रहे थे, बहुत से मित्रों के हठ से मैं भी उस दिवस उसके शहीदों में सम्मिलित हुआ।

कोकीन वालों की नामावली में मुझ को प्रवेश होने का मौका प्राप्त हो गया। चूंकि यह बहुत स्वादिष्ट पदार्थ था, मैं इसे नित्य ही खाने लगा। मेरी आयु अनुमान २५ वर्ष की है और मुझको ईश्वर ने भोग विलासेच्छा की अधिक सामग्री प्रदान की थी।

जिसका लघु प्रमाण यह है कि १॥ वर्ष में मैंने अपनी और अपने पूज्य पाद पिता जी की कष्टोपार्जित कमाई के अनुमान अष्ट सहस्र रुपए उड़ा दिए, परन्तु कोकीन के उपयोग ने मुझको एक ही मास में यह बतला दिया कि यह नवयुवक और बड़ी से बड़ी भोग शक्ति रखने वाले को भी पुरुषत्व शक्ति से रहित कर देता है, क्योंकि सेवन काल में तीन मास पर्य्यन्त किंचित मात्र भी इस ओर इच्छा न हुई। अन्त में सोचने और विचारने पर ज्ञात हुआ कि यह कोकीन का परिणाम है। यह प्रमाणित होने पर मैंने उसके व्यवहार से सौगंध खाई और एक हकीम साहिब से अपनी चिकित्सा आरम्भ कराई। जिन्होंने मुझे कई जुलाब देने के पश्चात् अधिक मात्रा से दवाउल मिस्क और अनोश दारू अम्बरी का इस्तेमाल कराया। एक मास पर्य्यन्त बराबर

खाने के पश्चात मुझको और मेरी सर्व शक्तियों को चैतन्य अनुभव होने लगा, और मुझ में पहले जैसी शक्ति उत्पन्न हो गई। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया, और उस धिक्कृत कोकीन शौन्योत्पादक से परे रहा। अब छोड़े हुए १॥ वर्ष का समय हो चुका है, अभी तक मुझको किसी प्रकार की अनियमता नहीं प्रतीत होती है, यदि कोकीन को स्तम्भक माना जावे तो बस इस सीमा पर्य्यन्त समझना उचित है कि एक थोड़े समय का व्यवहार निकम्मा बना देता है। और आगामी काल में सन्तति से नैराश्य हो जाता है। सहारनपुर में बहुत से नव-युवक इसके प्रभाव से मृत्यु प्राप्त हो चुके हैं और अधिकशः इस समय मंचान पर पड़े वैद्य तथा डाक्टर साहिबान के जूठा उठाने में संलग्न हैं और अपने बूढ़ों की कमाई का बहुत बड़ा भाग इसमें नष्ट कर रहे हैं। यहां छोटे २ बच्चे कि जिनकी आयु आठ २ नौ २ वर्ष की है, खड़े २ आने और दो २ आने की कोकीन खा जाते हैं। और ऐसे वृद्धजन कि जिनके श्वेत डाढ़ियां और रोशन चेहरे थे इसको बराबर काम में ला रहे हैं और कोई वकील और बहुत से न्यायालय के अधिकारी पुलिस के कर्म्मचारी गण भी इसके खाने को अपना गौरव समझते हैं।

हम तो डूबे हैं सनम तुमको भी डुबायेंगे।

कोकीन का व्यसन, देहली, देरादून और रुड़की तथा अम्बाला आदि में भी सहारनपुर के उत्पादियों का प्रसारित किया हुआ है। और सहारनपुर के इलाकों, कस्बों और तहसीलों में इसका सामान्य बर्ताव हो गया है।

## कोकीन सहारनपुर से देहली में

सन् १९०५ ई० के आरम्भ में एक सहारनपुर की थियट्रिकल कम्पनी जिसकी अध्यक्षा नज़ीर जान तवायफ़ (गणिका) थीं, इन्द्र-

प्रस्थ ( देहली ) में तमाशा करने के उद्देश्य से आई और कोकीन का व्यसन अपने साथ लाई। उस समय देहली के चन्द व्यापारियों क अतिरिक्त कोई नहीं जानता था, कि कोकीन क्या वस्तु है। बा नज़ीर जान को मिश्री जान तवायफ साकिन मुहल्ला बिल्लीमारां ने निमन्त्रण दिया। खाना खा चुकने के पश्चात् मद्य का चक्कर चला और उसके पीने पर पान की बारी आई तो नज़ीर जान ने अपनी जेब से कोकीन की शीशी निकाल कर पान में उडेल कर खानी आरम्भ कर दी, और मनुहार से मिश्री जान को भी पुरस्कृत की, कि उसने बिना विवाद के खाई और उसी रोज़ नित्य प्रतिदिन बहुत उत्साह से खाना आरम्भ कर दिया। उस निमन्त्रण में कतिपय भोग विलासी जन इन्द्र-प्रस्थ के भी उपस्थित थे, जोकि उसी दिवस, जब कि उन्होंने देखा था, कोकीन के मार्ग में प्राण दाता हो गए। उनके नैत्यिक प्रसंग से शनैः शनैः इन्द्र प्रस्थ में भी इसकी प्रथा बढ़ती गई, यहां तक कि थोड़े दिनों में सहस्रों इसके इच्छुक हो गए। अब तो केवल देहली में नित्य प्रति दो तीन सहस्र रुपए की कोकीन खाई जाती है। बी मिसरी जान तीन सहस्र रुपयों के अतिरिक्त न केवल अपना भूषण अपितु स्वास्थ्य भी कोकीन की भेट कर चुकी है। इसके विक्रयण से देहली के थोड़े ही मेडीकल हाल और व्यापारी वंचित रहे होंगे, वरन् खूब जाति और देश के रुपए नष्ट करने में प्रत्येक दुकान दार यत्न कर रहा है। पश्चात्ताप! अपने थोड़े लाभ की लालसा में दूसरी ओर कुछ नहीं देखते हैं। सहारनपुर में कोकीन के बहुत से व्यापारी हैं। दो एक पर अभियोग भी चल रहा है। कोकीन के व्यापारियों के प्रतिवासी बहुत कष्ट में हैं, और उनको आराम से सोना तब तक असम्भव है जब तक कि उसकी रुकावट न हो जावे, क्योंकि खाने वाले व्यापारियों को रात्रि भर आवाज़ें दे देकर जागृत करते हैं, और रात्रि भर आते रहते

हैं, क्योंकि कोकीन भक्षियों की नीन्द उड़ जाती है, अतः वह रात्रि को अधिक खाते हैं, और तलाश करते हैं ॥

एक बार कोकीन पर देशोपकारक में हमने एक निबन्ध लिखा था। उसको यहां लिखकर हम इस विषय की पूर्ति कर देते हैं। ईश्वर करे कि हिन्दुस्तानी उसको सर्वथा त्याग दें। और पुनः विशिष्ट अनुसन्धान युक्त हमको बड़ी २ पुस्तकें रचने की आवश्यकता ही न पड़े, निबन्ध यह था।

## एक और दुर्व्यसन

जब बुरे दिवस आते हैं तो अपने भी पराए हो जाते हैं। जिन औषधियों से सहस्रों रोगों को दूर करना होता है, उन्हीं से नाश भी किया जाता है। किसी देश में एक नशा होगा किसी में दो, परन्तु आर्य्यावर्त में संसार भर के नशे एकत्रित हैं। पाव भर नित्य अफीम भक्षण करने वाले यहां विद्यमान हैं, और अढ़ाई तोले खाने वाले तो अगणित समझिए। राजपूताना की ओर एक रियासत में मेरे मिहरबान गए। वह कहते थे कि वहां मनुहार ही अफयून से की जाती है। जब दरबार में बैठे हुए थे, अफ़ीम प्यालियों में घुली हुई पेश हुई। प्रत्येक थोड़ा २ पीता था वा मावा लेकर खा लेता था। मेरे मित्र कथन करते हैं कि मुझको किसी जानकार ने बतला दिया था कि इसको इनकार करना बुरा समझा जाता है, चुनांचे उन्होंने भी एक मावा उठा लिया और चतुराई से इधर उधर फेंक दिया। मुझ को एक राजा के सम्बन्ध में ज्ञात है कि वह कटोरा में अफ़ीम घोल कर पीता है। बार में एक सरदार साहिब हैं कि सदा मद्यपान और भङ्ग के कटोरे के अतिरिक्त पूरी मात्रा में अफ़यून भी भक्षण करते हैं। वह अफ़यून जो औषधियों में मिलकर सहस्रों रोगों को दूर करती थी, अब लाखों घरों को नष्ट करती है। और काली बला दिल खोल कर हानि पहुंचा रही है।

मद्य का वर्णन करने की तो आवश्यकता ही नहीं यह तो सत्य है कि इंगलिस्तान वाले भी मद्य पान करते हैं, लेकिन उनमें बहुत थोड़े समावस्था को त्यागते हैं। हिन्दुस्तान के मद्यपियों के वास्ते समावस्था के कुछ अर्थ ही नहीं होते हैं। मुझे अमृतसर के एक वकील की दशा ज्ञात है, जो कि जब मद्य आरम्भ करता था, आठ २ दिवस सिवाय मद्य पान के कुछ खाता पीता न था। दीन दुनियां का कुछ ध्यान न होता था। घर वाले प्रसन्न होते थे जब इसका मद्य चक्कर बन्द होता था। आर्यावर्त में एक वाममार्ग मत फैला हुआ है, जिसका धर्म यह है कि इतना मद्य पान करो कि संज्ञा नष्ट हो जावे, फिर पियो फिर गिरो, फिर पियो; फिर गिरो। और इसी प्रकार पीते जाओ तो मुक्ति पद को प्राप्त हो जाओगे। खेद का स्थान है कि अधिकशः साधु इस धर्म के अनुयायी होते हैं। सिक्खों में बहुत थोड़े लोग होते होंगे, जो मद्यपान नहीं करते, यद्यपि उनकी माननीय धर्म्म पुस्तक में लिखा है:—

मछली शराब सुरापान भंग जो जो प्राणी खावें।
धर्म्म कर्म्म जितने किये सभी अकारथ जावें॥

चरस पान करने वाले बड़े २ शहरों में इतने विद्यमान हैं कि परमात्मा रक्षक ! परमात्मा रक्षक !! एक बार मैं जण्डयाला में एक मनुष्य के साथ उस स्थान पर गया जहां उसको अपने मित्रों के साथ मद्य पान करना था। रात दस बजे का समय था। जंडयाला कोई बड़ा शहर नहीं है, तथापि अनुमानतः कई शत मनुष्य वहां चरस पीने वाले होंगे। चरस के दम लगते हैं और बेहोश होते हैं। जो अधिक दम लगावे अधिक झाल निकाले, वह अपने आप को अधिक बहादुर मानता था। थोड़े मिनटों में सारा कमरा धुआंधार से भर गया और बैठना कठिन हो गया। इस धूम्र के प्रभाव से ही मेरे मस्तिष्क में चक्कर आने लगा

और हम शीघ्र ही वहां से आगए। यह देश उन्नति की इच्छा कभी कर सकता है, जिसमें इतने नशाबाज़, आलसी, निर्बल तथा कायर मनुष्य बसते हैं? इसी प्रकार गांजा, ताड़ी इत्यादि की दशा है। भंग का तो कुछ पूछिए ही नहीं। इसको तो शिव जी की बूटी ही कहते हैं, कोई सिक्खों की धर्मशाला देखिए, भांग घुटी जा रही है, मानो कि भंग धर्म का अंग है। सिक्खों के सब देवस्थान दरबार साहिब में तीसरे पहर को चले जाइए, कई स्थानों पर भंग घुट रही है, और बिना मूल्य प्रत्येक को दी जाती है। क्यों पढ़े लिखे सिक्ख महाशय इसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं? हुक्का जैसे साधारण नशा की इतनी घृणा है, तो भंग मद्यादि से कोसों भागना उचित है। इस पर इति नहीं।

अब एक और नशा आरम्भ है, कोकीन। जो इन सब से भयंकर और प्राणहर कहा जावे तो योग्य है। एरीथ्राक्सा इलम कोका एक पौदा होता है। प्रथम उसके पत्ते चाय की रीति पर उपयुक्त होते रहे, अब डाक्टरों ने उसका सत्व निकाला है, जिसका नाम कोकीन है। कोकीन से अन्य बहुत से योग बनाए जाते हैं। यथा अलिगज़िर कोका, एक्सट्रैक्ट कोका, कोका वारन, कोकीन साइट्रास, कोकीन हाइड्रो ब्रोमाइड, कोकीन हाइड्रो आयोडाइड, कोकीन नाइट्रास, कोकीन सेलीसित्रास, कोकीन सेलफास इत्यादि औषधियों की रीति पर सब अपने अपने में अनुपम हैं। कोकीन ने भी संसार की अधिक सहायता की है। नेत्रों पर ओपरेशन करते समय अल्प मात्रा के लगाने से नेत्र शून्य हो जाते हैं। दांतों को भी इसी से शून्य करके छेदन भेदनादि किया जाता है। कोकीन को सूई से शरीर में प्रविष्ट करके यदि क्लोराफार्म सुंघाया जावे तो क्लोरा फार्म की हानियां थोड़ी होती हैं, और थोड़े क्लोराफार्म से भी कार्य साधित हो जाता है। कोकीन सब से बढ़कर शौन्य कारक है, तत्काल चेतना और संचाल का नाश कर देती है

अतः कर्ण पीड़ा, दन्त पीड़ा, बिच्छू के काटे इत्यादि पर लगाते हैं, वह स्थान तत्काल शून्य होकर आराम हो जाता है।

शून्यता कारक विषद पदार्थों में स्तम्भक गुण भी होता है, और नशा भी होता है, हिन्दुस्तान में जब कोकीन आई, किसी नशाबाज़ को ज्ञात हो गया कि इसमें भी स्तम्भक गुण है। बस फिर क्या था इसका उपयोग आरम्भ होगया। बंगाल में बाबू लोग इसके इतने गुलाम होते हैं कि किसी अन्य नशे के नहीं। इसका मूल्य भी केवल तीन रुपए ड्राम तक होता है, और इसका नशा जब कि यह पान के साथ लगा कर भक्षण की जाती है, आध घण्टा पर्यन्त ही रहता है। इस प्रकार व्यय भी इतना होता है कि शीघ्र ही जेब ख़ाली हो जाती है। इसका नशा ऐसा बेढब का है कि जब उतर जावे तो चैन ही नहीं पड़ती। इसकी मात्रा डाक्टरी अनुसन्धानानुकूल एक रत्ती का पन्द्रहवां भाग है, परन्तु हिन्दुस्तान में, जहां आध पाव प्रतिदिन संखिया भक्षण करने वाले विद्यमान हैं, कोकीन की मात्रा इस थोड़े से समय में तोला पर्य्यन्त पहुंच गई है। किसी भी अन्य नशे से शरीर का इतना नाश नहीं होता जितना कि इससे होता है। बंगाल, बिहार, सहारनपुर, देहरादून अदि बाबुओं के केशों में इसकी शीशी उपस्थित रहती हैं। सर्व अंग निर्बल हो जाते हैं, और नशाबाज़ घुल घुल कर मर जाता है। अन्य नशा तो शीघ्र त्याग किया जा सकता है पर इसका त्याग असम्भव है।

प्रसिद्ध है कि सहारनपुर में एक वेश्या ने सिसक सिसक कर बहुत कष्ट से प्राण छोड़े। ज्ञात हुआ कि एक सहस्र रुपए की कोकीन उसने एक वर्ष के समय में खाई थी। कोकीन से मस्तिष्क, पाचन यन्त्र, कलेजा हृदयादि सर्वस्व स्वकार्य्य में अनियमित और निर्बल हो जाते हैं। कोकीन से नष्ट हुए स्वास्थ्य की पुनरावृत्ति कठिन ही नहीं, प्रत्युत

असम्भव है। कोकीन की नशा बाज़ी का परिणाम यही है कि घुल घुल कर वह अपने जीवन से हाथ धो ले। विलायती समाचार पत्र भी लिखते हैं कि विलायत में भी इस दुष्ट रोग ने अधिक हानि आरम्भ कर दी है ॥

## भांग–चरस–गांजा।

भांग का पौदा समस्त भारत में पाया जाता है और चरस भांग से ही बनती है। गांजा भी एक प्रकार की जंगली भांग ही है। भांग को फारसी में किन्नब–कबीरा, बरकुल खयाल, हशीशातुल फुकरा, निशात अफ़ज़ा, फ़लक सैर, अरशनुमा, हुब्बतुलमसाकीन, शहवत अंगेज, चतरे अखजर, हरकलेके शीराज़ी इत्यादि कहते हैं। जमुर्दरंग अंग्रेजी में कैनिवस सटाइवा ( Cannibas Sativa ) कहा जाता है, हिन्दी में भांग-भंग-विजया-बूटा कोलापन्नी और संस्कृत में भृंगा, विजया जया, शुक्राशन, बारपुत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षपी, मोहनी, मनोहरा, कामाग्नि, माया, शिव प्रिया आदि कई नाम हैं।

**चरस**–भांग का गोंद होता है, चमड़े का कपड़ा पहन कर इस के पोदों के अन्दर चलने से जल कण सम्मिलित यह वस्त्रों से लग जाती है, जिस से खुरच ली जाती है। फारसी में इसको रूहुलबंज शबनम बंग, हिन्दी में चरस, अंग्रेजी में केनबिन, संस्कृत में सम्विदा मंजरी, हर्षिणी इत्यादि नाम हैं।

जंगली भांग की कोंपल और फूल को गांजा कहा जाता है, और अंग्रेजी में इंडियन हम्प, हिन्दी में गांजा कहते हैं।

## नशे की रीति पर उपयोग विधि

इसको कई विधि से उपयुक्त करते हैं। कोई घोट कर लवण वा मिसरी डाल कर पीते हैं, परन्तु जिनको मिल सके वह खशखाश, मग्ज़ कद्दू, इलायची इत्यादि साथ डाल कर घोटते हैं, और इसको

सरदाई वा ठण्डाई कहते हैं। जितनी अधिक घोटी जावे उतना ही नशा बढ़ता है। कई इसकी शुष्कता निवारणनार्थ पानी के स्थान में दुग्ध भी संयुक्त करते हैं। सदैव के अभ्यासी ऋतु परिवर्त्तन के साथ साथ परिवर्त्तन भी करते रहते हैं। जैसे वर्षा ऋतु में खुरासानी अजवायन, शीत ऋतु में बड़ी इलायची, भांग को पानी में भिगो कर हाथ से मिला कर सुखाकर किंचित घृत में भून कर तिलों के साथ कूट कर खाते हैं। भांग पीस कर दूध में घोल कर छानकर दूध का खोया करके उसमें चाशनी संयुक्त कर पेड़े वा बरफ़ी बनाए जाते हैं और यह माजून के नाम से बाजारों में बिकती है। कई भांग लेकर शोधन करके किंचित् पानी और घृत को अग्नि पर चढ़ा कर, थोड़ा सा पानी रहे तक उतार कर छान कर रख देते हैं, और पुनः घृत को पृथक कर लेते हैं और पानी फेंकते हैं, इस घृत में खांड की चाशनी मिला कर भी बरफी काट लेते हैं। गांजा हुक्का की रीति पर पिया जाता है, और चरस एक लम्बी चिलम में रख कर ऊपर कोयले रख कर खूब सूंटे लगाते हैं। सूंटे की प्रशंसा यह है कि चिलम पर आग लगनी आरम्भ हो जावे।

## गुण और लाभ

भांग चरस और गांजा के लाभ बहुत हैं, सब होम्योपैथिक, डाक्टरी, यूनानी और हिन्दी पुस्तकें इसके नाना प्रकार के उत्तमोत्तम लाभ का वर्णन करती हैं। गांजा का सत्व निकाला हुआ डाक्टर लोग प्रायः उपयुक्त करते हैं, डाक्टरी पुस्तकों में भी इसके बहुत गुण लिखे हैं। वैद्य लोग प्रायः वाजीकरण और स्तम्भन की औषधियों में इसको प्रविष्ट करते हैं। इनके गुणों का पूर्णतया उल्लेख किया जावे तो बहुत पृष्ठ चाहिएं, परन्तु हमारा काम यहां पर गुणों का उल्लेख करने का नहीं है, क्योंकि हम विष चिकित्सा लिख रहे हैं, और न हमारे

पास लिखने को स्थान है। पुस्तक का आकार अधिक होता जा रहा है जिससे अब हम लेख यथा शक्ति संक्षिप्त कर रहे हैं, बस इतना जान लीजिए कि भांग औषधी प्रयोग में प्रशंसनीय वस्तु है। किन्तु नशा की रीति पर जैसा पीछे सप्रमाण वर्णन किया गयाहै, अत्यन्त हानिकर है।

## विष की रीति पर।

एक्सट्रेक्ट आफ़ इंडियन हम्प अर्थात् गांजा के सत्व जो लोग उपयुक्त करते हैं। उस की मात्रा एक रत्ती से २ रत्ती तक है, और टिंचर १५ विन्दु पर्य्यन्त दिया जाता है। भांग की मात्रा ६ मासा है। गांजा और चरस पिये जाते हैं, खाने में उन की मात्रा १ से ४ रत्ती तक है। यह तो चिकित्सक की सम्मति से जब किसी रोग में दिया जावे, उस की मात्रा हुइ, अधिक इन में से कोई वस्तु भक्षण की जावे तो विषैला प्रभाव उत्पन्न होता है जिसके चिन्ह नीचे लिखे जाते हैं।

## लक्षण।

अफयून की भांति यह नारकोटिक (विकाशी) है, और इसका प्राथमिक प्रभाव जोश करने वाला होता है। मनुष्य सावधान और स्फूर्ति युक्त दृष्टि पड़ता है, भोग शक्ति भी अधिक अनुभव होती है, नाना प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं, अविद्यमान और असत्-पदार्थ दृष्टि गोचर होते हैं, शब्द अकारण ही श्रवण करता है। कोई हंसने लग जाता है, कोई कूदता नाचता है, कोई गाता है, कोई दौड़ने लग जाता है, आमाशय तेज होकर भूख को प्रकट करता है, व्यसन न होने के कारण होश ठिकाने नहीं रहते हैं, अन्त में उत्तेजक प्रभाव घट कर शैथिल्य प्रभावों का आरम्भ होता है। जोश दूर, आलस्य शिथिलता और तन्द्रादि छाजाते हैं। प्रायः देखा होगा कि **भांग पीने**

वाले भंगी लोग तीसरे पहर को मद्यपान करके रात्रि तक बहुत स्फूर्ति युक्त रहते हैं, अन्त में सुस्ती आती है और ढीले पड़ जाते हैं। हकीमों के अनुसन्धान भी कुछ ऐसे ही हैं। वह लिखते हैं कि भांग के पत्तों में दो भाग होते हैं। एक हारलतीफ (सूक्ष्मोष्ण) जिससे आनन्द प्रसन्नता ज्ञान और विचार शक्ति में तेजी, मुख सौन्दर्य्य, क्षुधा, पिपासा, भोग शक्ति आदि की अधिकता हुई। दूसरा 'तत्व' बारद कसीफ़ अर्थात् शीत और स्थूल है। इससे शौन्य कारक विषद पदार्थों की भांति आलस्य,मुख विरूपता, इन्द्रियशिथिलता, शैथिल्य, वैमनस्यादि, मस्तिष्क और शिर में पीड़ा और आमाशय विकृति होती है। यदि अधिक भक्षण कीगई हो तो इस से सुस्ती बढ़कर अहिफेन के से लक्षण प्रकट होकर मनुष्य यम धाम को सिधार जाता है। (देखो अहिफेन वर्णन में)

## चिकित्सा।

इसकी चिकित्सा भी प्रायः वही है जो अफयून की है, डाक्टर रोगी को नहीं सोने देते और सिर पर शीतल जल प्रक्षेप करते हैं, ग्रीवा पृष्ठ वा गुद्दी पर प्लस्तर लगाते हैं।

इसके नशे की अधिकता में सिरका वा लीमूं का अर्क वा आचार खिलाते और सरसों का तैल कान में डालते हैं। जिनको प्रथम वार ही इसको अधिकपान करने का संयोग हुआ है, वह जानते हैं कि वस्तुतः फलक सैर (आकाश भ्रमण) इसका नाम सोचकर रक्खा गया है। तीन दिवस पर्य्यन्त आकाश की सैर कराती रहती है।

ठग, चोर वा ऐसे ही अन्य पुरुष तम्बाकू के स्थान में गांजा वा चरस अथवा धतूरा युक्त कर प्रायः साथियों को अचेत कर लूट ले जाया करते हैं, उनकी चिकित्सा भी इसी प्रकार करनी उचित है। हकीमों ने भांग का दो स्थान पर वर्णन किया है। भांग और भांग पहाड़ी अधिक तेज होती है, भांग के वास्ते अदरक का रस पिलाना,

वमन कराना, आम की खटाई, वा खट्टा आम, लीमूं का अर्क डालकर नमक संग डालकर पिलाना, और दुग्ध पान कराना आदि चिकित्सा लिखी है। स्मरण रहे कि मिष्ठान्न से इसका नशा बढ़जाता है।

पहाडी भांग के वास्ते वमन विरेचन कराना, गधी का दुग्ध पान कराना, उष्ण तैलों का प्रयोग और हिंगु का देना।

गांजा और चरस का भी यही उपचार है, परन्तु दूध और रबडी इसमें लाभकारी हैं। ( चिकित्सा नियम, अहिफेन चिकित्सा से देखें )

## व्यसन

जैसा कि लिखा गया है गांजा और चरस का धूम्र और भांग का पान करना नशा के वास्ते भिन्न २ विधियों से होता है। विलायत में इसकी प्रथा बहुत कम है, आर्य्यावर्त्त में प्रायः है। भांग के सम्बन्ध में इसकी प्रशंसा के इतने वाक्य मिलते हैं कि आश्चर्य्य होता है कि ये क्यों॥

इसके नशा के तौर पर पिए जाने पर कई कहानियां लिखी हैं, शाफइ मिस्री लिखते हैं कि ठीक प्रकार निश्चय नहीं है कि भांग कब प्रकट हुई है, कोई इसको हैदरया और कलन्दरया कहते हैं, जिसका कारण यह वर्णन किया जाता है कि हैदर ५०७ हि० में भाग कर किसी कारणवश बहुत काल पर्य्यन्त जंगलों में फिरता रहा वहां संयोग वशात् उसको यह हरियाली ज्ञात हुई। पुनरावर्त्तन पर प्रायः उसके मित्र भी उपयोग में लाने लगे। कोई कहते हैं कि अहमदसारिक ने सब से प्रथम इसको प्रकट किया। भारतीय लोगों के कथनानुसार शिव जी महाराज ने सब से प्रथम इसको आरम्भ किया। कहते है समाधि में इनको सहायता मिलती थी। एक दोहा यों है:—

भङ्ग गङ्ग दो बहन हैं, रहती शिव के सङ्ग।<br>
लड्डू खिलानी भङ्ग है, तरन तारनी गङ्ग॥

प्रायः ऐसे २ दोहे मिलते हैं :—

चढ़ती में ज्ञान और उतरती में ध्यान ।
अलकल बेकल करे तो तुझे गुरु गोरखनाथ की आन ॥

अर्थात् जब नशा चढ़े तो ज्ञान की बातें सूझें और उतरने पर ईश्वर का ध्यान हो, यदि विकल्प हो तो गुरु गोरखनाथ सहायता करें ।

## दोहा ।

साधू खाई सन्तों खाई खाई कंवर कन्हाई,
जो बिजया की निन्दा करे उसको खावे कालका माई ।

## सवैया

बिजया देत गंवारन को सेर दो इक नाज बिगाड़न को ।
बालक पिए बक २ हंसे, बूढ़ा पिए झक मारन को।
जवान पिए तो कलोल करे हस्ती के दन्त उखाडन को ।
जोगी जो पिए अलमस्त रहे स्वामी का नाम उचारन को ॥

## सवैया

साधुन के, अरु सिद्धन के अरु भट्टसु भट्टन के मन मानी ।
कामन के अरु दूतन के राजपूतन घोटम घोट के छानी ॥
याही के बीच अनेकन तीर्थ, याही में गङ्ग तरङ्ग के पानी ।
कोटिन रंग दिखावत है जब रङ्ग में लावत भङ्ग भवानी ॥

## कवित्त

मिरच मसाला सौंफ कासनी मिलाय भङ्ग खाए ते अनेक रंग२ को उभारती ।
जारती जलोदर, कठोदर, भगंदर को, सन्निपात, बवासीर बावन बिदारती ॥
सुकवि शिवराम दाद, खाज को खराब करे,
छाई, छींक, छाजन, निसवार को निकारती ।
पीनस, प्रमेह बीस, बावन तरह की पीर, कमर दरद को गर्द कर डारती ।

ऐसे२ कथन और वाक्य प्रत्येक स्थान पर प्रयुक्त होते हैं जिनके कारण बहुत प्रचलित है। ठाकुर द्वारे, देवी द्वारे, धर्मशाला में कोई इसके फन्दे से नहीं बचे। मुसलमानों के तकियों में भी बहुधा प्रथा होती जाती है, यह लोग भी निम्न लिखित शेर पढ़ कर इसको काशिफुर मूज ( भेद प्रकाशक ) कहते हैं:—

बङ्ग जदेगो सर्रे अनलहक शुद आशकार।
मारा बईगियाहे जईफई गुमां न बूद॥

( मनसूर ने जो अनलहक कहा था, उसका भेद भङ्ग पान से प्रकट हुआ। मेरा यह निश्चय न था कि ऐसी तुच्छ वस्तु से यह बात प्राप्त होगी ) परन्तु प्रश्न होता है कि भङ्ग यदि हानिकर वस्तु है तो इतने प्रशंसा वाक्य क्यों हैं? जहां तक मैंने विचारा है इसका कारण यही है कि चूंके इसकी प्रथा साधुओं, फ़कीरों, धर्मशालों, ठाकुर द्वारा, तकियों आदि में अधिक हो गई, और यह लोग निकम्मे बैठे इसी प्रकार की तुकें हांकते रहते हैं, इस वास्ते कूंडी डंडा बजाते और ऐसे कबित्त बनाते और पढ़ते हैं। जो कोई बुरा कार्य भी करता है तो उसकी प्रशंसा में बक ही दिया करता है। कामी पुरुष कहते हैं जिसने उन जैसा बन कर आनन्द प्राप्त नहीं किया वह संसार ही में क्यों आया, एक मनुष्य एक दिवस हुक्का पीकर कहता हुआ सुना "हुक्के बाझो नानका धृक जीवन संसार" ( हुक्का के बिना संसार में जीना व्यर्थ है, यह नानक देवजी फर्माते हैं ) कैसे शर्म की बात है गुरु नानक देव ही के साथ हुक्का को मिला दिया किन्तु इस पर पुनः यह प्रश्न होता है कि इसकी प्रथा उन स्थानों पर क्यों हो गई इसके कई कारण हैं।

## प्रथा के कारण

यह विचार आरम्भ से ही चला आता है कि भांग के पीने से

जिस ओर ध्यान लग जावे उस ओर लगा ही रहता है। यदि रुदन आरम्भ होगा तो यही चलेगा, यदि हंसना आरम्भ हो गया तो यही रहेगा, काम शक्ति के विचार में पड़ गया तो ध्यान उसी में लग जावेगा, और यदि ईश्वर के स्मरण में लग गया तो ध्यान वहां ही रहेगा। इसी वास्ते सूरदास जी ने कहा कि वृद्ध, बालक, युवा, सर्व साधारण को कदापि भांग न पीना चाहिए । जिनको अपना पूरा विश्वास है कि उनका ध्यान परमात्मा की ओर ही लगेगा, ऐसे ईश्वरभक्त ही अधिक एकाग्रता के वास्ते इसका पान करें। यह विचार कुछ ठीक है परन्तु इस विचार का लाभ भी साधारण साधुओं फकीरों ने उठाया। ईश्वर भक्त इसकी आवश्यकता नहीं समझते हैं। वह परमात्मा की भक्ति क्या जो भांग पान से उत्पन्न हो? यह कौन सी बुद्धिमत्ता है कि शरीर और मस्तिष्क को सर्वथा नष्ट करने वाली वस्तु इस अर्थ ग्रहण की जावे कि स्यात् ध्यान परमात्मा की ओर ही लग जावे ॥

पंचेन्द्रिय में तीन प्रकार का धोका डाक्टरों ने वर्णन किया है। इल्यूयन—छोटी वस्तु बड़ी भयंकर दृष्टि पड़े, परन्तु पुनः विचार करने से दूर हो जावे ॥

हैल्यूसीनेशन—न होने वाली वस्तु का दृष्टि पड़ना वा सुनाई देना।

डिल्यूयन—छोटी वस्तु बड़ी भयकारी दृष्टि पड़े परन्तु पुनः विचार करने से दूर न हो ।

अनुसन्धानक कथन करते हैं कि भांग का नशा हैल्यूसीनेशन उत्पन्न करता है, असत् पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं । बस साधुओं को इन्द्र सभा, पूर्व पुरुषा, कृष्णलीला का, और मुसलमान फकीरों को किसी पूर्वज वा स्वर्ग का ध्यान आ जावे तो, यद्यपि उनका अभाव हो, परन्तु अपने अभिमान में वह उनको देखता है, बिना शब्द के सुनता है, वस्तुतः उसके वास्ते यह गोरख धन्धा है। स्यात् भांग ही ने उसके

ज्ञानपट खोल दिए हैं। वह नहीं जानता कि यह हैल्यूसीनेशन है। स्मरण रहे कि सिद्धों, गुरुओं, धर्मनेताओं, ऋषियों मुनियों ने कदापि भंग नहीं पी थी, और शिवजी महाराज के साथ इसको लगाना भी यारों की गप्प ही है। (ख) मद्य की शास्त्रों में बुराई की गई है, जिन दिनों वाममार्ग धर्म का आर्यावर्त में ज़ोर हुआ, तो मद्य, मांस और अण्डे आदि धर्म्म समझे जाने लगे, किन्तु शीघ्र यह सीन पूरा हुआ और नेक पुरुष उत्पन्न होकर सर्व साधारण को सत्यपथ पर लाए। ज्ञात होता है कि इन लोगों ने भांग की प्रशंसा करके उसके स्थान में इसी से अपनी अभिलाषा को पूरा किया ताकि निष्कलंक भी रहें, और जो व्यसन पड़ गया है वह पूरा भी हो जावे। ( ग ) भांग से काम शक्ति नष्ट हो जाती है। प्रत्येक योगी नहीं हो सकता है, परन्तु कई कारणों से जो साधू हो जाते हैं, उनका अन्य युक्तियों से काम को दबाना आवश्यकीय हुआ, और इसी कारण से भांग, चरस, गांजा की प्रथा इन साधुओं में प्रचलित हुई है। भांग से भी अधिक चरस की प्रथा है। साधू दम लगाए इसीमें मग्न बैठे रहते हैं, उनकी काम शक्ति मारी जाती है, शरीर दुर्बल हो जाता है, शारीरिक बल नष्ट हो जाता है। सम्भव है कि इसके प्रथित होने का एक यह भी कारण है।

( घ ) मथुरा जैसे तीर्थों में जब दान विधियां कुत्सित हुई और पाखंडी बेकार रह कर अयोग्य विधि से खाने लगे, यात्री आते हैं चोबों का भोजन होता है, क्षीर मोदक और पेड़े सेरों खाने चाहिए। तो डंडा कूंडा लेकर भङ्ग घोटी और पी ली, इसके पीने से बनावटी भूख जोश में आ जाती है, बस जो आया ठूसे गए। कोई तो इतना खा जाते है कि फिर दूसरा उठा कर उनको घर ले जाता है। सारा दिन कोई काम नहीं, भांग की प्रशंसा में दोहे ही सही। मैं पिछले दिनों मथुरा गया, मैंने ऐसे दोहे सुने कि आश्चर्य आता था। मेरे साथ एक पंडा हो लिया, मैंने पूछा यहां की प्रसिद्ध चीजें कौनसी हैं।

उत्तर मिला कछवा, बन्दर, चोबा, मन्दिर। क्योंकि यही वस्तुएं अधिक हैं। चोबों की प्रसिद्धि पूछी तो एक दोहे में उत्तर दिया जिसका भावार्थ यह था:—यजमानों से सेरों खाना, भांग पीना, डंड पेलना। व्यायाम उनको पूरा करना पड़ता है, क्योंकि इतना खाकर पचाना भी आवश्यक है। जब ज्ञात हुआ कि मैं वैद्य हूं, तो सोज़ाक वाले निकल पड़े, बस क्या आश्चर्य जो ऐसे मनुष्यों ने इसकी अधिक प्रथा डाली हो॥

मेरा प्रयोजन ऐसे लिखने से उन तीर्थों की बुराई का नहीं है, परन्तु इसमें संशय नहीं कि विद्या बुद्धि से तामस दान प्रथा अवश्य उठ जावेगी। प्रत्येक इसका अनुभव कर जाता है। श्रीकृष्ण जी सात्विक दान की ही प्रशंसा करते हैं॥

## धर्म्म विरुद्ध है।

परन्तु यदि विचार दृष्टि से देखा जावे तो प्रत्येक धर्म्म और मत में इसका निषेध किया है, और बीसों ने इसको मना किया है। पुस्तकों में गांजा, चरस, और भांग के उपयोग को अनुचित और अयोग्य माना है, और मनु महराज ने इसको वर्जित लिखा है। ग्रन्थ साहिब में गुरु नानक जी ने इसको वर्जित लिखा है।

## सर्व साधारण में इसकी प्रथा का कारण।

सर्व साधारण में इसके प्रचार का कारण स्पष्ट है। जब इनके अवकाश के समय बैठने वाले देव स्थानों में इसका प्रचार खुल्लम खुल्ला हो तो कोई कारण नहीं कि कभी २ यह भी एक प्याला न चढ़ा लिया करें, या दम न लगा लिया करें। दरबार साहिब जावें, मनों भांग तैयार है, जितनी चाहिए बिना दाम पीजिए॥

ग्रामों में धर्म्म सालों पर तीसरे प्रहर के समय प्रायः घुटनी

आरम्भ हो जाती है। कोई समझते हैं कि भांग भोग शक्ति को बढ़ाती है, अतः इसके व्यसनी बनें। अवश्य शक्ति वर्द्धक औषधियों के साथ इसका यह प्रभाव है, परन्तु जैसा कि वर्णन हुवा भांग में उत्तेजक प्रभाव जब होती है तब अवश्य भोग शक्ति अधिक होती है, किन्तु तत्पश्चात् घट जाती है, इसलिए अधिक से हानि होती है। मैंने एक बार भांग की योजना से स्तम्भक गोलियां बनाई, एक बलवान् को उनसे लाभ हुआ, परन्तु एक निर्बल को देने से पता लगा कि उत्थान भी न हुआ। शौन्यकारक प्रभाव से उसने निर्बल पट्ठों को शिथिल कर दिया। सोज़ाक में उत्थान होने से अधिक कष्ट हुआ करता है, अतः उसको रोका जाता है। डाक्टर लोग इसके वास्ते गांजा के सत्व को देते हैं, यदि यह काम शक्ति वर्द्धक होती तो ऐसा न होता।

निघण्टु ने लिखा है कि यह वीर्य्य को शुष्क करती है, और यही कारण इसके स्तम्भन करने का है। परन्तु वीर्य्य शुष्क हो रहा हो तो उसको एक दिन नपुंसक बनने के लिए उद्यत रहना चाहिए। व्यसनी होने के तत्पश्चात् मुख वर्ण पीत होता है। और भोग शक्ति में निर्बलता प्रकट होती है। कोई समझते हैं कि इससे भूख बढ़ती है, किन्तु वह भी इसके उत्तेजक प्रभाव से पान के थोड़े समय पर्य्यन्त, तत्पश्चात् शिथिलता होती है। उत्तेजना के समय अधिक भक्षण से उसके पश्चात् प्रतिदिन निर्बल होना आरम्भ हो जाता है, और जैसा कि मद्य के वर्णन में हमने पूर्णतया लिखा, अन्त में आमाशय भाड़े का टट्टू बन जाता है। इसके पान करने से किंचित् खा, पी, लेते हैं। हमको आश्चर्य है कि हृदय और मस्तिष्क को विकृत करने वाली और ज्ञान को नष्ट करने वाली वस्तु को लोग क्यों काम में लाते हैं, कि इससे भूख बढ़ती है। क्या इनको चूरण नहीं मिलता है?

---

## हानियां

इसका व्यसन डालने से मस्तिष्क और मन का विकार युक्त होना, सिर पीड़ा, दृष्टि में धुंद, आमाशय में विकार, कलेजा की निर्बलता, जलंधर, पागलपन, उन्माद, उदरशूलादि रोग होते हैं। काम शक्ति नष्ट हो जाती है, थोड़ी२ सी बात से भय होता है और बुरे बिचार उत्पन्न होते रहते हैं। कभी मुख दौर्गन्ध्य, सांसारिक और धार्मिक कार्य उत्तम रीति से पूर्ण नहीं होते, शरीर निर्बल, जहां बैठे रहे वहीं बैठे रहे, मुख और शरीर पर कुरूपता, शुष्कता, शरीर प्रति दिन क्षीण होता जाता है, पानी से भय, कायरता और साहस हीनता के विचार, आचार भ्रष्ट और ज्ञान नष्ट। किसी ने सत्य कहा है कि भंग चुल्लू में उल्लू बना डालती है। चरस और गांजा में भी ऐसी ही हानियां हैं, परन्तु शीघ्र तर होती हैं। कोई मनुष्य बता सकता है कि चरस पान करने वाला मोटा, ताज़ा और सुर्ख चेहरा देखा गया है? कदापि नहीं ज्यों ही दम लगाया घंटों ठूं ठूं हुई। उसके मुख से अत्यन्त दुर्गन्ध आती है, उसके धूम्र से भी बुरी गन्ध आती है, न पीने वाला दस कदम पर ही दुर्गन्ध से दुखी हो जाता है, बैठने के स्थान के समीप कफ़ के ढेर लगे होते हैं। मुरदापन, खांसी, श्वास, मुख पर फटकार कुरुपता यह इसके आवश्यक अंग हैं। चरस पीने वाले कंगाल ही रहते हैं और संसार में कभी नाम नहीं पाते,

और वह इससे क्षीण हो होकर मर जाते हैं। गांजा भी चरस का भाई है, प्रत्युत इससे भी भयानक है, और थोड़े दिवसों में शरीर क्षीण होकर कांटा हो जाता है, वर्ण पीला, असीम निर्बलता, आंखें लाल, तन्द्रा युक्त, अस्थि कंकाल दृष्टि पड़ने लगता है, न इधर के न उधर के, कुकर्म्मों की ओर झुकाव, जल २ कर नशाबाज़ राख हो

जाता है। चरस और गांजा ने जितना नैर्बल्य किया है, उसका वर्णन लेखनी की शक्ति के साहस से परे है। किसी चरस पान करने वाले को देखो, तब ज्ञात होगा कि लक्षों ऐसे मनुष्य हैं, तो क्या दशा होनी चाहिए, जब कि अन्य देशों की वार्षिक आय का दशम विभाग हिन्दुस्तानियों की आय है॥

दो चरस पीने वालों में से एक मृत्तिका वासन ( जिसमें बानी ( राख ) पड़ी हुई होती है और थोड़ी सी अग्नि उसमें आच्छादित रखते हैं, नशा के टूट जाने के समय परमात्मा जाने मिले वा न मिले ) अपने गले में बांधा हुआ था। रात्रि को सो गए, तो उसने वह बरतन अपने से उतार कर अन्य के बांध दिया। प्रातःकाल उठकर आप कथन करते हैं कि "मैं तुम हो गया हूं वा तुम मैं हो गए हो" जब यह नशा अधिक बढ़ जाता है तब मांगने की बारी आ जाती है। सारा दिन मांगते रहना और रात्रि को सब राख कर देना उनका दैनिक कार्य्य हो जाता है। मद्य तो उपार्जित धन को लुटाता है, परन्तु यह उपार्जन ही नहीं होने देती॥

## सम्मतियां

**मुहम्मद बिन जिक्रया प्रसिद्ध तबीब**:—भंग, विस्मरण, क्लेश, सोच, ज्ञानहानि, मुखवर्ण वैपरीत्य को उत्पन्न करती है। इसका नशा वीर्य्य नाशक और उसको शुष्क करता है॥

**गांजा कमीशन**:—जो स्थापित की गई थी, उसके विस्तरित अनुसन्धान का परिणाम यह था कि भंग, चरस, गांजा, मस्तिष्क को, हृदय को, ज्ञानतन्तुजाल को अत्यन्त हानिकारक है, और उन्माद के कारण होते हैं।

**राय बहादुर बाबू घनियालाल साहिब**:—पांच वर्ष के

मध्य में २३८३ पागलखाना में प्रविष्ट हुये, उनमें से ८७८ भांग के कारण पागल हुये थे।

**एक योग्य डाक्टरः**—इसका व्यसन डालने से दुर्बलता उत्पन्न होती है। स्वभाव चिड़चिड़ा और मस्तिष्क में हानि होजाती है।

**डाक्टर जान विलसनः**- भांग, गांजा, चरस की हानियां प्रायः एक ही प्रकार की हैं। अभ्यास करने से अत्यन्त अजीर्ण हो जाता है, और दुर्बलता हो जाती है। किन्हीं की ऐसी दशा भी हो जाती है कि जो खाते हैं वह वमन द्वारा निकल जाता है। भोजन करने के आध घंटा पश्चात् पेट पीड़ा ज्ञात होती है, इस कष्ट के होने से रोगी घुटने ऊपर उठाकर उदर के साथ मिला रखता है। भांग, गांजा शरीर में एकत्रित हो जाते हैं, और जब उपरोक्त लक्षण अधिक समय पर्य्यन्त शनैः २ रहते हैं, तो पुनः किसी चिकित्सा से लाभ नहीं होता है। हमने शफ़ाखाना में बहुत ही चिकित्सा की, निज़ा की पिचकारी दी, अन्य भी उपाय किये, परन्तु शनैः २ वह मृत्युपथ ही जाते हैं।

**एक अन्वेष्टाः**—भंगड़ा ऐसा कायर होता है कि कोई पक्षी सिर पर से उड़ता हुवा निकल जावे तो उसको ज्ञात होता है कि कोई आपत्ति हम पर आने वाली है।

**फर्रुख़ः**—हिन्दुओं को नशों ने सताया, लूट कर माल कंगाल बनाया, रक्तरुदन कराया, हृदय दुःखित किया, शरीर जलाया, लक्षों का नाश किया है। यह प्रार्थना है सृष्टिकर्त्ता परमात्मन्, इनका आर्य्यावर्त्त से ही सनाम ही गमन हो, जिससे चैन आये, दुःख जाये, सुख पाये, घबराये न फर्रुख़ तेरा।

शेर

नशा हिन्दियों से छुड़ा या इलाही,

यह बिगड़ी हुई दे बना या इलाही।
कहां तक पिये जायंगे चरस गांजा,
करेंगे यह इनको गदा या इलाही।
मिटा नक़्श दुनियासे ताड़ीका फौरन,
यह करती है बे दस्तोपा या इलाही।

उपरोक्त विषों के अतिरिक्त जिनका हमने कथन किया, अन्य भी विष यथा धस्तूर, संखियादि व्यसनतः हिन्दुस्थान में भक्षण किये जाते हैं। परन्तु ऐसे नशाबाजों की गणना बहुत कम है। कभी कोई देखने में आता है, वह भी कोई घरबार से गया गुज़रा, अतः हमने इनका यहां पृथक् वर्णन नहीं किया है, अपनी वारी पर प्रत्येक विष का जो वर्णन होगा, तो वहां ही उनके व्यसन का भी कथन करेंगे।

ईश्वर कृपा करें और व्यसनों से वचावें। मैंने मद्य, अफीम, चाडू, तम्बाकू, भांग, गांजा का नशा और विष की रीति पर कथन कर दिया, इनकी चिकित्सा भी लिख दी, मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। परमात्मा करे इन शब्दसमूह में से आकर्षण उत्पन्न होकर जो कोई नशा का प्रयोग करते हों, इसको पढ़ कर छोड़ देवें, और दूसरों को छुड़ाने का प्रयत्न करें।

## नशों का त्याग।

नशों के उपयोग से मानसिक शक्ति निर्बल होजाती है। किसी कष्ट का सहन भी बड़ा कठिन होता है, और यही कारण है कि नशे नहीं छूटते, जो लोग साहस करके मनो शक्ति से उसको त्यागना चाहते हैं, वह कृतकार्य्य होजाते हैं। मैंने ऐसे मनुष्य अपने नेत्रों से देखे हैं, जो बोतल प्रतिदिन मद्यपान करते थे, और हुक्का तो हर समय मुख से लगा रहता था, परन्तु एक दिवस में त्याग दिया। यद्यपि साधारण कष्ट हुवा, परन्तु उस कष्ट को उन्हों ने सहन किया। थोड़े

समय में स्वास्थ्य ठीक होगया, एक साथ इस प्रकार कोई भी नशा त्यागने से यदि कोई कष्ट हो, अमृतधारा दो चार बूंद खाने से दूर होता है। इस प्रकार १५ दिवस पर्य्यन्त प्रत्येक प्रकार के कष्ट पर चाहे किसी समय प्रकट हो, अमृतधारा खाते रहने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। मोती, अम्बर, भीमसेनी कार्पूर सम तोल गुलकन्द में साम्मिलित किये जावें, तो उनको ३—३ रत्ती पर्य्यन्त दो समय खाने से नशा छोड़ने से जो दिल घटता है, इससे ठीक रहता है।

## तम्बाकू।

तम्बाकू को त्यागने से कभी मुख से पानी जाता है, और पेट में अफारा होता है, परन्तु यह कष्ट बहुत अल्प समय पर्य्यन्त रहता है। यदि कोई मन से इसको छोड़ता है तो यह साधारण क्लेश सहन हो जाता है, किन्तु बात यह है कि ज्यों ही हुक्का पीने वाला दूसरों को हुक्का पीता हुवा देखता है, वह रह नहीं सकता। बस दिलको दृढ़ करने की आवश्यकता है, जो लोग कष्ट सहन नहीं कर सकते वह शनैः २ छोड़ सकते हैं। दशवार पीते हैं तो आठ वार कर दिया, पुनः ४ वार, २ बार, १ वार और तत्पश्चात् सर्वथा त्याग दिया। यदि एक साथ छोड़ने से अफारा इत्यादि हो तो, अमृतधारा खाने से दूर हो सकता है। प्रयोजन यह है कि तम्बाकू छोड़ने के वास्ते विशेषतः मनोशक्ति की आवश्यकता है। दूसरे को पीता देख कर इच्छा उत्पन्न न हो यही इसका छोड़ना है।

## अफयून।

को छुडाने के वास्ते अवश्य औषधियों की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि इसके छोड़ने से प्रायः बहुत कष्ट आजाते हैं। इसके सम्बन्ध में भिन्न २ सम्मतियां हैं, किसी का कथन है कि एक साथ छोड़ देनी उचित है, किसी का कथन है कि शनैः २ त्यागनी उचित है।

मेरी सम्मति में इसको शनैः २ छोड़ना उत्तम है, जो एक दम छोड़ सकें बेशक छोड़दें।

डाक्टर सर राबर्टस क्रस्टीस कहता है, कि एक साथ अफयून को छोड़ादें। इस से जो निद्रानाश हो तो क्लोरल दें। और अन्य विकार पोटासी ब्रोमाइड पूरी मात्रा में खिलाने से दूर होते हैं। तीन दिन जी मतलाना, वमन, हृदय घटना आदि चिन्ह दुःख देते हैं, परन्तु तत्पश्चात् यह जाते रहते हैं। मुझे एक बार एक महाशय ने लिखा कि एक स्त्री अफ़ीम खाती थी, मैंने उसको एक साथ छोड़ने को कहा, और ज्यों ही उसको कष्ट होते देखा अमृतधारा दे दी। १५ दिन में प्राकृतिक अवस्था में आगई।

डाक्टर नीफज़ के कथनानुसार निम्न लिखित नुसख़ा से अफीम छोड़ी जाती है।

ऐक्सट्रैक्ट हायोसाइमिस २० ग्रेन, ऐक्सट्रैक्ट जंशन कम्पाउंड २० ग्रेन, कर्पूर सत्व २० ग्रेन, कोनीन सलफास २० ग्रेन, लाल मिरच का चूरण ४० ग्रेन, सोंठ का चूरण ४० ग्रेन, दारचीनी का चूरण ४० ग्रेन, साधारण शरबत और शुद्ध साबन इतना मिलावें कि गोलियां बनने के योग्य होजावें। ९९ गोलियां बनावें। १ गोली दिन में १० बार पानी से दिया करें।

डाक्टर क्वारथर्स साहिब फरमाते हैं:—कि एकदम अफ़ीम छुड़ाने से जो उपद्रव उत्पन्न हों उनकी चिकित्सा की जा सकती है, यथा पट्ठों की निर्बलता के वास्ते टिंकचर निक्सवानी का १२ बून्द, डाइल्यूट फास्फोरिक एसिड २० बून्द, सीरप आफ ग्रन बरजन आधा औंस सबको संयुक्त करके पिलावें, ऐसी खुराक दिन में २ बार दें।

निद्रानाश के वास्ते रात्रि को उष्ण स्नान करावें, और निम्न लिखित योग खिलायें:—क्लोरल हैड्रेट २५ ग्रेन, सिम्पल सीरप आधा

औंस पिलावें, दो घंटा पर्य्यन्त निद्रा न आवे तो एक मात्रा और देसकते हैं। अधिक प्रस्वेद के वास्ते खट्ठे फल यथा नीमू, नारंगी, तथा अंगूर दें। तेज़ाब मिक्सचर भी लाभकारी है।

अतिसार के वास्ते बिसमिथसबनाईट्रास १५ ग्रेन, टैनिक एसिड ५ ग्रेन, ऐसी ३ पुड़िया प्रत्येक ३ घंटों के पश्चात् देवें।

उन्माद का ध्यान रखें, क्योंकि अफीम छुड़ाने से मनुष्य चिन्ता युक्त, उदास, किसी व्यर्थ बात के ध्यान में पड़ा रहता है। इसको कोई छोटा काम दें, अथवा खेल में लगावें, और उत्तम संगति में बिठलावें।

जो डाक्टर साहिब १ दिन में अफ़ीम छुडाना चाहें, वह उपरोक्त योगों में से कर सकते हैं, परन्तु अधिक जन उनके विपरीत भी हैं। अफीम त्याग कराने से अंग तोद, सामान्य शारीरिक निर्बलता, नेत्र और नासिका से पानी, अतिसार, वमन, पाचन शक्ति, की विकृति, किसी स्थान पर पीड़ा, प्रतिश्याय, नजला आदि हो जाता है जो लोग अधिक भक्षण करते हैं उनको ऐसे भयंकर लक्षण प्रकट होते हैं कि परमात्मा ही रक्षक है। किसी समय शारीरिक और मास्तिक लक्षण ऐसे भयंकर होते हैं, कि रोगी मर जाता है, बस शनैः २ इसको छुड़ाना चाहिए। वैद्यों का वचन है कि शनैः २ अफ़ीम को कम करें, और थोड़े दिन अफ़ीम के स्थान में इस प्रकार का शुष्क शौन्यकारक औषधियां देवें। अफ़ीम को छुड़ाने के वास्ते किसी ने यों लिखा है कि समय में परिवर्तन करने से छोड़ सकते हैं, अर्थात् यदि ६ बजे प्रातः काल खाते हैं तो अगले दिन ६ बजे शाम खावें, फिर ७ बजे फिर ८ बजे, इस प्रकार बढाते जावें। ६ बजे खाने वाला जब शाम तक रह सकता है तो फिर तीसरे दिन पुनः चौथे दिन करके छुड़ावें। कोई लिखते हैं कि अफ़ीम जितनी खाते हैं, उसको गोली

बनाकर एक लकीर किसी पत्थर पर खैंचे, आगामी दिवस २ लकीर, तदागामी दिवस ३ लकीरें, इस प्रकार अज्ञात मात्रा घटती जावेगी, जिससे कोई हानि न होगी और छूट जावेगी। कोई लिखते हैं कि जितनी अफ़ीम खाते हैं, उससे खशखश भर अफ़ीम कम करके उसके स्थान में निरबसी संयुक्त खावें, और प्रति दिन अफ़ीम कम करते जावें, यहां तक कि निरवसी ही रह जावे। पुनः निरवसी धीरे २ छोडें। यह युक्तियां बहुत सहज हैं, और यदि मनोशक्ति साथ हो तो अफ़ीम अवश्य छूट जाती है।

## योगा

केशर १ तोला १० माशा, काला दाना १ तोला १॥ माशा, भांग ८ तोला ६ माशा, खुरासानी अजवायन के बीज, दालचीनी, प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल कुचला प्रत्येक ९ माशा इन्द्रजव कटु ४ तोला ६ माशा, शुद्ध मधु २६ तोला ३ माशा, सर्व औषधियों को पीस कर मधु में संयुक्त कर पाक बनावें। चने बराबर अफ़ीम के वास्ते यह पाक २॥ माशा है; अर्थात् चने के समान अफीम कम करदें और अफीम खाने के थोड़े समय पश्चात् २॥ मासे पाक खावें। २-३ दिन पश्चात् चने बराबर और घटा दें और इस पाक को खावें, परन्तु इस बार ५ मासा यह पाक खावें। जब अफीम सर्वथा छूट कर केवल माजून रह जावे, तो माजून को भी घटाते जावें। पाक की मात्रा रात्रि दिवस में ८ मासे से अधिक न होनी उचित है॥

एक विस्तृत युक्ति इस प्रकार भी लिखी है, और कोमल प्रकृति वालों के वास्ते है:—एक कच्चा नारिकेल हर छिलको सहित लेवें, जिसके भीतर मग्ज़ थोड़ा बद्ध हुवा हो, और पानी अधिक हो। इसका सिर पर से टुकड़ा काट लें, ताकि छेद होजावे। १८ वा २० तोले शुद्ध अफ़ीम की बत्तियां बनाकर भर दें, पुनः काटा हुवा भाग छेद

पर रख कर अच्छी प्रकार बांध कर पांच छै मास पर्य्यन्त रक्खें। तत्पश्चात् छिलका सर्वथा पृथक् करके, नारिकेळ के पानी और गुळी सहित अफ़ीम को अच्छी प्रकार खरल करें। जब गुटिका बांधने के योग्य हो जावे तो इतने प्रमाण की गोलियां बनावे, जितनी की अफ़ीमची अफ़ीम भक्षण करता हो, और प्रति दिन १ गोली देते रहें। जब कुछ समय इस प्रकार बीत जावे तो दूसरा नारेल लेकर उस में प्रथम की अपेक्षा, चौथाई वा तिहाई थोड़ी मात्रा में अफ़ीम भर कर प्राथमिक विधि अनुसार देते हैं, यही युक्ति करते रहें, यहां तक कि अफ़ीम सर्वथा न रहे। अथवा ऐसा करें कि एक बार उपर्युक्त युक्ति से नारेल में अफीम तय्यार कर के उपयुक्त करें, और थोड़े समय पश्चात् शुद्ध अफीम में साधारण नारेल का गोला मिलावें, और इसी प्रकार कुछ समय तक करते रहें, यहां तक कि नारेल का गोला रहे, और अफयून कुछ न रहे।

## योग।

अकरकरहा, हिंगलु, शुद्ध, लवंग, केशर, दारचीनी, जावित्री, जायफल, अफयून, मस्तगी, सालरमिसरी, शतावरी, सब सम तोल, अदरक के रस से एक दिन खरल कर के गोलियां चने प्रमाण की बनावें, और एक गोली प्रति दिन खावें, और उतनी ही अफ़ीम घटाते जावें, तीसरे चौथे दिन एक गोली बढ़ा कर उतनी अफ़ीम घटा दिया करें, और गोलियां ही रह जावें तो एक एक कर के उन को भी छोड देवें। अनुभूत है।

## अन्यच्च

काले धतूरे के बीज १२ माशे, रेवन्द चीनी २ माशे, सूंठ १४ माशे, बबूल का गोंद १४ माशे, प्रत्येक कपड़छान करके और बबूल के गोंद को पानी में घोलकर उस पानी में औषधियों को खरल करके

चणक प्रमाण की गोलियां बनावें। उपर्युक्त विधि से इस गोली से भी छोड़ सकते हैं।

अनुमानतः डेढ़ पाव पानी में ३ माशा अफ़ीम घोल दें, और पाव भर कच्चे चने इसमें भिगोदें। जब पानी शुष्क होजावे तो छाया में शुष्क करके रक्षित रक्खें। अफ़ीम के स्थान में समय पर उसी को उतना ही उपयुक्त करें। १५ दिन में अफ़ीम की इच्छा जाती रहेगी। फिर इनका खाना दो चार दिन में छोड दें।

पुराने गेहूं की भूसी, २, ३ वार्षिक, २ तोला, पुराना गुड़ ५ तोला, काबली हरड़ का छिलका १ तो०, पुराना धनिया, २ वार्षिक, २ तो०, रात को आध सेर पानी में भिगोवें, प्रातःकाल मल कर शुद्ध करके पियें॥

पथ्य—भैंस का दुग्ध एक सेर, घृत १ छटांक रात्रि को खावें, और अफ़ीम छोड़ कर १४ दिन तक खावें, इच्छा न रहेगी॥

एक साहिब ने लिखा था कि १ रत्ती अफ़यून भक्षण करने वाले को पांच चांदी के पत्ते खाने के समय खाने चाहिये, और रात्रि को दुग्धपान करना चाहिये, इससे निर्बलता भी न होगी, और अफीम छूट जावेगी। १०—१५ दिवस उपयोग करके छोड़ सकते हैं। अफीम जैसे भयकारी व्यसन के त्यजन कराने के अन्य अनेक योग हैं, परन्तु इतने ही पर्य्याप्त समझे गये हैं।

## भांग

को छुड़ाने के वास्ते यत्न और उपाय की आवश्यकता नहीं है, इसके त्यागने से कोई भयकारी लक्षण प्रकट नहीं होते हैं। यदि कोई अधिक खावे, तो जो योग अफीम के अर्थ लिखे गये हैं, उनमें से कोई अवश्य कृतकार्य्य होगा। कर्पूर १ रत्ती, कस्तूरी १½ रत्ती, गुलकन्द में युक्त करके नित्य खाना भी उत्तम है, और यही गांजा

और चरस की इच्छा को मार देता है, वरन चांदी के वरक आंवला के मुरब्बा के साथ दिल घटने के समय खाने उचित हैं, और दिल को लाभ प्राप्त करके त्याग देना चाहिये। अधिक व्यसनी धीरे २ हुक्का की भांति व्यसन को घटावें। पनीर प्रातःकाल और सायंकाल खाने से चरस की इच्छा नहीं रहती है।

## मद्य।

इस बला का त्यागना अति कठिन है, न इस कारण से कि इसके छोड़ने से उपद्रव अधिक होते हैं, अपितु इस कारण से कि मद्यपायी न अपने विचार पर दृढ़ होता है और न उस आनन्द से पृथक् होना चाहता है। जिन्होंने इसको छोड़ना चाहा, एकदम छोड़ दिया, और किंचित् मात्र भी कष्ट न हुआ। जो प्रतिदिन पिया करते थे, इनको जब समझ आई जब वह धक्का लगा, उसी क्षण शपथ खाई और पुनः मुख न लगाया। मद्य को धीरे २ त्यागने का विचार ही अन्यथा है। हां! यह हो सकता है कि इसको छोड़ कर इसके स्थानीभूत कोई ऐसी वस्तु नियत करें कि जिसमें थोड़ा सा नशा भी हो, परन्तु शक्तिवर्द्धक हो, पोषणकारक हो, ताकि वह मद्य के उपद्रवों को दूर करता जावे, और सम्प्रति कुछ सन्तोष भी देवे।

## योग

द्राक्षा ( मुनक्का ) २॥ सेर, मिसरी १० सेर, बेर की जड १ सेर, गुलधावा पाव भर और सुपारी ५ छटांक, जायवत्री, जायफल, लवंग, हरड का छिलका, बहेड़ा, आंवला, सूंठ, कूठ, अकरकरहा, मिरच काली, पीपल, प्रत्येक ५ तोला, सौंफ, दालचीनी, छोटी इलायची पत्रज, नाग केशर, प्रत्येक दो छटांक, केशर १ तोला, कस्तूरी २ मा०, प्रथम मुनक्का को १६ सेर पानी में उबालें, जब आधा रहे सब अन्य औषधियां जोकूट को प्रविष्ट करके एक मटके में बन्द करके पृथिवी

में गाड दें । एक मास पश्चात् नितार कर पृथक् बोतलों में भर दें। मात्रा २ तोले प्रतिदिन पर्याप्त है, विशेष मद्यपी को दिन में कई बार दे सकते हैं, यह शक्ति बर्द्धक भी है । मद्य के छोड़ने से जो साधारण उपद्रव प्रतीत होते हैं वह इससे दूर होते हैं । पुनः उसको त्यागने में कोई कष्ट नहीं होता है । यह बड़ा लाभकारी आसव है । इसका नाम द्राक्षासव है । प्रधानांग को और भोग शक्ति को सहायता देने वाला है । मद्य पान न करने से कभी कभी ग्लानि, सिर पीड़ा पट्ठों की खाज, अरुचि, सुस्ती आदि होती है, इसके पिलाने से वह दूर हो जाती है । यदि यह उपस्थित न हो तो दुग्धादि स्नेह पदार्थ अधिक देने उचित हैं । अमृतधारा ३—४ बूंद ५—६ वार दिन में दुग्ध में देने से परमात्मा करे कोई कष्ट न होगा ।

डाक्टर पारकल साहिब का कथन है कि जब जब मद्य की इच्छा हो तो निम्न लिखित योग में से एक ड्राम पिलावें तो धीरे धीरे व्यसन छूट जाता है । बैलीनियेनर आफ कोनिन ५ ग्रेन, पैराई सल-फास १० ग्रेन, स्पिरिट आफ नट गल्स ½ औंस, पीपरमेंट वाटर ३ औंस, सब को संयुक्त करके रखें, और जब मद्य की आवश्यकता हो दें मात्रा एक ड्राम ॥

स्वीडन में नियम है कि जिस मद्यप से मद्य छुड़ाने की इच्छा होती है, उसको मद्य में रोटी भिगो कर देदेते हैं । शनैः शनैः उसको इससे घृणा हो जाती है । गाय के गोबर का पानी तोला भर मद्य में डाल कर पिया जाया करे, तो भी घृणा होगी ॥

डाक्टर अस्कारोज़ लिखते हैं कि एक वृद्ध मद्यप कि जिसका शरीर स्थूल, हृदय निर्बल और नाड़ी में अन्तर था, उसको ६—७ बिन्दु टिंचर अस्ट्रोमन्थस दिन में ३ बार दिया गया, तो मद्य से घृणा करने लगा और अन्त में मद्य को सर्वथा छोड़ दिया। अन्य रोगियों पर

उत्तम निकला, परन्तु इसके देने से ग्लानि उत्पन्न होती है और प्रस्वेद आता है। यह बात अनुभव सिद्ध हो चुकी है कि जो मनुष्य वानस्पतिक पदार्थों पर जीवन निर्वाह करते हैं और मांस भक्षण नहीं करते, उनको मद्य की इच्छा बहुत कम होती है। अतः मद्यत्याग के वास्ते मांस का सर्वथा त्याग कर देना ही एक उपाय है ॥

फलों का रस, द्राक्षा, सेव, प्याज, आदि विशेषतः मद्येच्छाको घटाते हैं, और बल देते हैं, और आवश्यकता के समय इनका व्यवहार होसकता है।

एक डाक्टर साहिब का अनुभव निम्न लिखित योग पर है।

टिंचर कैप्सीकम २ ड्राम।

टिंचर निक्सवामीका १ ड्राम।

एसिड नाइट्रोहाइड्रोक्लोरिक डाईल्यूट १ ड्राम। इनफ्यूजनशन ११½ औन्स इसमें टेबलस्पून फुल जब मद्यकी आवश्यकता हो देसकते हैं। धीरे धीरे इच्छा नहीं रहती है :—

**डाक्टर केलर मारटन साहिब**—का अनुमान है कि मद्य को छुड़ा कर इसके स्थान में उत्तम पोषक भोज्य यथा दुग्ध, घी आवश्यक हैं, और रोगी की क्षुधा बढ़ाने और भोजन पाचन के अर्थ विशेष रूप से यत्न करें, क्योंकि मद्यप का आमाशय निर्बल होने के कारण उत्तेजन का इच्छुक होता है, इसके बिना वह अपना कार्य्य नहीं कर सकता है। कोई पाचक चूरण यह कार्य्य अच्छी प्रकार कर सकता है।

डाक्टर साहिब लिखते हैं कि प्रथम डबल खुराक सिलीज पाउडर अधिक पानी में संयुक्त करके दें, इससे आमाशय और आन्तें शुद्ध होजावेंगी, अतः पश्चात् निम्नलिखित योग का उपयोग करें। क्लोरिक ईथर १५ बिन्दु, ग्लिसरीन ½ ड्राम, टिंकचरकेकम ३ बिन्दु, सीपर-

जिंजर २ ड्राम, टिंचरासिनकोना कम्पाउंडर २ ड्राम, पानी ½ आन्स, सब को संमिलित करें। प्रातः काल एक ड्राम दें और प्रत्येक ३ घण्टे पश्चात १ ड्राम दिन में देते रहें।

## पूर्ति

लुच्चे हुक्के पिवन्दे, अफयून हरामी खान।
भंग नामरदां पीवनी, ऊत पोस्ती जान ॥
ऊत पोस्ती जान चरस के पीवन हार।
खूं खूं करके मर जान बड़े पापी हत्यारे ॥
कह गिरधर कविराय उन्हों में एक न सच्चा।
बहुती पिए शराब गली में फिरता लुच्चा ॥

शुभम्भूयात्।

इतिशम्

## निम्नलिखित आप मुफ्त ले सकते हैं ॥

## " अमृत "

इस पुस्तक में जगत्प्रसिद्ध ओषधि "अमृतधारा" का विस्तृत वर्णन है। यह औषधि अब सब जगह नाम प्राप्त कर चुकी है। कोई बीमारी हो जावे, कोई भी चोट या घाव लग जाय, कोई भिड़ सांप, विच्छू इत्यादि काट जाय इसको खाने या लगाने से तत्काल आराम हो जाता है। घण्टों के रोग मिन्टों में दूर होते हैं। २५ हज़ार लोगों की राय है कि कोई घर इससे खाली नहीं होना चाहिए। मूल्य पूरी शीशी २॥) नमूना ॥)। इस पुस्तक में बहुत से चमत्कार इस औषधि के दिए हैं, जो मुफ्त भेजी जाती हैं ॥

## ओषधियों का सूचीपत्र

अमृतधारा के अतिरिक्त लगभग पांचसौ औषधियां भिन्न २ रोगों की औषधालय में हर समय तैयार रहती हैं। सब औषधियां श्री पण्डितजी अपनी निगरानी में तैयार कराते हैं। उनके गुणों के भरोसे पर नमूने भी दिए जाते हैं। इन औषधियों का सूचीपत्र भी मुफ्त मिल सकता है ॥ औषधियों की सूची आगे दी गई है।

## पुरुषों के गुप्त रोग

पुरुषों के गुप्त रोगों के कारण, चिन्ह तथा चिकित्सा इत्यादि इस पुस्तक में अंकित हैं। एक बार आरम्भ करके बिना समाप्त किय छोड़ना कठिन है। यह पुस्तक विद्यार्थियों को नहीं भेजी जाती ॥

## देशोपकारक व वैद्यामृत

यह दो वैद्यक पत्र श्रीमान पण्डितजी के सम्पादकत्त्व में निकलते हैं। जिनको अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने और वक्त पर स्वयं इलाज करने का खयाल है वे इनको देखते ही ग्राहक हो जाते हैं। देशोपकारक पाक्षिक का मूल्य २।) है और वैद्यामृत मासिक का मूल्य ॥) है। नमूना मुफ्त

## पत्र व्यवहार द्वारा चिकित्सा

कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कर्त्ता "अमृतधारा" की चिकित्सा करने की योग्यता आजकल इतनी बढ़ी चढ़ी है कि हज़ारों रोगी पत्र व्यवहार द्वारा इनसे हमेशा चिकित्सा कराते रहते हैं। चिकित्सा कराने के विस्तृत नियम इस रिसाला में अंकित हैं। पहले पत्र के साथ १) पत्र पढ़ने की फीस आनी चाहिए, तब दवाई तजवीज की जाती है। फिर इलाज चाहे कितने समय तक जारी रहे और फीस नहीं ली जाती। यह रिसाला भी मुफ्त मिल सकता है॥

---

मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा डाकखाना, लाहौर

# अमृतधारा तथा देशोपकारक औषधालय

की

## किञ्चित आवश्यक औषधियों के नाम संक्षिप्त गुण और मूल्य ॥

---

## अमृतधारा

इसकी प्रशंसा पृथक् " अमृत " नामक पुस्तक में अंकित है। और यह इतनी प्रसिद्ध है, कि सब जानते हैं कि अमृतधारा न केवल लगभग सर्व मानुषी रोगों की जो साधारणतः घरों में बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों और स्त्रियों को होते रहते हैं अचूक इलाज है, प्रत्युत पशु पक्षी आदि के रोगों को भी दूर करती है, विचित्र प्रभाव इसमें ईश्वर ने भर रक्खा है। रोग नाम की शत्रु है। जहां रोग हो वहां ही जा पहुंचती है। वर्षों के रोग महीनों में, महीनों के दिनों में, दिनों के घण्टों में दूर करती है, मार्ग वा यात्रा में, हर घर में, हर जेब में हर ऋतु में, हर देश मे इसको अपने पास रखकर रोगों के भय से निर्भय हो सकते हैं ॥

सब प्रकार का शिर दर्द, कफज खांसी, शुष्क खांसी, पार्श्व-शूल ( नमोनिया ) नजला, जुकाम, विषूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, गुड़गुड़ाहट, मरोड़, परिणाम शूल, ( दर्द कौलंज ) अतिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा, वा दाढ़ पीडा, दांतों से रक्त जाना, व पानी लगना, कर्णपीडा, कर्णघाव, कर्णखाज, कर्णशोथ, कर्णकृमि, नासिकार्श, नाक में फुन्सियां, नासिका में दुर्गन्ध, नकसीर, छींक, नेत्रपीड़ा, फोड़ा, फुन्सी, सब प्रकार के घाव, कान का पकना, रान का लासना, दाद, चम्बल, गला बैठना, मुखशोथ, भिड़ का डंक, बिच्छू का डंक, सर्प का डंक, बावले कुत्ते का विष गले में दर्द, गले पड़ना, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ, उपदंश, गिलटियां, बद्ध, सन्धिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तरिक व बाह्य पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, मस्तिष्क की निर्बलता, प्लेग, रक्तवमन, राजयक्ष्मा, प्रसूत, हृदय रोग, कामला, बायगोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला, ( हजीरां ) स्त्रियों को

शिर दर्द, गुद भ्रंश, डब्बा रोग, बच्चा का दूध न पीना, सान्निपात, शिर झूमना, सन्यास, कम्प रोग, लकवा, अर्द्धाङ्गबात; शिर की खाज, जिह्वाशोथ, मुख में फुन्सियां, मुख का पकना, ओष्ठशोथ, ओष्ठफुन्सी, स्वरभङ्ग, रक्त थूकना, पीव थूकना, छाती का शोथ, फुफ्फुस शोथ, स्तन शोथ, स्तन फोड़ा, आमबात, मतली, यकृत पीड़ा, यकृतबात, जलोदर, कठोदर, पांडुरोग, आमातिसार; प्लीहोदर, वृद्धोदर, उदरकृमि, रक्तगन्दर, वृकद्वय पीड़ा, वृकद्वय शोथ, मूत्राशय पीडा, मूत्राशय शोथ, अण्डवृद्धि, उदररोग, गर्भाशय का शोथ, गर्भाशय की पीड़ा, योनिस्राव, कटिपीड़ा, रींघनवाय, घुटने का दर्द, पिण्डुली का फूलना, नितम्ब पीडा, पित्त सर्व प्रकार के रोग, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, गुली अर्थात् ओष्ठ का सूजना, बहुस्वेद, अग्नि से जलना इत्यादि२ दूर होते हैं ॥

मूल्य २।।) फी शीशी दवाई४ ड्राम। नमूना की शीशी ।।), बूंद गिराने वाली शीशी जिससे जितने बूंद चाहो डाले जावें, ४ ड्राम का मूल्य २।।।),

अमृतधारा की मीठी टिकियां—बच्चे भी खुशी से खाते हैं मूल्य १०० टिकिया ।)

# आबेहयात

"अमृतधारा" की नकल है। प्रायः विज्ञापन बाजों ने नकल आरम्भ कर दी है और लोग अल्प मूल्य देकर मंगवाते हैं, इसलिए वह नकल बनाकर रक्खी है जो इन नक्कालों से फिर भी अच्छी होगी। और असल व नकल का फर्क भी दिखा देगी। मूल्य फी शीशी ।।।) नमूना की छोटी शीशी ।)

---

# पुरुषों के विशेष रोगों की औषधियां

अधिक देखना हो तो नपुंसकत्व पुस्तक मंगवावें ॥

**अकसीर नं०१ महत्वाजीकरण औषधि**—बहुत वीर्यवर्द्धक उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं

में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। नपुंसकता के अतिरिक्त वातज रोग, कफज रोग, खांसी, नजला, जुकाम, कटिपीड़ा, सन्धिवात, को हितकर है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, को बहुत लाभदायक है। प्रभाव किञ्चित उष्ण है। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥), मात्रा १-१ गोली सायम् प्रातः ॥

अक्सीर नं० २ लक्ष्मीविलास रस—वैद्यक में लिखा है, कि यह रस नारदजी ने श्रीकृष्ण महाराज को बताया था, दूध के साथ नित्य खावे तो बूढा भी युवा के तुल्य होवे। कामदेव के समान हो जावे, सन्निपात, प्रमेह, भगन्दर, कण्ठ शोथ, संग्रहणी मरोड़, खांसी, जुकाम, ववासीर, सन्धिवात, कटिपीडा, नेत्रपीडा दृष्टमान्द्य, घ्राणदुर्गन्ध, गलगण्ड, शिरपीड़ा, प्रदरादि को हितकर है। ज्वर या अन्य रोग के पश्चात् जो निर्वलता, नपुंसकता, प्रमेहादि होता है उसको विशेषरूप से हितकर है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष शीघ्रपतन को लाभदायक है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥).

अकसीर नं०८ पौष्टिक कसैली—पुष्टिदायक है, कफज वातज रोगों को दूर करती है। रक्त नया पैदा करके शरीर को फुरतीला बनाती है, और गरमी को उत्पन्न करती है, चेहरा को लाल करती है कुछ दिन सेवन करने से अत्यन्त बल पैदा करती है, मात्रा आधी रत्ती से दो रत्ती तक है। मक्खन या मलाई में रख कर खाया करें, मूल्य १ तोला १६) है, ६ माशा ८), ३ माशा ४), नमूना १॥ माशा २) है ॥

अक्सीर नं० १०—बलबर्द्धक है प्रत्येक जाड़े में एक मास खा छोड़ने से कभी बल कम न होगा। नामर्द भी मर्द हो जाते हैं बूढों को युवा बनाती है। मात्रा १-१ गोली, सायम प्रातः मूल्य जिसमें कस्तूरी पड़ी हुई है ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥) जिसमें कस्तूरी नहीं पड़ी परन्तु धातु पौष्टिक शेष सब औषधियां वही हैं ६४ गोली २), ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं० ११—हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय को पुष्टिकारक है, आनन्द वर्द्धक है, शीघ्रपतन स्वप्नदोष

को हितकर है, याकूती का काम भी देती है, ताऊन के दिनों में खाने से मानसिक बल स्थिर रहता है, और बड़ा गुण करती है उत्तेजक है, अमीरों के खाने योग्य है, प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल आती है इसका प्रधानांश स्वर्ण है; मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

अकसीर नं० १२ महत् बाजीकरण—विशेषतया शीघ्रपतन के रोगियों के वास्ते है। तसिरे पहर एक दो गोली दूध से खाने से स्तम्भक है, नित्य सायम प्रातः एक गोली खाने से शीघ्रपतन दूर होता है, इसके खानेवालों को खांसी, नजला, जुकाम कटिपीडा, वातज, कफज आदि रोग नहीं सताते। मूल्य ६० गोली ३), २० गोली १), नमूना ५ गोली।)

अकसीर नं० १४—उत्तेजना समय लेस जारी होने को रोकता है, शीघ्रपतन को दूर करता है। बंद कुशाद की विशेष औषधि है, मूल्य ३० तोला ३) अर्द्ध १॥) मात्रा ९ माशा॥

अकसीर नं० २० मन्मथरस—बूढों को जवान और पहलवान बनाने के वास्ते यह योग शिवजी महाराज का निर्माणकृत है, उत्तमता यह है कि तीव्र नहीं है। चिरस्थाई लाभ धीरे२ करता है। सदैव खाने में कोई हानि नहीं है। शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्र-मेह, को दूर करता है, उत्तेजक है। बम्बई से एक ७० वर्ष के वृद्ध २२ बच्चों के पिता ने मुझे लिखा था कि युवावस्था के प्रारम्भ से प्रत्येक जाड़े में २ सप्ताह सेवन करता है और वह अब तक भी पूरी शक्ति रखता है, सन्तानोत्पत्ति के योग्य है। खांसी, नजला, जुकाम, पाण्डु, कामला, अपाचन को हितकर है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। पौष्टिक उत्तेजक व स्तम्भक है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० २३ दूध घृत पाचक—इसे एक रत्ती तक प्रकृति अनुकूल नित्य खाने से दूध घृत पचाने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। सेरों तक नौबत पहुंचती है, १४ दिन के भीतर सेरों दूध पचने लगता है। ७० दिन के सेवन से सम्पूर्ण कफज व वातज रोगों को दूर करता है, घी दूध पचने की शक्ति

सदा के लिए बढ़ा देती है। मूल्य ५) रुपये तोला, नमूना २ माशा १।)

अकसीर नं० २४—स्तम्भक है, शीघ्रपतन रोगी को जब तक रोग दूर न हो कभी२ आवश्यकता पड़ती है। तीसरे पहर दूध के साथ खावे पश्चात कोई खट्टी लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुना प्रभाव होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

असकीर नं० २७ ( अब निर्बल न होंगे )........के पश्चात् एक दो गोलियां खा लीजिए, उदासी दूर, सुस्ती चकना चूर, बल ज्यों का त्यों, तीसरे पहर खावें तो स्तम्भन हो। नित्य दूध के साथ सायम् प्रातः खावें तो शुक्रमेह शीघ्रपतन को हितकर है, मूल्य ६० गोली १) नमूना ≈)

अकसीर नं० २७(ख)—जिसमें कस्तूरी आदि मिलाए हैं, मूल्य ६४ गोली ४) नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३० धातुवर्द्धक—इससे वीर्य्य बहुत बढ़ता है। और उसके पश्चात् पुंसत्व बढ़ना आरम्भ होता है। शुक्रमेह स्वप्नदोष और शीघ्रपतन को भी हितकर है, मात्रा ६ माशा दूध के साथ मूल्य २) पाव, नमूना पांच तोला ॥)

अकसीर नं० ३१ चन्द्रप्रभावटि—यह एक वैद्यक योग है; जो विविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं, यह मूत्र के साथ शुक्र आदि जाने को रोकती है, २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल मन्दाग्नि, अण्डवृद्धि, पांडु, कामला, ववासीर, भगन्दर, नासूर कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हितकर है। वीर्य्य को सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। मात्रा दो गोली सायम् प्रातः मूल्य ३२ गोली १) नमूना, ८ गोली ।)

अकसीर नं० ३३ आयुर्वेदिक टानिक—रज वीर्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। जब कोई विशेष कारण प्रतिबन्धक स्पष्ट न हो, तो स्त्री पुरुष दोनों को गाय के दूध के साथ खिलाना आरम्भ करें, एक दो मास खावें, और प्रत्येक रजोधर्म के पश्चात् सम्भोग करें, तो ईश्वर कामना पूरी करे। यह गोलियां उत्तेजक, शुक्रमेह, स्वप्न-दोष, शीघ्रपतन नाशक, शुद्ध रक्तोत्पादक, बलवर्द्धक, सन्धिवात नाशक है, और कटिपीडा, गुल्फपीड़ा, पार्श्वशूल, रानपीडा' रंघन-

वायादि सर्व वातज कफज रोग, प्रमेह, कामला, रक्तक्षीणता, शोथरोग, जलोदर, कठोदर, मूसा विष, स्त्रियों के मासिक रज की कमी व अधिकता, अण्डवृद्धि, को हितकर है। मधु व पानी के साथ स्थूलता को दूर करती है। अंग्रेजी टानिक औषधियों से इसका मुकाबला करो अव्वल दर्जे रहेगी। मात्रा १ गोली सायम प्रातः प्रकृति अनुकूल न्यूनाधिक कर सकते हैं। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३४ (क) शुक्रमेह—( धातु जाने ) के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है। स्वप्नदोष को बहुत शीघ्र दूर करती है, शीघ्रपतन को भी हितकर है। वीर्य्य को गाढ़ा करने में अनुपम है, प्राकृत स्तम्भन को बढ़ाती है, मात्रा १ गोली सायम प्रातः मूल्य ३२ गोली २), नमूना, ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३४ (ख)—उपर्युक्त औषधि के भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत, स्वर्ण, चांदी, अभ्रकादि भस्म और संयुक्त की जाती हैं, तो यह उपर्युक्त लिखित गुणों के अतिरिक्त हृदय मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय को बल देती है। अमीरों के खाने योग्य है। मूल्य ३२ गोली ५), १६ गोली २॥), नमूना ८ गोली १।)

अकसीर नं० ३९—शुक्र जनक है, शीघ्रपतन व वीर्य्यस्राव को दूर करती है। वीर्य्य को खूब बढाती है, और गाढ़ा करती है। शारीरिक बल को अधिक करती है। शीघ्रपतन के लिए विशेष रूप से हितकर है। शुक्रमेह को भी दूर करती है। लेसदार औषधि होने पर भी काबिज नहीं है। इसके खाने से प्राकृत स्तम्भन बढ़ता है। मूल्य फी पाव २), आधा पाव १), नमूना एक छटांक ॥)

अकसीर नं० ४० स्वप्नदोष नाशक—यह औषधि विशेष कर गृहस्थों के वास्ते है। शुक्रमेह व शीघ्रपतन नाशक है, स्तम्भक भी है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं० ४१ कामनी बशीकरण—जो लोग कहते हैं, कि स्तम्भन की कोई औषधि उनको गुण नहीं करती इसको सेवन करें, ६ गुणा बन्धेज होता है। यदि दैनिक यह गोलियां खाई जावें

तो शीघ्रपतन दूर होकर सदैव स्तम्भन उत्पन्न होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष का मूलोच्छेद होता है, पट्ठों को पुष्ट और दृढ करती है। कस्तूरी, सोना, चांदी, केशरादि इसके प्रधान अंश हैं। मूल्य ३० गोली २५), ६ गोली ५), १ गोली १)

अकसीर नं० ४३ अपूर्व स्तम्भक—सैकड़ों औषधियों के आजमाने के पश्चात् इसको निकाली है, यह नं० ४१ से भी इस काम में बढ कर है, मूल्य वही है १ गोली १), ३० गोली २५), ६ गोली ५),

अकसीर नं० ४४ (फ़लकसैर)—इसके गुण नाम से ही प्रकट है। इसके खाने से मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, आनन्द बर्द्धक है, हृदय मस्तिष्क को पुष्टि देती है, शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष का नाश होता है। यदि तीसरे पहर को २—३ माशा खा लेवे तो विचित्रानन्द आता है। स्तम्भक और सुखदायक है, मूल्य ५ तोला २), नमूना १ तोला ॥), कस्तूरी, अम्बर, याकूत, जमुर्रद, मोती, सोना, चांदी, केशर आदि से तैयार होती है॥

अकसीर नं० ४७ शीत—यह औषधि उन लोगों के वास्ते है जिनकी प्रकृति बहुत उष्ण है, या मूत्राशय के भीतर इतनी गरमी है कि थोड़ी ऊष्ण रुक्ष औषधि रोग को दूर करने के स्थान में बढ़ाती हैं। प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष और बकाया सोजाक को गुणकारी है, इस से स्वभाव प्रकृतावस्था पर आने शुक्रमेहादि दूर होने के पश्चात् और पौष्टिक औषधि दी जा सकती है मूल्य ॥) तोला, ६ माशा।)

अकसीर नं० ५०—अमीरों के वास्ते तोहफा,प्रत्यके वीर्य्य रोग का अचूक इलाज, तुरन्त गुणकारी, प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्न-दोष के वास्ते अद्वितीय और वाजीकरण के लिये रसायन है पहिले दिन ही ताकत, मूल्य २ गोली १)

अकसीर नं० ५२ बसन्त कुसुमाकर रस—यह शार्ङ्गधर का उत्तम योग है, बहु मूत्र और सर्व प्रकार के प्रमेह को शरतिया दूर करता है, मूल्य ६० गोली २०) है, नमूना ६ गोली २) है॥

अकसीर नं० ५५ स्वप्न दोष नाशक चूर्ण—यह विशेषतया विद्यार्थियों के वास्ते है स्वप्न दोष व प्रमेह को दूर करता है दिमाग रोशन करता है, स्मरण शक्ति को बहुत ही तेज करता है, मात्रा

३ माशा प्रातः ३ माशा सायम दूध के साथ, मूल्य २) प्रति पाव नमूना १ छटांक ॥)

अकसीर नं० ५६—यह वीर्य्य को गाढा करने तथा शीघ्र पतन को दूर करने में अद्वितीय माना गया है। तीसरे प्रहर को खावें, तो उसी दिन इसका प्रभाव हो। मूल्य एक पाव का ४) आध पाव २) नमूना ॥)

अकसीर नं० ६१—यह शीघ्रपतन की विलक्षण औषधि है यह मस्तिष्क आदि के लिये पौष्टिक है । ३ माशा तीसरे प्रहर को खाने से स्तम्भन होता है, इसमें अफीम आदि कोई मादक वस्तु नहीं पड़ी है । मूल्य ६ तोला ४) नमूना १॥ तोला १)

अकसीर नं० ६२—अत्यन्त बलदायक है और वीर्य्य पुष्टि करता है एक दिन खाने से ही कई दिन पुष्टि रहती है । बूढों के वास्ते अमृत है मूल्य ८ गोली २)

अकसीर नं० ६५—अति वाजीकरण है ४० दिन पश्चात् हालत असह्य होजाती है मूल्य ७) शीशी १ ड्राम

---

# भस्में ।

अकसीर नं० १८ शिङ्गरफ भस्म—वाजीकरण के लिये अनुपम मानी गई है, पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है, नंपुसकता दूर करने की बलवान औषधि है, बूढों की लाठी है, वातज व कफज रोग यथा, अर्द्धगवातः आर्दितवात सन्धिवात, शून्यवात, कफज खांसी, मन्दाग्नि आदि को रामवाण है, शुद्ध रक्तोत्पन्न कर के चेहरे को लाल करती है । मूल्य १ तोला १०) नमूना १ माशा १) शीत ऋतु में अवश्य सेवन करें, दर्जा खास १००) तोला है ॥

अकसीर नं० १९, बंगभस्म दर्जा अव्वल—यह सवा सौ पुट से पहिले शुद्ध की जाती है, फिर भस्म की जाती है, चांदी भस्म भी इसके सामने कुछ नहीं है। प्रमेह, मूत्रकृच्छ, सोजाक, कुरेह को हितकर है उत्तेजक है 'मर्द को बंग और घोडे को तंग' की उक्ति इसी पर ठीक है। मूल्य १ तोला १०),६ माशा ५),

बंगभस्म सामान्य—कलई को साधारण रूप से शुद्ध करके बनाया जाता है, गुण लगभग वही है जो ऊपर वर्णन किए गए हैं,

प्रभाव किञ्चित देर से होता है, मूल्य १ तोला २), ३ माशा ॥) मात्रा ३ रत्ती ॥

**अकसीर नं०२५ त्रिधातु भस्म**—यह कलई सीसा, जस्त की मिश्रित अत्युत्तम स्वर्ण रंग की भस्म है, जो प्रदर, सोम शुक्रमेह, को दूर करने, वीर्य्य को गाढा करके प्रकृत बन्धेज उत्पन्न करने में विचित्र औषधि है। मूल्य १ तोला ४), ६ माशा २), नमूना १॥ माशा ॥)

**अकसीर नं० २६ स्वर्णभस्म अव्वल दर्जा**—पट्ठों को पुष्टि देती है, हृदय मस्तिष्क, यकृत्, वृकद्वय, मूत्राशय, जननेन्द्रिय, सब को बल प्रदान करती है। वीर्य्य वर्द्धक और उत्तेजक है घृत, दूध, पाचनकारी है। तीन माशा भी यदि एक वार खाले तो वर्षों की गई शक्ति पुनः आ जाय। शुक्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष प्रमेह, धातु क्षीणता, नपुंसकता, स्मरणशक्ति तथा हृदय की निर्बलता, सब दूर हों। मूल्य १ तोला ८०) ३ माशा २०), नमूना ४ रत्ती ४)

**स्वर्ण भस्म दर्जा दोयम**—गुण वही हैं किंचित देर में प्रभाव होता है। सस्ती है, मूल्य १ तोला ४०), ६ माशा २०), १॥ माशा ५), ४ रत्ती २)

**मूंगा भस्म**—पित्त प्रकृति वाले धातु विकार में ग्रस्तों को दी जाती है, सस्ती किन्तु बडी उत्तम औषधि है। पुरानी सिर पीड़ा मस्तिष्क की निर्बलता, नजला, प्रतिश्याम, रक्त वमन, रक्तपित्त, को हितकर है। वीर्य्य को मूत्राशय की गरमी को दूर करती है। मूल्य १ तोला ॥), ६ माशा ।), दर्जा अव्वल १) तोला है ॥

**संखिया भस्म (दर्जा खास)**—यह भस्म विशेष रूप से वीर्य्य बल और उत्तेजना के लिये तैयार की गई है। १४ दिन के भीतर पर्य्याप्त बल आता है। और ४० दिन के भीतर तो रुकना कठिन होता है, इसके अतिरिक्त संपूर्ण बातज कफज रोगों को रामबाण है, वूढों की सहायक है, उनको युवा बनाती है। मूल्य ३ माशा १२) १ माशा ४), नमूना २ रत्ती १), मात्रा खसखास से १ चावल तक ॥

**संखिया भस्म**—वातज सन्धिवात, आर्द्दितवात, अर्द्धाङ्गवात कफज कास, कटिपड़ादि को हितकर है, उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५) ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

**चांदी भस्म**—धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय, मस्तिक, आमाशय की निर्बलता, नपुंसकता को हितकर है। प्रमेह हृदय की धड़कन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ८), ३ माशा २) नमूना १॥ माशा १)

**फ़ौलाद भस्म शिंगरफ़ी**—यह भस्म फौलाद की शिंगरफ के द्वारा की जाती है। धातु रोग यथा शीघ्रपतन, वीर्य्यस्राव, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढ़ाती है, शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत् को बल देती है, रंग की श्वेतता को दूर करती है, मूल्य १ तोला १॥) ३ माशा ।=)

**फौलाद भस्म दर्जा खास**—बड़ी वाजीकरण है शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को लाल करती है, नामर्द को मर्द बनाती है। मूल्य २०) तोला है। दर्जा खासुलखास १००) तोला।

**फौलाद भस्म (दर्जा अव्वल)**—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी वाजीकरण है, शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को थोड़े ही दिनों में लाल करती है, पट्ठों को बल देती है, वीर्य्य सम्बन्धी रोगों को दूर करके नए सिरे से मर्द बनाती है, मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

**फौलाद भस्म**—धातु क्षीणता, नाताक़ती, शीघ्रपतनादि को हितकर है, यकृत् को बलदायक है, रंग को लाल करती है। मूल्य १ तोला २॥), ३ माशा ॥=)

**लोह भस्म**—यह उत्तम लोहे से सामान्य रूप से तैयार की जाती है। साधारण अवस्थाओं में बरती जाती है, मूल्य ।॥) तोला ३ माशा ≡)

**सीसा भस्म दर्जा अव्वल**—यह पीत रंग की सीसा भस्म अत्युत्तम है, वाजीकरण है, वीर्य्य के सर्व रोगों को हितकर है, मूत्रकृच्छ और सोजाक, कुर्रह को भी हितकर है। उचित अनुपान से सर्व रोगों में दी जाती है। कफज रोग, खांसी, संग्रहणी, बवासीर, को दूर करती है। कामदेव की वृद्धि करती है। मूल्य १ तोला १०) ३ माशा २॥), १ माशा १)

**सीसा भस्म**—मूत्रकृच्छ के वास्ते हितकर है। कुर्रह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।=)

अनविंध मोती (मरवारीद नासुफ़्ता) भस्म—हृदय, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक है। मूल्य ३०) रु० तोला। ३ माशा ७॥), २ रत्ती १।)

रस सिन्धूर—यह वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इसकी वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिखी है, षभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है, और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १०) तोला शिंगरफ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत ५) तोला है॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित होता है, सर्व औषधियों का राजा है, न केवल धातु सम्बन्धी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधि है, वरञ्च उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जाता है, कई घर इससे बस गए हैं, वमुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य १००) तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत २०) तोला है॥

नोट—एक २ भस्म कई प्रकार से तैयार की जाती है। बाज २ बीस २ प्रकार की तैयार हैं, किञ्चित् के नाम दिये हैं।

---

## अब पुरुषों के विशेष रोग सम्बन्धी तिला अंकित होते हैं।

तिला नं० १—कुछ सुगन्धि युक्त है, बूढ़ों को भी प्रबल बना देता है, युवकों को विशेष रूप से लाभकारी है, हस्तकारों को और जो शौकिया बल बढ़ाना चाहें यह तिला हितकर है, नसों और पट्ठों को बल देता है, मूल्य ४ डराम ५) नमूना एक डराम १।)

तिला नं० ३, (तिलाय महत)—हस्तकारों को विशेष रूप से हितकर है, साधारण अवस्थाओं में बहुत गुण करता है, मूल्य ४ डराम १), नमूना =)

तिला नं० ४, (तिलाय मायूसीन)—यह बड़ा प्रचण्ड है, चर्म का एक परत उतार देता है, परन्तु हस्तकारों की नसों पट्ठों को बहुत शीघ्र ठीक करता है, ४ दिन के सेवन से पर्याप्त बल आता है। परन्तु खाने को अच्छी औषधि भी साथ हो। क्योंकि तिलाओं के सेवन के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन होना आवश्यक है। निरोदी रोगियों को इससे लाभ हुआ है, शिथिलता, ध्वजभंग,

नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करती है, मूल्य २ डराम ३), नमूना ।॥)

तिला नं० ६, (वर्द्धक)—इसके लगाने से········बढ़ती है, और स्थूल होती है, मूल्य ४), आधी शीशी २), नमूना ॥)

तिला नं० ८, (बादशाही आनन्द वर्द्धक)—इसकी प्रशंसा क्या करें, जिसने एक बार आजमाया इस पर मोहित हुआ, नितान्त आनन्ददायक, नितान्त सुगन्धित जहां हो महक जावे, एक चावल पर्याप्त है, पुरुष स्त्री के आनन्द की कोई सीमा नहीं है मूल्य १२) तोला, ३ माशा ३), नमूना १ माशा १=)

तिला नं० १० (उत्तेजक व स्तम्भक)—यह लेप न केवल उत्तेजक है, लम्बाई और स्थूलता देता है, वरंच स्तम्भक भी है, जो लोग बन्धेज की औषधि खाना पसन्द नहीं करते उनके काम की वस्तु है, मूल्य १) रु० १ तोला, नमूना ।) है ॥

तिला नं० ११—आनन्ददायक है, और बहुत गुणकारी है, गहरा प्रेम उत्पन्न करने का हेतु है, आनन्ददायक, तत्काल द्रावक है, मूल्य १), आधा ॥)

तिला नं० १४—अत्यन्त पौष्टक तिला नं० ४ से भी बढकर मूल्य ६) अर्द्ध शीशी ३)

---

# स्त्रियों तथा बालकों सम्बन्धी किंचित औषधियां ॥

प्रदरान्तक लोह—किसी प्रकार का प्रदर हो, लाल, पीत, श्वेत, इस से दूर होता है। कटि पीडा, बेकायदगी सब दूर करता है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ।)

पताली (रजिस्टर्ड)—ऋतुस्राव का कम होना, व न आना, वेदना सहित आना, और तत्सम्बन्धी सब रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है, और बल प्रदान करता है । स्त्रियों के लिए टानिक औषधि है, मूल्य ४ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

चीनी गोली ( रजिस्टर्ड )—बाज स्त्रियों के लिये पेय औषधि का सेवन करना कठिन होता है, उनके वास्ते यह गोलियां तैयार

की गई हैं। यह आर्तव के खोलने और पीडादि नाशने में प्रायः वैसाही प्रभाव रखती हैं। मूल्य ३० गोली २) रु० नमूना ।)

खारी वत्ती (रजिस्टर्ड)—ऋतुस्रावक औषधियों के साथ यह वत्ती भी वर्तने से बहुत सहायता मिलती है, रज शीघ्र प्रवाहित होता है.........में गोली रखी जाती है, मू० २) रु० अर्द्ध १) है ॥

सोमावती (रजिस्टर्ड)—स्त्रियों को जो श्वेत पानी जाता है, जिसको ल्यूकोरिया, श्वेत प्रदर, जिरयानुलरहम, सेलानेरतूव-तजना, सोमरोगादि भी कहते हैं। चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जा का हो, इस से आराम आजाता है, मू० २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ।।।) साधारणावस्थाओं में ८ मात्रा ही पर्य्याप्त हैं ॥

गर्भ चिन्तामणि रस—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मतलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शोथादि को लाभ करती है, गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है। स्मरण रहे कि गर्भ के वमन के वास्ते अमृतधारा भी अति हितकर है। मूल्य ३२ गोली २) रुपया। नमूना ४ गोली ।)

मोतीपाक (माजून मरवारीद)—जिन स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है, उन को जब गर्भ का पता लगे तो उसी समय इस औषधि को आरम्भ करके प्रथम तो पूरे दिनों तक अन्यथा उस मास के अन्त तक जिस में गर्भ गिरता है, इस औषधि को खाना चाहिये, अक्सीर है, न केवल गर्भ रक्षा करती है, अपितु तालक व प्रसूतः को कई रोगों से सुरक्षित रखती है। मू० १ पाव १०)रु०

मीठा फल (रजिस्टर्ड) चमत्कारिक औषधि—यह एक विचित्र, संसार के अचम्भे में डालने वाली औषधि है। जब गर्भ हो जावे तो दो मास के पश्चात् तीसरे मास जबकि अंग बनते हैं। इसकी केवल १ दिन ३गोली दूध से खिलाई जाती है। अचिन्त्य प्रभाव से यह ऐसा करता है, कि पुत्र ही उत्पन्न होता है। चाहे गर्भ के भीतर पुत्र हो या पुत्री। जिसके पुत्रियां ही उत्पन्न होती हैं उन के वास्ते विशेष रूप से ईश्वरीयदान है। इसके साथ यह प्रतिज्ञा होती है, कि यदि कन्या उत्पन्न हो तो मूल्य वापस कर दिया जाएगा यह प्रतिज्ञा इस लिये है कि नई बात होने से कई

लोग विश्वास नहीं करेंगे और १०) व्यय करने से झिझकते हैं। मू० १०)

बंद प्रसूत ( रजिस्टर्ड )—जब रक्त मासिक के इलावा जारी होतो इस दवाई के तीन दिन के सेवन से बंद होगा, मात्रा ९ दिन की २) नमूना ।॥)

मन रंजन ( रजिस्टर्ड ) हिस्टिरिया की दवाई—स्त्रियों के इस रोग की अनुभूत औषधि है, मूल्य ६४ गोली ४) नमूना १६ गोली १)

ब्रह्मपुत्र रस ( रजिस्टर्ड ) अठरा की दवाई—कतिपय स्त्रियों के संतान होकर मर जाती है। जिसको अठरा या सूखिया मसान कहते हैं। गर्भाधान से लेकर पूरे दिनों तक और कुछ मास पश्चात् तक इन गोलियों को सायम प्रातः खिलाया जाता है, और ईश्वर की कृपा से बालक जीता रहता है। मूल्य ७०० गोली १०) रुपया ॥

दायालायक ( रजिस्टर्ड )—यह औषधि प्रसूत समय देने से स्त्री सुगमता से बालक जनती है। रक्त कम यथावश्यक जाता है। प्रसव के पश्चात् होने वाले रोग दूर होते हैं। मूल्य १॥), नमूना ॥)

सुखजनाई ( रजिस्टर्ड )—इस औषधि को केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १ रुपया, जो एक बार को पर्याप्त है ॥

अबला सुख उष्ण ( रजिस्टर्ड )—यह औषधि स्त्रियों के अनेक रोगों को गुणकारी है, और उनको बलदायक टानिक है। जो स्त्रियां निर्बल हों, दिनों दिन भोग इच्छा नष्ट होती जावे, प्रसूत के कारण कोई खराबी हो, निर्बल हों, यह दवाई गुण करती है। मूल्य ४० गोली ३), नमूना १० गोली ।॥), यह कफज वातज प्रकृति स्त्रियों के लिए है ॥

अबला सुख शीत (रजिस्टर्ड)—इसके भी उपर्युक्त गुण हैं, और पित्त प्रकृति स्त्रियों के लिये है। मात्रा ६ माशा, मूल्य ४० खुराक ३), नमूना १० खुराक ।॥)

प्राण सुख (रजिस्टर्ड)—स्तनों को ढलकने से बचाता है, और ढलके हुए को प्रकृत अवस्था पर लाता, और कठोर व दृढ़

करता है, भद्दे स्तन स्त्री के लिये दुखदाई हो जाते हैं। मूल्य ४)

गोदभरी (रजिस्टर्ड)—जबकि पुरुष का वीर्य्य ठीक हो, यह गोलियां स्त्री को ऋतुस्नान पश्चात् खिलाई जाती हैं, और एक दवाई भीतर रक्खी जाती है। प्रथम तो प्रथम ही मास अन्यथा अधिक से अधिक चौथे मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित हो जाता है। मूल्य दोनों औषधियों का ५) है॥

गर्भ प्रतिबन्धक—ठीक हाल लिख कर पूछिये॥

काकड़ सत (रजिस्टर्ड)—बालकों के प्रायः रोग या अजीर्ण, अतिसार, ज्वर खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह में रखनी चाहिये। मूल्य ॥), नमूना =)

बालकों के डब्बा रोग की औषधि—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि रसायन अर्थात् अतीव गुणकारी है। मूल्य १ तोला ५) रुपये, २ माशा १)

बाल सुख (रजिस्टर्ड)—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि, कोष्टबद्धता, हरे पीले दस्तों का आना, ज्वर, तृषा, कृशता, बालक का सूखते जाना, और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता, सब दूर होते हैं। मूल्य ६४ गोली १), नमूना =)

फूलो फलो (रजिस्टर्ड)—यह सूखिया मसान की विचित्र औषधि है। इस को केवल कटि पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते हैं, वही रोग का कारण होते हैं। भीतर से सब कृमि निकल जाते हैं, वह बालक जो प्रतिदिन सूख रहा था, हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देती थीं, अब प्रफुल्लित होना आरंभ होता है। मूल्य धनवानों से १००) साधारण से ५) निर्धनों से १)

सुखहरा—यदि बालक सूखता जावे तो इसको रोज देर तक खिलावें मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८ गोली =)

काली दूर (रजिस्टर्ड)—बालकों के वास्ते यह गोलियां बहुत गुणकारी हैं, थोड़े दिनों में ही लाभ होता है, मूल्य १६ गोली ॥)

## उपदंश औषधियां॥

उपदंश की औषधि—उपदंश कठिन रोग है। यदि बेपरवाही की जाय, तो पीढियों तक पीछा नहीं छोड़ता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर में गहरे घाव

केवल लिंग पर होते हैं। मादीन का विष रक्त में प्रविष्ट हो जाता है, और शरीर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है, दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुन्सियां और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दर्जे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्टवत होते हैं। उपदंश के वास्ते कई औषधियां तैयार रहती हैं। साधारण रूप से यह हैं, अपनी अवस्थानुसार मंगालें।

उपदंश औषधि नं० २—यह उपदंश के तीनों दर्जों नर व मादीन के वास्ते हितकर है। पैतृक उपदंश के वास्ते भी हितकर है। मूल्य ४) रुपया, अर्ध औषधि २) रुपया॥

उपदंश औषधि नं० १३—उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दर्जे का अकसीर है, दूसरे दर्जे में भी गुणकारी है। मूल्य ६० गोली ४) रु०, ३० गोली २) रुपया॥

उपदंश औषधि नं० १४—इससे २० या अधिक से अधिक ४० दिन के भीतर आराम आता है, केवल एक बूटी है। दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४) रुपया, २० गोली २)

उपदंश औषधि नं० १६, (उपदंश विरेचन)—जब कि रोग जीर्ण हो चुका हो, या ऐसा दुसाध्य हो, कि आराम न आता हो तो पहिले जुलाब लेना उचित होता है। यह औषधि ३ माशा या अधिक से अधिक ६ माशा खिलाई जाती है। इस से उचित विरेचन होकर उपदंश का विष निकल जाता है। जिस को असौज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में, उपदंश के फूटने का भय हो, वह ऋतु के आरम्भ में यह विरेचन लेलें। मूल्य ६ माशा १) रुपया॥

नोटः—भस्में जो उपदंश में वर्ती जाती हैं यह हैंः—संखिया दारचिकना, रसकपूर मिश्रित या अलग, पारद, तुत्थ इत्यादि॥

सारसारिष्ट मिश्रित—बहुत सी वैद्यक औषधियों का संग्रह है, उपदंश द्वितीय, तृतीय दर्जे में हितकर है। फोड़ा फुन्सी, दाग चंबल दाद, कृष्णदाग, ताम्र वर्ण धप्पड़, खुजली आदि को दूर कर के शरीर को कुन्दनवत करता है। उन सब रोगों में जिनमें विलायती सारसपरीला वर्ता जाता है, यह अधिक गुणकारी प्रमाणित होगा। मधुमेह, प्रमेह को हितकर है। प्रमेह के पश्चात् जो कारबालक भयंकर फोड़े (प्रमेह पिड़िका) निकलते हैं, उनको भी

हितकर है। बात रक्त, भगन्दर को गुणकारी है । उत्तेजक और सुखदायक है। कण्ठमाला, सन्धिबात, और उपदंश को भी हितकर है मूल्य फी शीशी २) रुपया, नमूना ।=)

इन्द्रा तैल—दूध में डाल कर खावें ७ दिन में आराम मू० २)

# सोज़ाक की औषधियां ॥

सोजाक में पहिले जलन व पीडा होती है, नितान्तकष्ट होता है, दूसरे दर्जे में पीव आनी आरम्भ होती है, कुरेह होजाता है, जलन धीरे १ बंद होजाती है, और केवल पीप जाती है, वा तार से निकलते हैं, इस से वढ जावे तो तीसरे दर्जे में मूत्रावरोध हो जाता है, मूत्र की नाली संकीर्ण होजाती है, कभी २ मूत्र रुक जाता है, तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ वडी कठिता से दूर हो सकता है, और जीर्ण हो जावे तो जाता ही नहीं, सोजाक के वास्ते भी वहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं ; अवस्थानुसार दी जाती हैं:—

सोज़ाक औषधि नं० १—प्रथम दर्जे में अकसीर का काम देती है, २४ घण्टे के भीतर जलन दूर होती है, थोडे दिनों में पूर्ण लाभ होता है, यदि पीव भी हो और जलन भी साथ हो, तो इसको खाकर पहिले जलन दूर करनी चाहिए। मूल्य ४ डराम १) नमूना =)

सोज़ाक औषधि नं० २—वडे ही तजुरवों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्माण कृत योग अकसीर सोजाक व कुरेह है, जो कि सोजाक की प्रत्येक अवस्था में गुणकारी है, दाह भी हो, दोनों मिले हुए हों, सब को अकसीर अचूक औषधि है, शुक्रमेहादि, को हितकर है, मूल्य ६० गोली ४), नमूना १५ गोली १) है।

सोज़ाक औषधि नं० ३, अकसीर कुरेह—यह औषधि केवल कुरेह अर्थात् पीव जाने पर दी जाती है, एक ही दिन के भीतर पीव बंद होनी आरम्भ होती है, इसके अतिरिक्त उपदंश को हितकर है, इस वास्ते जब सोजाक व उपदंश एक साथ हों तब भी हितकर है, दमा खांसी आदि रोगों को दूर करता है, मूल्य २, नमूना ।)

नोट—भस्मों में से सीप भस्म, संगजराहतभस्म, जहरमोहराभस्म, फिटकरीभस्म, और पारदादि हितकर हैं ॥

# बवासीर की औषधियां

यूं तो बवासीर ६ प्रकार की होती है, परन्तु बडे दो ही

भेद हैं, रक्तार्श वा वातार्श कभी पैतृक भी होती है, जो कष्टसाध्य है, साधारणतः निम्नलिखित औषधियां हैंः—

अर्शौषधि नं० ३—यह खूनी व वादी दोनों को हितकर है और साधारणतया इस से आराम आजाता है, मूल्य ४० गोली २)

अर्शौषधि नं० ५—जब बवासीर के कारण अति कष्ट हो दाहादि से रोगी व्याकुल हो, यह ओषधि शांति देती है, जैसे अग्नि पर पानी। मूल्य १) नमूना।)

अर्शौषधि नं० ७—यह विशेष कर रक्तार्श को लाभ दायक है, ७ दिन के भीतर रक्त बन्द होता है और २–३ सप्ताह में पूरा आराम होता है। मूल्य ४० गोली २) रुपया, नमूना।)

अर्शौषधि नं० ९, ( अकसीर बवासीर व शीघ्रपतन )—यह औषधि बलवर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को लाभ दायक है विशेष कर रक्तार्श के लिए, मूल्य ३० गोली ५), नमूना१)

नोट—इनके अतिरिक्त चन्द्रप्रभावटी, ( अकसीर नं० ३१, ) लक्ष्मी विलास रसादि वर्णन हो चुके हैं॥

## प्लीहोदरौषधियां

मलेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है, और मलेरिया चिरकाल तक बना रहता है, फिर ज्वर हट जाने से भी तिल्ली बनी रहती है, कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है, निम्न लिखित औषधियां प्रायः देते हैंः—

प्लीहादि औषधि नं० १—मलेरिया, तिल्ली दोनों दूर मूल्य २)

प्लीहोदरौषधि नं२—यह औषधि उस समय दी जाती है, कि आमाशय निर्बल हो, तिल्ली साधारणतः बढ़ी हो, क्षुधा कम लगती हो, मात्रा ६गोली नित्य। २४० गोली २), नमूना।)

प्लीहदरौषधि नं०३—पौष्टिक है, चेहरे को शीघ्र लाल करती है, बल को बढ़ाती है, अग्नि सन्दीपन है, मलेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं, सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है, मात्रा २ रत्ती, मूल्य ६माशा ४) रुपया, १॥ माशा १) रुपया॥

प्लीहोदरौषधि नं० ५—जबकि प्लीहा के साथ कोष्ठबद्ध हो, या तिल्ली बहुत ही पुरानी और बढी हुई हो, तो यह औषधि गुणदायक है, उपरोक्त किसी भी औषधि के खाते समय इस

औषधि को जारी रक्खा जावे, रात्रि को सोते समय एक गोली खाने से प्रातः खुलकर शौच आएगा और तिल्ली कम होती जावेगी। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना चार आना॥

प्लीहोदरौषधि नं० ६—यह उस दशा में विशेष रूप से हितकर है, जब कि ज्वर भी साथ हो, या कभी २ होजाते हों, पाण्डु को दूर करती है, शरीर को बल देती है, मूल्य २), नमूना।)

# उदर रोगों की औषधियां

करकोल ( रजिस्टर्ड )—आमाशय सम्बन्धी सर्व रोगों की अचूक औषधि है, अहार पच कर पूरा बल प्रदान करता है, खाया पिया सब पच जाता है, क्षुधा बढ़ती है, आज कल के दिनों में जब कि पक्वाशय सम्बन्धी व्याधियां बहुत बढ़ी हुई हैं, लगभग सब अमीर मन्दाग्नि ग्रस्त दिखाई देते हैं, यह औषधि प्रसाद प्रमाणित होगी मूल्य ६०गोली २) रुपया ३०गोली १), नमूना।)

लालज्वाहर ( रजिस्टर्ड )—उदर पीड़ा, गुडगुड़ाहट, वमन, विषूचिका, अतिसारादि, रोगों को हितकर है, पाचन शक्ति खूब बढती है, अन्य पाचक चूर्ण इसके सन्मुख तुच्छ हैं. मूल्य २), नमूना।)

एलवसा ( रजिस्टर्ड )—शूल, पेट की बादी, गुड़गुड़ाहट को हितकर, क्षुधावर्द्धक है, कोष्टबद्धता को दूर करती है प्रत्येक घर में वर्तना चाहिए, मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८गोली =)

प्राणदाता ( रजिस्टर्ड ) ( विषूचिका की अकसीर औषधि )—अमृतधारा भी विषूचिका के वास्ते अमृत है, तथापि ऐसे भयंकर रोग के वास्ते किञ्चित अन्य औषधियां भी हमेशा तैयार रखना चाहिए, यह हमारी अनुभूत औषधि है, और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आजाता है, वमन विरेचन बन्द होकर ज्वर दूर हो जाता है। मूल्य १५गोली १) रुपया, सदैव पास रक्खो॥

दस्त विरेचन ( रजिस्टर्ड )—यह गोलियां जुलाब के लिए अनुपम हैं एक दो गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः समय खुलकर शौच हो जाता है, एक दस्त आता है, कोई कष्ट नहीं होता, शरीर सुखमय हो जाता है। १०-१२ गोलियां खाने से ८ दश जुलाब खुलकर हो जाते हैं, तीनों दोषों के वेग को दूर करती हैं। मूल्य १००गोली १), नमूना १२गोली =)

आराम जान ( रजिस्टर्ड )—पश्चात् तय्यार की गई हैं, इन से विरेचन नहीं होता, केवल शौच खुलकर आता है, और प्रति दिन खाने से अन्त्रियों का बल बढकर सतत कोष्ठवद्धता दूर हो जाती है, और दूसरी औषधियों की तरह आगामी कोष्ठवद्धता बढती नहीं है, एक और उत्तमता यह है कि इस में एक औषधि बलवर्धक सम्मिलित की गई है, जिस से यह शुक्र रोगियों को जब कि उनको कोष्ठवद्धता भी साथ हो, दूसरी किसी पौष्टिक औषधि के साथ २ बहुत गुणकारी होती है, मूल्य ३२ गोली १) रुपया १६ गोली ॥) है।

गन्धार रस ( रजिस्टर्ड )—कठिन से कठिन और जीर्ण से जीर्ण अतिसार मरोड, संग्रहणी आदि थोडे दिनों में दूर। प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है, विषूचिका के वमन विरेचन को आराम होता है, अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसा हितकर अन्य औषधि न होगी। मूल्य १), नमूना =)

शूलवटी ( रजिस्टर्ड )—यह गोलियां सब प्रकार का उदर शूल यहां तक कि परिणाम शूल को भी हितकर है, घरों में प्रायः उदरशूल रोग हो जाया करता है, इन गोलियों को रखना अच्छा है, मूल्य ६०गोली १) ३० गोली ॥) १५गोली ।)

# यकृत, गुरदा, हृदय की औषधियां

हयात अफ़जा ( रजिस्टर्ड )—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है, २८ दिन में आराम आता है। २८ दिन की मात्रा का मूल्य २) रुपया, नमूना ।=)

नोटः—चांदी भस्म, संग यश्ब भस्म भी हृदय के लिए बड़ी हितकर है। भस्मों के वर्णन में देखो ॥

मण्डूर वटिका—कामला, श्वेतवर्णता, पांडु रोग, यकृत की निर्बलता के वास्ते रामवाण है, शुद्ध रक्त उत्पन्न होकर रंग लाल होता है, वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है, मूल्य १६ गोली १) रुपया ॥

संगतोड़(रजिस्टर्ड)—पथरी, कंकर को तोड फोड़ मूत्र के रास्ते निकालता है मूल्य २) अर्द्ध १) है।

ब्रह्मलोह (रजिस्टर्ड)—यकृत के रोगों को दूर करता है खून शुद्ध उत्पन्न करके चेहरे को लाल करता है मूल्य १०) तोला।

# नेत्र रोग सम्बन्धी पेटण्ट औषधियां ।

अखठंड (रजिस्टर्ड)—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है, नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है, दृष्टि स्थिर रखता है, और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ॥) नमूना केवल -)

अखदोष ( रजिस्टर्ड )—नेत्र रोग यथा पानी जाना धुन्ध, नया फोला, जाला, कुकरे, पड़वाल आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ।॥), नमूना -)॥

फोला क्योरा ( रजिस्टर्ड )—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर। धुन्ध, जाला, कुकरा आदि को बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) तोला, ६ माशा ४), नमूना १)

पड़वाल क्योरा ( रजिस्टर्ड )—पड़वालों के लिये विशेष रूप से हितकर है। पड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है। तो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) तोला, ६ माशा २), नमूना ३ मा० १)

मोतिया क्योरा ( रजिस्टर्ड )—इससे मोतियाबिन्द, पानी उतरना, बन्द होता है। प्रायः २ मास में पूर्ण लाभ होता है। मूल्य ८) तोला, ३ माशा २), नमूना १ माशा ॥≡)

भीमसेनी कर्पूर—वैद्यक का प्रसिद्ध योग है। नेत्र के सब रोगों को दूर करता है। ढलका, शोथ, पीड़ा, गरमी, दाह, खुजली, धुन्ध, जाला, पानी बहना, ललाई सब दूर होती हैं। अव्वल दर्जे का दृष्टि शक्ति वर्धक है। इसके अतिरिक्त और बहुत से काम आता है। उत्तेजक और बल वर्धकादि औषधियों में पड़ता है। उचित तो यह है, कि जहां किसी योग में कर्पूर लिखा हो, वहां इसको डालें, तभी वह योग पूरा लाभ देगा। मूल्य १५) रुपये तोला, ३ माशा ३।॥), १ माशा १।)

नूर बिन्दु (रजिस्टर्ड)—सर्व अक्षि रोगों को रामबाण मूल्य २)

# कान के रोग ।

कर्ण तैल—कर्ण रोग यथा दर्द, पीव, घाव, कानों में सायँ २ आदि शब्द आना, श्रवण शक्ति हीनता को हितकर है। मूल्य १)

कर्ण पीड़ा नाशक—कर्ण पीड़ा के वास्ते यह कर्ण रोग औषधि अद्वितीय है। एक दो बून्दें भीतर जाते ही आराम आ जाता है। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना १ डराम ।)

बधिर नाशक—इसको कानों में डालते रहने से बहरापन दूर होता है। यदि पीवादि भी जाती हो तो पहिले कर्ण तैल डाल कर उसको दूर कर लेना चाहिये। मूल्य १ औंस २), नमूना ॥)

# नासा रोग सम्बन्धी पेटन्ट औषधियां ॥

दन्त नसवार (रजिस्टर्ड)—यह नसवार अद्वितीय है, जो सदैव पास रखने योग्य है। इस निस्वार के देते ही शिरोबेदना आधा शीशी, दाढ दर्द, कर्ण पीडा, नेत्रपीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी, सन्निपात तक को हितकर है। मूल्य १) तोला, नमूना।), इस से छींक कभी आती है, कभी नहीं आती ॥

छिक छिक (रजिस्टर्ड)—इसके लेने से छींक खूब आती हैं। नजला, जुकाम, को दूर करती है, शिरोवेदन जो प्रतिश्याय वाकी दोष से हो बन्द होता है। मूल्य १शीशी १), नमूना =)

मलफी (रजिस्टर्ड)—इस निसवार के लेने से कृमि थोडे दिनों में गिर जाते हैं। मूल्य ॥) फी शीशी ॥

हरीत (रजिस्टर्ड)—चाहे कितनी देर से नकसीर जाती हो, इसके कुछ दिन नाक में डालने से बन्द हो जाती है। मूल्य ॥)

कफकेतु रस—इसके खाने से नजला, जुकाम, कफज खांसी को तत्काल आराम आता है, जब नजला के जुकाम का वेग हो १-२ गोलियां, अर्क गावजुबान से खालें, और कफज रोगों में लाभदायक है॥ मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली।)

# दन्त रोग सम्बन्धी पेटन्ट औषधियां ॥

मञ्जन नं० १—दन्त रोगों यथा रक्त स्राव, पानी निकलना, पानी लगना, दन्त पीडा, मुख दुर्गन्ध, को हितकर है, मूल्य।) नमूना -)

मञ्जन नं० २—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है, इस के मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं, जिनके टारटर (मैल जम गया हो, वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा, मूल्य।) नमूना -)

मञ्जन नं० ३ कारबालिक—यह मञ्जन अंग्रेजी प्रकार का है, रंग गुलाबी, कारबालिक टूथ पौडर है दन्त कृमि नाशक है, दांतों को स्वच्छ करता है, जो विलायती मञ्जन को पसन्द करते हैं, वह इस को सेवन करें, मूल्य।), नमूना -)

# सौंदर्य्य सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां।

बाल उड़ाने की अनुपम औषधि—इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिन्ट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं। जिस २ ने मंगवाया प्रशंसा की है, मूल्य फी डबिया ।=), नमूना -)॥

बाल दूर करने की औषधि (अर्थात बाल आयु पर्यन्त न उगें)—बाल दूर करने की औषधि के मलने से फिर उमर भर बाल नहीं आते, बालों को साफ करके इस को लगाया जाता है, इस से आगामी बाल निकलने बन्द होते हैं। मूल्य १॥) फी शीशी नमूना नहीं, यदि बाल उग आवें तो दाम वापिस॥

बाग फूल तैल (रजिस्टर्ड)—बाल पर सब तैलों का शिरोमणि है, बालों को कोमल करता है, बढ़ाता है, शिर को शीतल रखता है, स्याही स्थिर रखता है, केवल सुगन्धित ही नहीं हितकर भी है। मूल्य प्रति शीशी १) रुपया॥

मुखरोब (रजिस्टर्ड)—यह तैल न केवल मूछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढ़ाता है, उनकी स्याही स्थिर रखता है, आहा! रोबदार मूछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है, मूल्य फी शीशी २ औंस २) नमूना ।)

चित मोहनी (रजिस्टर्ड)—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील, छाइयां आदि दूर होकर चेहरा साफ होता है, झुरियां नहीं पड़तीं, चेहरे का रंग दिन प्रतिदिन निखरता जाता है, सूरत मनमोहिनी होजाती है, विलायत की लेडियां इस को लगा कर विस्मित होती हैं कि एक भारतीय औषधि उनकी हजारों ऐसी औषधियों की तुलना में उत्तम है, मूल्य केवल १) रुपया, नमूना =)

दिल सुन्दरी (रजिस्टर्ड)—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है, एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग कीलादि को दूर करता है, यदि स्नान से पहिले उबटन, और स्नान पश्चात् सौन्दर्य्य वर्द्धक का सेवन हो, तो बस कहना ही क्या है? मूल्य फी शीशी ॥।=), नमूना =)

अमृतधारा साबुन—यह साबुन अमृतधारा डाल कर बनाया गया है, प्रति दिन वर्तने के वास्ते, एक उत्तम साबुन है, चर्मज रोग, दाद, खाज' चम्बल, पाका, फोड़ा, फुन्सी, को गुणकारी है, मूल्य ॥।=) प्रति बक्स, ।-) प्रति टिकिया ॥

## मुख रोग सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां

मुख रक्षक—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है, चाहे बालकों को हो, वा बड़ों को, मूल्य ॥) नमूना =)

गला क्योरा (रजिस्टर्ड)—यह गोलियां कण्ठ व छाती के रोगों के वास्ते रसायन हैं, जिनको शीघ्र २ स्वरभेद हो जाता है, उनके वास्ते गुणकारी है, धांस, कण्ठ खाज, मुख में छाले, लाल जिह्वा इत्यादि को लाभदायक हैं, मुख में रख कर दो तीन गोली प्रति दिन चूसना चाहिये, मूल्य १६ गोली ॥)

कोकली (रजिस्टर्ड)—वकीलों, वैरिस्टरों, लैकचरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूलमास्टरों, आदिकों, को जिनको बोलने का काम है, यह गोलियां रखनी चाहियें, यथावश्यक एक गोली मुख में रखने से गला नहीं बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है, और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला होजाता है। मूल्य ३० गोली २), नमूना ।)

## चर्मज रोग व घाव सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां ॥

दद्रुघ्न औषधि—इसके कुछ दिन लगाने से दाद चाहे किसी जगह हो, आराम आजाता है, चम्बल को भी हितकर है, बहुत नरम जगह पर जब कि खुजाया हुआ हो, थोड़ी देर लगती है, दूसरी जगहों पर नहीं लगती, दाग, धप्पड़ कुछ नहीं पड़ता, वस्त्र खराब नहीं होते, इसको लगा कर कोई काम बन्द नहीं करना पड़ता, मूल्य १) ४ ड्राम, नमूना १ ड्राम ।)

तैल नायाब (रजिस्टर्ड)—फोड़ा, फुन्सी, पित्त, लाल व श्वेत दाने, दर्द आदि चर्मज रोगों पर लगाने और खाने से गुण करता है। मूल्य २ औन्स २), नमूना ४ ड्राम ॥)

रोग़न मसीहा (रजिस्टर्ड)—जीर्ण से जीर्ण नासूर को दूर करता है, भगन्दर को हितकर है, इसके लगाने से प्रथम सब पीब निकल कर भीतर से भरना आरम्भ होता है, अन्य सर्व प्रकार के घावों को भी बहुत गुणकारी है, कुरँह को इसके खाने से लाभ होता है। मूल्य १ औन्स ३), ४ ड्राम १॥), नमूना १ ड्राम ।=)

सूर्य्य घृत—इसको शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुश्क दूर हो जाती है। फोड़ा, फुन्सी, जिनको कई प्रकार के निलकते रहते हैं, उनको रसायन है, गलित कुष्ट भी सर्वथा स्वच्छ हो जाते हैं,। चर्मज रोगों को अत्यन्त लाभ-दायक है। मूल्य २ औन्स १), नमूना ४ ड्राम ।)

मरहम अकसीर ( रजिस्टर्ड )—बड़े २ फोड़ों को थोड़े दिनों में भर लाता है, दाद, चम्बल, घाव, उपदंश, अग्नि से जलना, फोडा फुन्सी आदि को हितकर है, अनुपम वस्तु है, प्रत्येक घर में रहनी चाहिये, मूल्य १ डबिया १) आधी डब्बी ॥)

# विष रोग सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां ॥

बिच्छू काटे की औषधि—डंक स्थान पर लगाने से तुरन्त आराम आ जाता है, अमृतधारा का ही एक योग है। मूल्य ॥) शीशी, आधी शीशी ।)

बावले कुत्ते काटे का इलाज—मूत्र मार्ग से विष निकल जाता है, और सब निकलता हुआ देख सकते हैं, जल्दी का होतो तीन दिन पर्य्याप्त है, नहीं तो सप्ताह दो सप्ताह, मूल्य १० खुराक ६) रुपये, ३ खुराक २)

तिरयाक ( अगद नाशक )—ज्ञात या अज्ञात किसी भी विषैले डंक पर लगादो तुरन्त आराम होगा, यदि अमृतधारा पास हो तो इसकी ऐसी आवश्यकता नहीं। मूल्य फी तोला १), नमूना ।)

प्लेग की औषधि—७गोली तक खाने से प्लेग रोग जाता रहता है, यदि साथ अमृतधारा भी हो तो ९० प्रति सैकडा आराम आता है, यदि प्रति मास कुछ खा छोडा करें, तो प्लेग का भय जाता रहता है। मूल्य ४०गोली केवल ॥) है ॥

# खांसी ज्वरादिक रोगों सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां

खांसी की गोलियां—इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से नई खांसी, रुक्ष हो वा स्निग्ध, थोडे दिनों में लाभ होता है। मूल्य ६० गोली १), नमूना =)

जया गुटिका—यह गोलियां कफज, कास श्वास के वास्ते अति गुणकारी हैं। पुरानी खांसी इन से दो तीन सप्ताह में जाती रहती है, ज्वर साथ हो तो भी दे सकते हैं, विषम ज्वर को भी हितकर है, ज्वर पड़िादि को भी हितकर है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ।)

अकसीर बदन ( रजिस्टर्ड )—गले व छाती के रोग, कास श्वास, गले पड़ना आदि को हितकर है, जीर्णज्वर, रक्तवमन, राजयक्ष्मा को, खांसी में रक्त जाने में, थोडे दिनों में पूर्ण गुण करता है, इस लिये अन्य औषधियों के साथ दिक़, सिल, में इसको अवश्य सेवन करना चाहिये, निर्बल बालकों को बलवान बनाती है। दुर्बल शरीर वालों को स्थूल करती है। मूल्य फी शीशी १॥), अर्द्ध ॥।)

कण्ठमाला की औषधि—प्रायः ४० दिन के भीतर और कठिन अवस्थाओं में ८० दिन में इस दुष्ट रोग से प्रायः छुटकारा मिलता है। मूल्य ८० खुराक ५), ४० खूराक २॥)

ज्वरारि अभ्रक—यह गोलियां विषमज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय हैं, पुराना ज्वर और विशेष कर वह ज्वर जो चढ़ता उतरता हो, प्रायः पाहिले दिन छोड़ देता है, तृतीयक, चौथिया, दैनिक आने वाला हो, जिस दिन खावे उसी दिन नहीं आते। मूल्य १६ गोली १), ८गोली ॥) आना ॥

ज्वरार्क--मैलेरिया, जूड़ी, या मौसमी किसी प्रकार का ज्वर हो तीन दिन के भीतर जाता रहता है, मैलेरिया कृमि को नष्ट करने में रामबाण है, दैनिक आने वाला, नित्य दो बार आने वाला, तिजारिया, चौथिया, तिल्ली सबको दूर करता है। मूल्य ॥) शीशी, जिसमें युवा की ३ दिन की मात्रा होती है॥

ज्वर वटी—ज्वरार्क की ही औषधियों से बनी है, और वही गुण हैं, किन्तु वैसी तत्काल गुणकारी नहीं, जो अर्क नहीं पीते उनके वास्ते है। मूल्य १२ गोली ॥)

बसन्तमालती रस—पुराने ज्वरों के वास्ते वैद्यक औषधियों में से हैं। तपदिक्क में दी जाती है, लिखा है कि जीर्णज्वर को हितकर है। धातु में प्रविष्ट हुआ ज्वर, रक्तातिसार, रक्तार्श, नेत्र रोगादि को हितकर है। बाल रोगों को हितकर है। गर्भिणी के ज्वर को भी हितकर है, और गर्भ की भी रक्षा करता है, मूल्य ८ गोली १)

तृतीयक ज्वर तन्त्र—इस औषधि को ज्वर चढ़ने से १ घन्टा पहिले मध्यमा उंगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढ़ता। मूल्य ॥)

नोटः—और बीसियों औषधियां ज्वर सम्बन्धी तैयार होती रहती हैं। वैद्यक में इसके सम्बन्धी सैंकड़ों रस हैं॥

# विविध रोगों की अपनी विशेष पेटन्ट औषधियां॥

बलपूरवटी—इन गोलियों से आतशक, सोजाक, अर्श, कंठमाला, गठिया, संधिवात, कमर दर्द, सुस्ती, प्रमेह, शीघ्रपतन, अपाचन, सांप बिच्छू का डंक, बावले कुत्ते का विष, सिर पीड़ा, लकवा, मृगी, हिस्टिरिया, पागलपन, सेला, श्वेत प्रदर पुराना तप, विशेषतयः, चौथिया तप, दमा, खांसी, दाद, खारिश, आदि को लाभदायक है, मूल्य बहुत थोड़ी २४ गोली १) है।

सरस्वती (रजिस्टर्ड)—यह चूर्ण मस्तिष्क की निर्बलता के वास्ते अक्सीर है, प्रतिश्याय व जुकाम को दूर करता है, बधिरता

नाशक भी है, (जो कि कान बहने से हो जाता है) मूल्य १ डिबिया १) है।

दर्द शिकन (रजिस्टर्ड)—इसको एक ही पुड़िया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की नसों व पट्ठों की पीड़ा हो, जाती रहती है। शिर पीड़ा, जोड़ों की पीड़ा, कटि पीड़ा गुल्फ, रान या किसी जगह की पीड़ा हो, तो १५ मिन्ट में आराम। पुरानी पीड़ा हो तो कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। अन्यथा पहिली पुड़िया से ही आराम हो जाता है। जिनको दर्द शिर का रोग हो इसको अवश्य अपने पास रक्खा करें। एक पुड़िया ५ मिन्ट में पीड़ा बन्द कर देगी। मूल्य १) नमूना।)

ब्रह्मी अरिष्ट—स्मरण शक्ति के वास्ते इस से बढ़ कर कोई औषधि न होगी। मस्तिष्क की निर्बलता, शिर पीड़ा, पुरुषों के वीर्य्य सम्बन्धी रोग, स्त्रियों के रज सम्बन्धी रोग, शुक्रमेहादि को हितकर है, मल भेदक है। थोड़े दिनों में मस्तिष्क दिव्य हो जाता है। वाणी मधुर हो जाती है। गान विद्या और काव्य इस से शीघ्र आता है। मूल्य २) रुपया, शीशी ४ औंस॥

बला दूर (रजिस्टर्ड)—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाती है। सैंकड़ों मनुष्य इस से अफीम छोड़ चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥), जो रत्ती तक अफीम खाते हैं, उनके वास्ते ६० गोली पर्य्याप्त हैं। अधिक खाने वाले २-३ डिबिया यथा आवश्यक मंगा लें॥

दर्शी—जोड़ों की पीड़ा, शोथ, सन्धिवात, अर्द्धाङ्गवात, आर्दितवातादि को हितकर है, मूल्य ६० गोली २), नमूना।=)

पीड़ा आयल—यह तैल पीड़ाओं के वास्ते मालिश करने से अत्यन्त गुण करता है, खाने की औषधि के साथ इसकी मालिश करना, घुटना शूल, पिण्डुली शूल, कटि शूल, और सम्पूर्ण जोड़ों की पीड़ाओं को गुण करता है, मूल्य प्रति शीशी २ औन्स २), नमूना ४ डराम॥)

अमृत गोली (रजिस्टर्ड)—कफज कास, श्वास, पेटदर्द, शीतज्वर, नेत्रपीड़ा, नेत्ररोग, नाखूना, सब प्रकार का विष, हड्डी का ज्वर, वात, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्ठबद्धता, वन्ध्यापन, सर्प-

दंश, बिच्छूदंश, ढलका, उदरकृमि, मूत्रबद्ध, आमाशय की निर्बलता, संग्रहणी, मुत्रकृच्छ्, सन्धिवात, उपदंश, शुक्रमेह, मधुमेह, मुखगन्ध, दर्दशिर, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता, मृगी, श्वेतकुष्ठ नासूर, गञ्जशिर, अतिसार, मरोड़, कर्णपीड़ा, दन्तपीड़ा, अन्धराता, आर्तवबद्ध, भिड़ादि का दंश, शरीर की शिथिलता, गुदभ्रंश, शीत दोष, नाभि पीड़ा, तमक श्वास, अश्मरी, छींब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, तृषा की अधिकता, इत्यादि रोग दूर होते हैं। और पांच सात गोलियां इकट्ठी देने से बढिया रेचन भी है। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना =)

ज्योतिष्मती मिश्रित—इसके ४० दिन सेवन से सतत शिरःशूल दूर होता है, दो मास खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, पाठ याद होता है, कफ, प्रतिश्याय मिटता है, ३ मास खाने से पुरुषार्थ बढ़ता है, बलि पलित नष्ट होता है, एक वर्ष के सेवन से फिर से कृष्णबाल उगने आरम्भ होते हैं, मूल्य ७ तोला २),

शफा वटी—यह गोलियां शिरः शूल नए पुराने को गुणकारी हैं, और कफज कास श्वास नाशक हैं, जीर्ण ज्वरों में भी गुणकारी हैं, मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली।)

तारा तैल—यह तैल सतत शिरः शूल और विशेष कर अर्द्धाव भेदक या उन शूलों के वास्ते, जिनको उल्ल की पीड़ायें कहते हैं, जो शिर व नेत्रों दोनों में होती हैं, अक्सीर है, इस तैल में शक्कर व आटा मिला कर, हलुवा बना कर खाया जाता है, सात दिन के भीतर पीड़ा दूर होती है और, फिर नहीं होती है, यदि फिर हो, तो एक सप्ताह फिर खानी चाहिये, मूल्य ३ औन्स (मात्रा १ सप्ताह) २)

मोटा होने की औषधि—कतिपय लोग कोई विशेष रोग न होने पर भी और अच्छा आहार खाने पर भी मोटे नहीं होते, वह इसको सेवन किया करें। मूल्य आध सेर ४), नमूना आध पाव १) रुपया॥

ऐंटी मेद (रजिस्टर्ड)—अति मोटा होना एक कष्टदायक रोग है। कुरूपता के अतिरिक्त यह मनुष्य को ऐसा निर्बल कर देती है, कि रोग इस पर तुरन्त आक्रमण करते हैं। मोटा मनुष्य

आयु भी अल्प पाता है। उसके सम्पूर्ण टिशूज चरबी से भरे होते हैं। वह जीते ही मुरदे के समान होता है। इस औषधि के सेवन से १ सप्ताह के भीतर ही लाभ आरम्भ होता है। प्रति मास ४-५ सेर और कभी १० सेर तक भार कम होजाता है। मूल्य फी शीशी खूराक १ मास ४), खूराक १५ दिन २) खूराक ३ मास १०)

वातकुलान्तक रस—यह गोलियां मृगी के वास्ते रामबाण हैं। प्रायः १ मास के भीतर आराम हो जाता है। इन गोलियों के साथ २ नाक में डालने के वास्ते अमृतधारा रखनी चाहिये। मूल्य ३० गोली ५), १२ गोली २), बालकों को ¼ अर्द्ध गोली तक देनी चाहिये ॥

पञ्चामृत रस—इसके खाने से घ्राण रोग यथा जुकाम, नजला, फुन्सी, नासार्श, कर्णरोग, यथा दर्द, स्राव आदि दूर होते हैं, सन्निपात को भी हितकर है। मूल्य ३० गोली १), नमूना =)

---



---

अमृत प्रेस, अमृतधारा भवन लाहौर में छपा।